Scanned with CamScanner

भारत में
सर्वाधिक बिकने वाले
कॉमिक्स
डायमंड कॉमिक्स
1994
चाचा चौधरी का
रजत जयंती वर्ष
प्राण
पिंकी और तितली
प्राण
जाबू और कंसकोन
ताऊजी और तांत्रिक लम्बूरा
महाबली शाका और शैतानी इलाका
पलटू और खैराती लाल की चालाकी
लम्बू मोटू और चेहरे पर चेहरा
जेम्स बाण्ड-19
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-29
फन कॉमिक्स
डायमंड कामिक्स
थ्रिल कॉमिक्स
डायमंड कामिक्स
एक्शन कॉमिक्स
डायमंड कामिक्स
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज नई दिल्ली-110002

राज कॉमिक्स प्रस्तुत करते हैं

सुपर कमांडो ध्रुव का एक अनोखा, खौफनाक कॉमिक्स विशेषांक

वैम्पायर

इसी सैट के अन्य कॉमिक्स

- ☐ अश्वराज और अश्वनाद
- ☐ लाश कहां गई (थ्रिल हॉरर सीरीज)
- ☐ महाबली गोजो
- ☐ शुक्राल और कलियुग
- ☐ तिलिस्मदेव और महाकाल

(प्रत्येक का मूल्यः 6-00 रुपए)

प्रकाशक : राजा पॉकेट बुक्स 330/1 बुराड़ी, दिल्ली- 110009.

फैक्स : 011-7259599 फोन : 7221410, 7120605

आओ बात करें

एक दिन महाराज जनक राजमहल में विश्राम कर रहे थे। उन्हें नींद आ गई। उन्होंने सपना देखा—

मिथिला पर किसी शत्रु राजा ने हमला कर दिया है। उसकी सेना बहुत शक्तिशाली है। घमासान लड़ाई छिड़ गई। शत्रु सेना ने नगर को घेर लिया। मिथिला की सेना हार गई। शत्रु राजा विजयी हुआ। महाराज जनक को बंदी बना लिया गया। विजयी नरेश के सामने जनक को लाया गया। उसने कहा—''मैं तुम्हें प्राणदंड नहीं देता। केवल अपने राजसी वस्त्र और आभूषण उतार दो और तुरंत राज्य से निकल जाओ। राज्य में घोषणा करा रहा हूं कि जो भी राजा जनक को भोजन या रहने को जगह देगा, उसे कठोर दंड दिया जाएगा।''

महाराज जनक ने नरेश की आज्ञा मानी। राजमुकुट रख दिया। वस्त्र और आभूषण भी उतार दिए। वह छोटा-सा वस्त्र कमर में लपेटे, अकेले ही राजमहल से बाहर चल दिए।

भिखारी जैसे हाल-बेहाल राजा जनक राज्य के बाहर एक नगर में पहुंचे। वहां पता चला कि कोई भंडारा होता है, जहां भूखों को खिचड़ी बांटी जाती है। जनक भी वहां जा पहुंचे। पर उन्हें पहुंचने में देर हो गई। तब तक खिचड़ी बंट चुकी थी। जनक जी ने यह देखा तो उनका सिर घूम गया। आंखों में आंसू और चक्कर खाते राजा जनक वहीं बैठ गए। यह देख बांटने वाले को बड़ी दया आई। वह बोला—"भाई, खिचड़ी तो खत्म हो चुकी, पर उसकी थोड़ी खुरचन पतीले में लगी है। वही तुम्हें देता हूं।"

भूख के मारे जनक जी के तो प्राण निकले जा रहे थे। उन्होंने दोनों हाथ फैला दिए। कर्मचारी ने खिचड़ी की जली खुरचन उनके हाथों पर धर दी। परंतु यह क्या, तभी एक चील ने झपट्टा मारा और वह खुरचन कीचड़ में जा गिरी।

धीरज छूटा और जनक जी जोर से चिल्ला पड़े। सपने में चिल्लाए तो झट से नींद उड़न छू हो गई।... और उनके चिल्लाने की आवाज राजमहल में गूंज उठी। रानी, दास-दासियां और सेवक दौड़े-दौड़े आए—''क्या हुआ, महाराज को क्या हुआ ?''

महाराज जनक तो राजमहल में अच्छे-खासे अपने आलीशान पलंग पर लेटे थे। नरम-गुदगुदे बिस्तर पर जहां सोए थे, वहीं थे।

उन्होंने सब कुछ देखा और बोल उठे—''वह सच था या यह सच है। जो देखा यदि सच न था तो नींद क्यों टूट गई ?''

खोए-खोए से रहने लगे जनक जी। मंत्री और दरबारी सलाह करते तो उन्हें ठीक से उत्तर न मिलता। सब हैरान-परेशान।

अचानक एक दिन अष्टावक्र जी वहां आए। ज्ञानी अष्टावक्र जी को भी इस परेशानी के बारे में बताया गया। उन्होंने ध्यान लगाया और उलझन को समझा। जनक से बोले—''जब आप खिचड़ी की खुरचन ले रहे थे, तब ये राजकर्मचारी और यह ठाठ-बाट कुछ था वहां पर ?"

जनक बोले—''मुनिवर, उस समय तो मुसीबत का मारा मैं अकेला ही था।''

अष्टावक्र ने फिर कहा—''महाराज, नींद टूटने पर आपकी कंगाली, खिचड़ी बांटने वाला कर्मचारी, भूख-प्यास कुछ था ?''

जनक बोले—''भगवन, वह कुछ भी न था। मैं तो ठाठ-बाट से पलंग पर लेटा था।''

अष्टावक्र बोले—''राजन, जो एक काल में रहे दूसरे काल में न हो, वह सत्य नहीं होता। सपने में भूख-प्यास से व्याकुल आप हाथ फैलाए खड़े थे ?''

जनक बोले—''हां, भगवन, मैं तो था।''

अष्टावक्र कहने लगे—''सोते-जागते स्थितियां बदलती रहती हैं। केवल आप वहां रहते हैं। आप यानी आत्मा ही सत्य है।''

महाराज जनक ठीक हो गए—उलझन जो सुलझ गई थी। हम सब अपने को पहचानें, सच को समझने की कोशिश करें।

—तुम्हारे भइया

मार्च '९४
वर्ष : ३० अंक : ५

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

इस अंक में विशेष

कविताएं

स्तम्भ

आवरण : राजेंद्रकुमार वधवा

एलबम : अशोक वाही, अविनाश पसरीचा

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार

मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील

वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा, उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार ; चित्रकार : नारायण

चौथा पाठ

—दिलीपकुमार तेतरवे

चित्रसेन अंग देश के राजा थे। उनके चार पुत्र थे।

जब उनकी उम्र गुरुकुल में जाने योग्य हो गई तो, राजा चित्रसेन ने गुरुकुल के आचार्य वल्लभ को दरबार में बुलवाया। उन्होंने आचार्य से निवेदन किया— "आचार्य, मैं चाहता हूं कि आप मेरे चारों पुत्रों को अलग-अलग विधाओं की शिक्षा दें। जिससे ये चारों अलग-अलग विधाओं के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ बनकर उभरें। प्रताप को वेद, पुंगव को संगीत, पुष्कर को आयुर्वेद और पुनीत को नीति-शास्त्र में श्रेष्ठता प्राप्त हो जाए तो मैं आपका आभारी होऊंगा।"

आचार्य ने कहा—"राजन, आपके इन चार पुत्रों में से किसी एक को देश का राजा बनना है। मेरे विचार से इनकी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वे व्यावहारिक बनें ताकि देश को अच्छा प्रशासन, न्याय और सेना को अच्छा नेता मिल सके। एक अच्छे राजा को सभी विषयों के आवश्यक ज्ञान के साथ-साथ, उसे समाज का व्यावहारिक ज्ञान भी होना चाहिए। इसलिए मेरा अनुरोध है कि राजकुमारों को किसी विशेष विधा से न जोड़ें।"

लेकिन राजा चित्रसेन अपने हठ पर अड़े रहे। आचार्य वल्लभ ने राजा चित्रसेन को समझाने का कई तरह से प्रयास किया, किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली।

शीघ्र ही, राजा चित्रसेन के चार पुत्रों ने गुरुकुल में अध्ययन शुरू किया। आचार्य वल्लभ ने उन्हें राजा की आज्ञा के अनुसार अलग-अलग विधाओं में शिक्षा देनी शुरू कर दी।

चारों राजकुमारों में सबसे छोटे पुत्र पुनीत में विलक्षण बुद्धि थी। वह नीति-शास्त्र का अध्ययन करता हुआ युद्ध-कौशल, आयुर्वेद, न्याय, प्रशासन, संगीत कला आदि में भी रुचि रखता था। जब समय मिलता तो वह अन्य विषयों का भी अध्ययन करता।

गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करते हुए चारों राजकुमार को चौदह वर्ष हो गए तो आचार्य वल्लभ ने उन्हें अपने पास बुला कर कहा— "गुरुकुल में तुम लोगों के अध्ययन का यह अंतिम वर्ष है। अतः तुम लोग मुझ से ज्ञान की कोई विशेष बात जानना चाहते हो तो पूछो।"
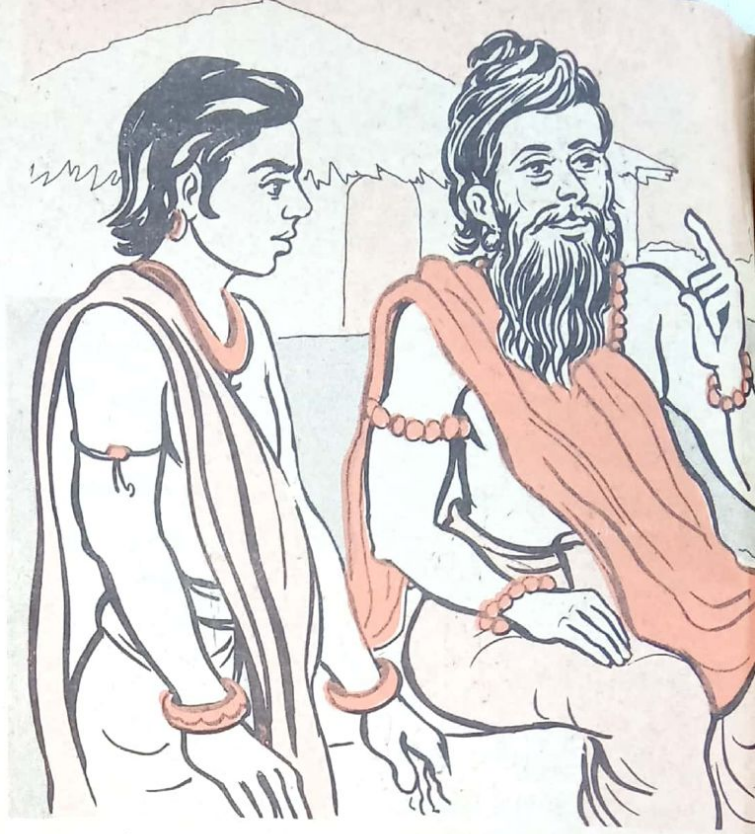
राजकुमार प्रताप ने आचार्य के समक्ष नतमस्तक होकर कहा— "गुरुदेव, आपकी कृपा से आज मैं चारों वेदों का ज्ञाता हूं। वेद-ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद, मैं नहीं समझता कि मुझे किसी और ज्ञान की आवश्यकता है।"

राजकुमार पुंगव ने आचार्य के चरण स्पर्श करते हुए कहा— "गुरुदेव आपने मुझे संगीत का जो ज्ञान दिया है, वह अमूल्य है। मैं जब राग-रागिनियों की दुनिया में खो जाता हूं, तो अपने आप को इंद्र से भी अधिक सुखी अनुभव करता हूं। मैं संगीत की दुनिया में एकदम संतुष्ट हूं। मैं कोई अन्य ज्ञान प्राप्त कर दुनिया के झंझटों में नहीं पड़ना चाहता।"

राजकुमार पुष्कर ने गुरु की वंदना करने के बाद कहा— "गुरुदेव, मैं अब इस पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ वैद्य हूं। मेरे पास मृत्यु को छोड़कर सभी असाध्य बीमारियों की औषधियां हैं। आपने मुझे आयुर्वेद का संपूर्ण ज्ञान दे कर, मेरे जीवन को धन्य कर दिया है। अब मैं और
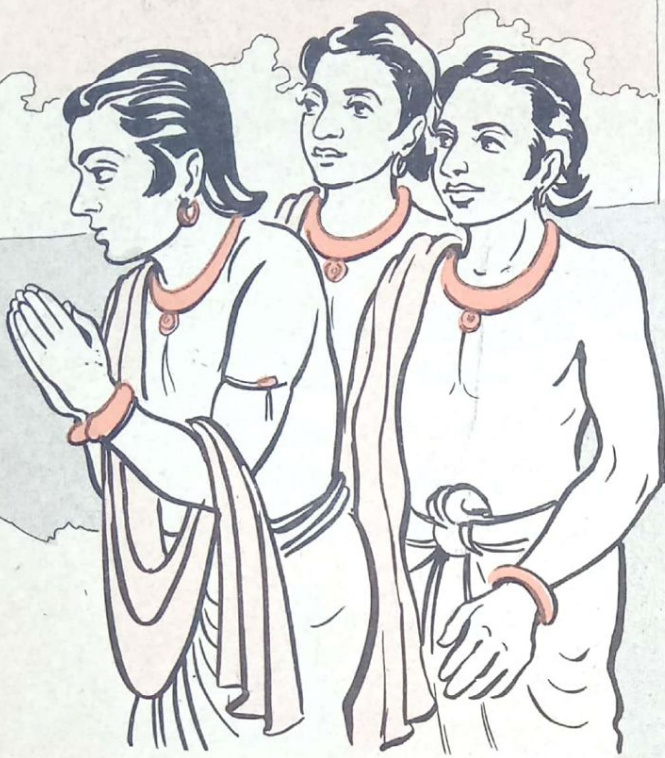
किसी विशेष ज्ञान की कामना नहीं करता।''

राजकुमार पुनीत ने आचार्य के समक्ष अपनी बात एकदम अलग ढंग से रखी— ''गुरुदेव आपने ही कहा है कि ज्ञान असीम है। कोई भी व्यक्ति संपूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। लेकिन, आपसे मुझे जितना ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसका लाभ मैं अपने समाज में जन-जन तक पहुंचाना चाहता हूं। और यह तभी संभव है जब मैं अपने समाज के हित-अहित, सुख-दुख को अच्छी तरह जान लूं। अतः मुझे कृपा कर यह पूरा वर्ष समाज-दर्शन में व्यतीत करने का अवसर दें।''

आचार्य वल्लभ ने कहा— ''पुनीत, मैं तुम्हारे विचार से प्रसन्न हूं। तुम आज ही समाज-दर्शन के लिए गुरुकुल से चले जाओ। ठीक एक वर्ष बाद तुम यहीं उपस्थित होना।''

राजकुमार पुनीत समाज-दर्शन के लिए गुरुकुल से निकल पड़ा। उसने कभी किसी गरीब व्यक्ति को नहीं देखा था। संयोगवश उसे पहली रात ही एक गरीब किसान की झोंपड़ी में विश्राम का मौका मिला। किसान के घर में थोड़ा-सा भोजन बना था। लेकिन, किसान ने राजकुमार पुनीत को पहले भरपेट खिलाया। फिर उसके परिवार ने बचे हुए भोजन से भूख मिटाई। सभी संतुष्ट और प्रसन्न लग रहे थे।

सर्दी थी। इसलिए किसान ने राजकुमार के लिए अलाव जलाया। कड़ाके की ठंड में अलाव का सुख सबसे बड़ा सुख होता है। आधी रात बीतते-बीतते जब लकड़ियां खत्म हो गईं, तो किसान ने झोंपड़ी का एक हिस्सा तोड़कर अलाव में जलाना शुरू कर दिया। इस प्रकार किसान ने अपने अतिथि के लिए सारी रात अलाव जलाए रखा। यह सब कुछ राजकुमार को कल्पना-लोक की बात लग रही थी। इसके पूर्व वह यही समझता था--दान, अतिथि-सेवा, त्याग आदि सिर्फ धनवान ही कर सकते हैं।

इस प्रकार एक वर्ष तक समाज के विभिन्न वर्गों के बीच रहकर राजकुमार पुनीत ने समाज को गहराई से जान लिया। उसने महसूस किया कि उसके देश का प्रत्येक व्यक्ति, किसी न किसी क्षेत्र में विशेष ज्ञान रखता है और ज्ञान का भंडार सिर्फ गुरुकुल में संग्रहीत नहीं।

एक वर्ष बाद राजकुमार पुनीत गुरुकुल लौटा। उसने गुरु जी को प्रणाम कर कहा— ''गुरुदेव, मैं आपकी आज्ञानुसार एक वर्ष तक समाज-दर्शन कर, आपके समक्ष उपस्थित हूं।'' आचार्य वल्लभ ने राजकुमार पुनीत को आशीष देते हुए कहा— ''पुनीत, पुस्तक पढ़ना आसान है, लेकिन समाज को जानना समझना आसान नहीं। मुझे पूरी उम्मीद है कि तुमने अपने समाज को अच्छी तरह देख और समझ लिया होगा। तुम एक व्यवहार-कुशल ज्ञानी के रूप में समाज में जाने जाओगे। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं।''

चारों राजकुमार जब राजमहल पहुंचे, तो वहां कोहराम मचा हुआ था। राजा चित्रसेन रोग शैय्या पर पड़े हुए थे। राज वैद्य उनकी बीमारी समझ नहीं पा रहे थे। पिता की बीमारी का हाल जानकर चारों राजकुमार तुरंत चित्रसेन के कक्ष में पहुंचे।

राजकुमार पुष्कर ने राजा को देखते ही कहा— ''पिता जी, आपकी आयु लगभग पूरी हो चुकी है। अब आपको कोई भी दवा देना व्यर्थ है। यह सब मैं स्पष्ट शब्दों में इसलिए बता पा रहा हूं क्योंकि, मैं

आयुर्वेद शास्त्र में विशेषज्ञ हूं।''

वेदज्ञ राजकुमार प्रताप ने कहा— ''पिता जी, आयुर्वेदाचार्य राजकुमार पुष्कर की बात कभी गलत नहीं हो सकती। अतः अब मुझे भक्तिभाव के साथ वेद-पाठ प्रारंभ करना चाहिए। मेरे वेद-पाठ से आप जीवन-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाएंगे।''

संगीताचार्य राजकुमार पुंगव ने कहा— ''पिताश्री, मैं अपनी वीणा पर आपको वह राग सुनाऊंगा, जिसका शिव ने आविष्कार किया था। यह राग आपको मोक्ष प्रदान करेगा।''

राजकुमार पुनीत ने राजा चित्रसेन से कहा— ''पिताश्री, मृत्यु तो निश्चित है। फिर निराश क्यों? उसके आतंक से भयभीत होना उचित नहीं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह आपको शीघ्र स्वस्थ कर दें।'' फिर उसने अपने भाइयों को समझाया कि उन्हें पिता के सामने ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

उसने पुष्कर से कहा— ''यह आपके आयुर्वेद ज्ञान की परीक्षा का समय है। पिता जी को उत्तम औषधि दीजिए।'' पुष्कर को भी लगा कि उसे बीमार

पिता से यह नहीं कहना चाहिए था। उसने पिता की नाड़ी देखी, फिर औषधि तैयार करने में जुट गया।

फिर पुनीत ने प्रताप से कहा— ''आप पिता जी को ऐसी धर्म-कथा सुनाइए जो उनका मनोबल बढ़ाए, उन्हें मृत्यु के आतंक से दूर ले जाए।''

फिर पुंगव से बोला—''भैया, संगीत तो बुझे हुए दीप को प्रकाशित कर दे, ऐसी शक्ति होती है उसमें। आप वीणावादन कीजिए। ऐसा राग सुनाइए कि इस कक्ष में छाई निराशा और हताशा गायब हो जाए और पिता जी के होंठों पर आनंद की मुसकान खेलने लगे।''

पुष्कर की औषधि से राजा को लाभ पहुंचा। वह स्वस्थ होने लगे। प्रताप ने सुंदर वाणी में उन्हें धर्म कथाएं सुनाई तो उनके मन में छाई निराशा जाती रही। पुंगव का वीणा वादन सुनकर उनका मन प्रसन्न हो उठा।

कुछ ही दिनों में राजा स्वयं स्वस्थ हो गए। उन्होंने पुनीत से कहा— ''इन तीनों ने क्या कुछ सीखा, यह मैंने जान लिया। तुम भी तो कुछ बताओ अपने विषय में।''

पुनीत ने कहा— ''मैंने सीखने से अधिक देखा और समझा है। उसे मैं आपको भी दिखाना चाहता हूं।'' फिर वह राजा को रथ में बैठाकर राज्य में दर्शन के लिए ले गया। रास्ते में उन्हें अपने अनुभव सुनाए और दुखी जनता का दुःख दूर करने की अपनी योजना पिता को बताई।

राजा चित्रसेन को लगा, जैसे वह पहले इस बारे में कुछ नहीं जानते थे। उन्हें आश्चर्य हो रहा था, साथ ही मन में प्रसन्नता का भाव भी था।

भ्रमण से लौटने के बाद उन्होंने राज्य के अधिकारियों को बुलाया। राज्य की व्यवस्था के बारे में नए आदेश दिए। फिर कहा— ''और इस विषय में अगले आदेश पुनीत देगा। मैंने इसे ही युवराज बनाने का निश्चय किया है। मुझे विश्वास है यह न्याय करेगा, प्रजा के दुःख को सुख में बदल देगा।''

सब प्रसन्न थे। ●

नंदन एलबम :१२२
दो श्रेष्ठ खिलाड़ी
विश्वनाथ आनंद
शतरंज ग्रेंड मास्टर
गीत सेठी
बिलियर्ड चैम्पियन
के. के. बिड़ला फाउंडेशन
द्वारा पुरस्कृत

राम को बांधा

— जयप्रकाश भारती

लंका में राम-रावण युद्ध चल रहा था। बलवान कुंभकर्ण मारा गया। बहुत-से दूसरे राक्षस भी काल के गाल में समा गए। औरतें विलाप करने लगीं। रावण भी बार-बार भाई को याद करके दुःखी होने लगा। तभी मेघनाद वहां आया। उसने पिता को समझाया। कहने लगा— "कल मेरा पुरुषार्थ देखना। मुझे कई वरदान मिले हुए हैं। उनके बल पर मैं रीछ-बंदरों की इस सेना के छक्के छुड़ा दूंगा।" मेघनाद तथा कई दूसरे राक्षस यों ही बक-झक करते रहे। बढ़-बढ़ कर अपनी ताकत का बखान करते रहे।

सबेरा हो गया। अनेक रीछ-बंदर चारों ओर आकर घेरा बांधने लगे। वे काल के समान दिखाई दे रहे थे। उधर राक्षस भी बड़े रणधीर वीर थे। मेघनाद माया रचकर और रथ पर चढ़कर आकाश में गया। प्रलय के बादल की तरह वह गरजने लगा। राम की सेना में खलबली मचने लगी।

मेघनाद ऊपर से अस्त्र-शस्त्र की सहायता से त्रिशूल, वज्र, फर्सा और प्रचंड पत्थरों की वर्षा करने लगा। सभी दिशाओं में बाण ही बाण दिखाई देने लगे। वानर कानों से तो शोर सुनते थे— 'पकड़ो और मारो, पकड़ो और मारो।' लेकिन कहां कौन उन पर हमला कर रहा है— यह वे नहीं देख पाते थे। वानर किधर जाएं, यह भी तय नहीं कर पा रहे थे। हनुमान, अंगद, नल और नील जैसे योद्धा भी घबरा गए। लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषण भी कुछ निर्णय नहीं ले पा रहे थे।

मेघनाद अब श्रीराम से जूझने लगा। उसके छोड़े गए बाण सर्प होकर श्रीराम को लगने लगे। श्रीराम को उसने नागपाश में बांध दिया।

यह देख,देवर्षि नारद ने गरुड़ को याद किया। उससे कहा कि श्रीराम को नागपाश से मुक्त करे। गरुड़ ने देखते ही देखते सर्पों को गड़प कर लिया। श्रीराम के बंधन काट डाले। लेकिन गरुड़ के मन में संदेह पैदा हो गया— 'श्रीराम तो सर्व शक्तिमान कहे जाते हैं। इनका नाम जपने पर तो सारे बंधन कट जाते हैं। फिर यह मेघनाद के बंधन में कैसे फंस गए?'

परेशान गरुड़ नारद जी के पास पहुंचे। अपने मन की शंका उनके सामने रखी। नारद जी ने कहा— "गरुड़, तुम ब्रह्मा के पास जाओ। वह जैसा तुम्हें कहें, वैसा ही करो। तुम्हारी शंका वही दूर कर सकते हैं।"

गरुड़ के लिए क्या मुश्किल— वह ब्रह्मा के पास जा पहुंचे। ब्रह्मा ने उन्हें शंकर के पास भेज दिया। गरुड़ शंकर जी के पास आए। उस समय शंकर कुबेर-गृह जा रहे थे। भगवान शंकर ने गरुड़ से कहा— "अभी मेरे पास तो समय नहीं है। तुम्हारा भ्रम तभी दूर हो सकता है, जब कुछ समय सत्संग करो। तुम काक भुशुंडि के पास जाओ। वह श्री भगवान की लीला-कथा कहा करते हैं। उनके पास हंस तथा अनेक पक्षी कथा सुनने आया करते हैं। तुम भी वहां जाकर प्रभु का चरित्र सुनो। वहां कथा सुनने से तुम्हारे मन का संदेह दूर हो जाएगा।"

भगवान शंकर की सलाह सुनकर तो गरुड़ और उलझन में उलझ गए— 'भला काग जैसे पक्षी का ज्ञान से क्या लेना-देना! वह मुझे क्या सीख देगा?' लेकिन उन्होंने कोई तर्क नहीं किया। शंकर की बात मानकर गरुड़, नीलांचल पर्वत पर जा पहुंचे। वहां बड़, पीपल, पाकर और आम के ऊंचे-ऊंचे वृक्ष लगे थे। पर्वत के ऊपर एक सुंदर सरोवर था, जहां सीढ़ियों में मणियां जड़ी हुई थीं। गरुड़ वहां स्नान आदि करके काक भुशुंडि के आश्रम में गए। वह ठीक उसी समय पहुंचे, जब काक भुशुंडि हरि-कथा शुरू करनेवाले थे। उन्होंने गरुड़ का स्वागत किया। फिर वह रामचरित सुनाने लगे।

काक जी ने बताया—

"बहुत-बहुत पहले कलियुग के किसी कल्प में अयोध्या में मेरा जन्म हुआ। वहां एक बार अकाल पड़ा। मैंने अयोध्या छोड़ दी। उज्जयिनी में चला आया। मैं बहुत दीन-हीन था, किंतु वहां मेरे पास कुछ साधन जुट गए। वहां सरल स्वभाव के एक ब्राह्मण से मैं मिला। उनसे शिव मंत्र की दीक्षा ली। भगवान शिव की पूजा-अर्चना करने लगा।

"मैं शंकर की पूजा किया करता, किंतु राम के प्रति मन में कोई आदर का भाव न था। मैं उनकी निंदा किया करता था। इससे मेरे गुरु दुखी होते। गुरु जी कई बार मुझे समझाते— 'भगवान शंकर राम-नाम का जाप करते हैं। तुम्हें राम के प्रति किसी प्रकार का द्वेष या शंका नहीं रखनी चाहिए।' लेकिन मैंने गुरु की इस बात पर कान नहीं दिया।

"धीरे-धीरे अपने अहंकार के कारण मैं गुरु को भी पूरा आदर न देता। एक दिन मैं मंदिर में शंकर का जाप कर रहा था। गुरु जी वहां आए। मैंने उठकर उन्हें प्रणाम भी नहीं किया। गुरु जी ने तो इस उद्दंडता पर ध्यान नहीं दिया, किंतु भगवान शंकर इस पर
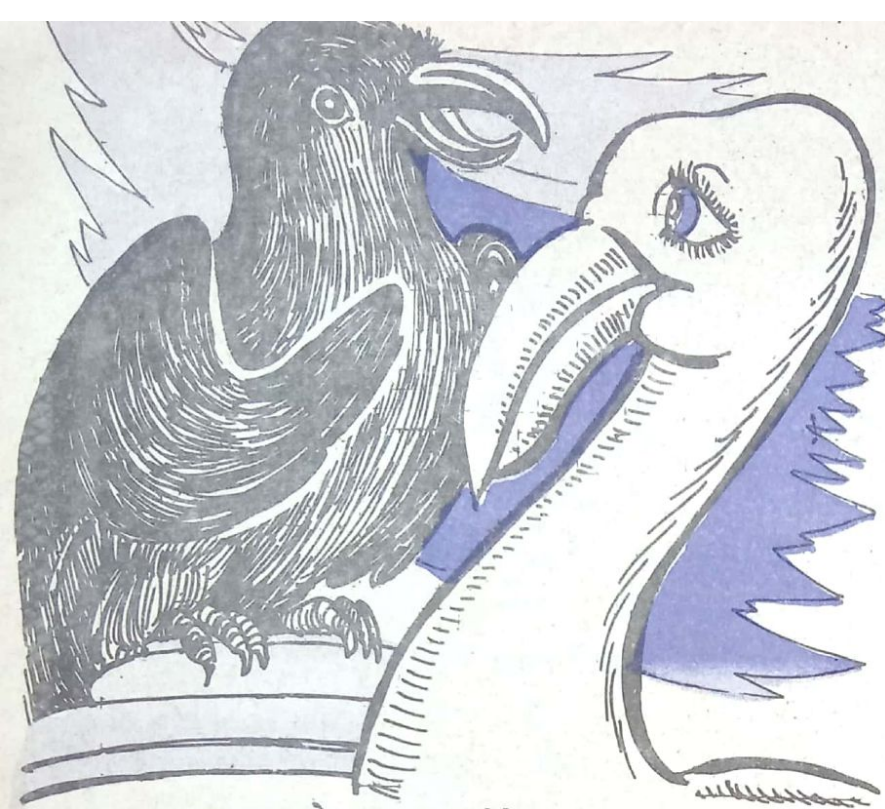
अप्रसन्न हो गए। उन्होंने मुझे शाप दे दिया। आकाशवाणी हुई— 'तू एक हजार बार जन्म लेगा।'

"मेरे गुरु जी ने यह सुना, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। उन्होंने मेरे लिए भोले शंकर से बार-बार प्रार्थना की। उन्होंने मुझ पर दया करके कहा— 'मेरा शाप वापस नहीं हो सकता। इसे अनेक योनियों में हजार बार जन्म लेना ही होगा। हां, इसे जन्म-मरण का कष्ट नहीं भोगना पड़ेगा। जब जो शरीर मिलेगा, बिना कष्ट उसे त्याग सकेगा। अपने बारे में इसे सब कुछ याद रहेगा। अंतिम जन्म में यह ब्राह्मण बनेगा। श्रीराम की भक्ति के कारण इसकी सद्‌गति होगी।'

"वैसा ही हुआ। अनेक जन्म लेने और भटकते रहने के बाद अंत में मैं मनुष्य रूप में जन्मा। मुझे पिछले जन्मों की याद थी। इस बार मैंने प्रभु के चरणों में चित्त लगाया। महर्षि लोमश को गुरु बनाया। लेकिन मेरा व्यवहार गुरु के प्रति ठीक न था। मुझे तर्क-कुतर्क करने की आदत थी। अपनी ही बात बार-बार कहे जाता। एक दिन लोमश नाराज हो गए। वह बोले— 'तू मेरी बातों को ठीक से सुनता नहीं, अपनी बक-बक किया करता है। जा, काग हो जा।'

"मैं कौआ बन गया। मैंने महर्षि लोमश को प्रणाम किया। उड़कर वहां से जाना ही चाहता था कि महर्षि के मन में दया उपजी। वह बोले— 'अब से तुम भगवान के बाल रूप का ध्यान किया करना। जब-जब भगवान अवतार लेंगे, तुम पांच वर्ष की आयु तक उनकी बाल-लीला देखा करोगे।"

इसके बाद काक जी ने बताया कि वह सत्ताईस कल्प से इसी तरह जीवन बिता रहे हैं। जो भी इच्छा करते हैं, ईश्वर की कृपा से पूरी हो जाती हैं। काक ने गरुड़ जी से राम के अवतार की पूरी कथा कही। श्रीराम का बाल-चरित्र बड़े प्रेम से सुनाया। उसके बाद आगे की सभी घटनाएं एक के बाद एक सुनाते गए।

यह सब सुनने के बाद गरुड़ बोले— "हे काग शिरोमणि, आपने श्रीराम का चरित्र सुनाया, इससे मेरा सारा श्रम दूर हो गया। इतना ही नहीं, उनके प्रति मन में श्रद्धा और भक्ति भी पैदा हो गई। लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा कि भगवान को लड़ाई में बंधा हुआ देखकर मेरे मन में शंका क्यों जाग गई थी!"

काक भुशुंडि बोले— "हे स्वामी गरुड़ जी, आप तो भगवान की सेवा में रहते हैं। उनकी लीलाओं को कोई पूरी तरह समझ नहीं सकता। आपके मन में कभी अभिमान जागा था कि उनकी माया का आप पर कोई असर नहीं हो सकता, जबकि दुनिया के लोग माया-मोह में फंसे रहते हैं। प्रभु वह अभिमान मिटाना चाहते थे। आप पक्षियों के राजा हैं और मैं काग सब पक्षियों में दीन-हीन ठहरा। फिर भी उन कृपालु ने आपको मेरे पास भेजा, ताकि आपका अभिमान नष्ट हो। यानी प्रभु ने आपको यहां भेजकर मेरा सम्मान बढ़ा दिया। आपके दर्शन पाकर मैं कृतार्थ हुआ।"

गरुड़ ने शीश नवाकर भक्त काक भुशुंडि जी को प्रणाम किया और बोले— "लड़ाई में भगवान को बंधा देखकर मेरे मन में भ्रम हुआ था। अच्छा ही हुआ जो ऐसा भ्रम हुआ। इसी बहाने दयासागर ने मुझे आपके दर्शन करने का अवसर दिया। मैं भगवान की परम विचित्र और सुहावनी कथा सुन सका। आपने मुझ पर बड़ा उपकार किया।"

गरुड़ जी वहां से विष्णु-लोक को उड़ चले।●

अंगामी लोक कथा

बाघ के भाई

—डा. श्याम सिंह शशि

दुनिया में सबसे पहले एक बाघ पैदा हुआ। फिर एक देव का जन्म हुआ और फिर मनुष्य आया। तीनों की मां एक ही थी। सब भाई बड़े प्यार से रहते थे। उनकी मां अंगामी नागा जाति की थी। वह उनके लिए जंगल से कंदमूल फल लाती और अपने हाथ से तीनों को खिलाती। वे जब बड़े हुए, तो मां की सेवा करने लगे।

एक दिन मां की तबीयत खराब हो गई, तो बाघ ने तीन दिन तक कुछ नहीं खाया। बस वह अपनी मां का पैर चाटता रहा।

देव ने देखा तो उसे डांटते हुए कहा—"तुझे शर्म नहीं आती। इतना बड़ा हो गया, अब भी मां को परेशान करता रहता है।"

तभी मनुष्य भी वहां पहुंच गया। उसने एक थप्पड़ उसकी कनपटी पर जड़ दिया। देव और मनुष्य उसे दोषी ठहराने में लगे थे। मां का दिल पसीज उठा। वह बोली—"शर्म तो तुम्हें आनी चाहिए। तुमने अपने बड़े भाई पर हाथ उठाया। उसके पास भाषा नहीं है, इसलिए वह अपनी सफाई नहीं दे सकता। तुम्हें डांटने या थप्पड़ मारने का अधिकार किसने दिया? मैं तो मां हूं – तुम तीनों की मां। मेरे लिए तुम तीनों बराबर हो। तीनों ही मेरी आंखों के तारे हो। इसलिए मुझसे यह सब नहीं देखा जाता। जाओ, आगे से ऐसा मत करना।"

देव और मनुष्य बड़े शर्मिंदा हुए। वे मां से कैसे कहते कि अंधी ममता ने बाघ को जिद्दी बना दिया है। उसकी जिह्वा से मां की त्वचा रोग ग्रस्त होती जा रही है। कभी-कभी उसका दांत भी लग जाता था।

एक दिन मां की कराहने की आवाज आई। देव और मनुष्य उसके पास दौड़े-दौड़े गए। संयोग से बाघ वहां नहीं था। देव बोला—"मां, तुम बाघ से साफ-साफ क्यों नहीं कह देतीं कि वह दूर रहा करे।"

मनुष्य ने भी हां में हां मिलाई। किंतु मां की कातर आंखें कह रही थीं—'कैसे कहूं? मैं मां जो ठहरी।'

आखिर मां की दशा दिन-प्रतिदिन खराब होने लगी। उस दिन पूर्णिमा की रात थी। मां लेटी हुई थी। उसने चांद की ओर देखा और फिर आंखें मूंद लीं। दोनों भाई उसके पास गए, तो देखा मां निर्जीव पड़ी है।

देव और मनुष्य मां से लिपटकर रोने लगे। तभी एक तेज हवा का झोंका आया और वृक्षों के कुछ पत्ते मां के शव पर आ पड़े। ऐसा लगता था कि प्रकृति भी इस दुःख में उनके साथ है।

अचानक मनुष्य को बाघ आता दिखाई पड़ा। उसने कहा—"देव भाई, कहीं ऐसा न हो कि मां को मरी देखकर वह क्रोधित हो उठे।"

देव ने कहा—"तुम्हारी आशंका सही लगती
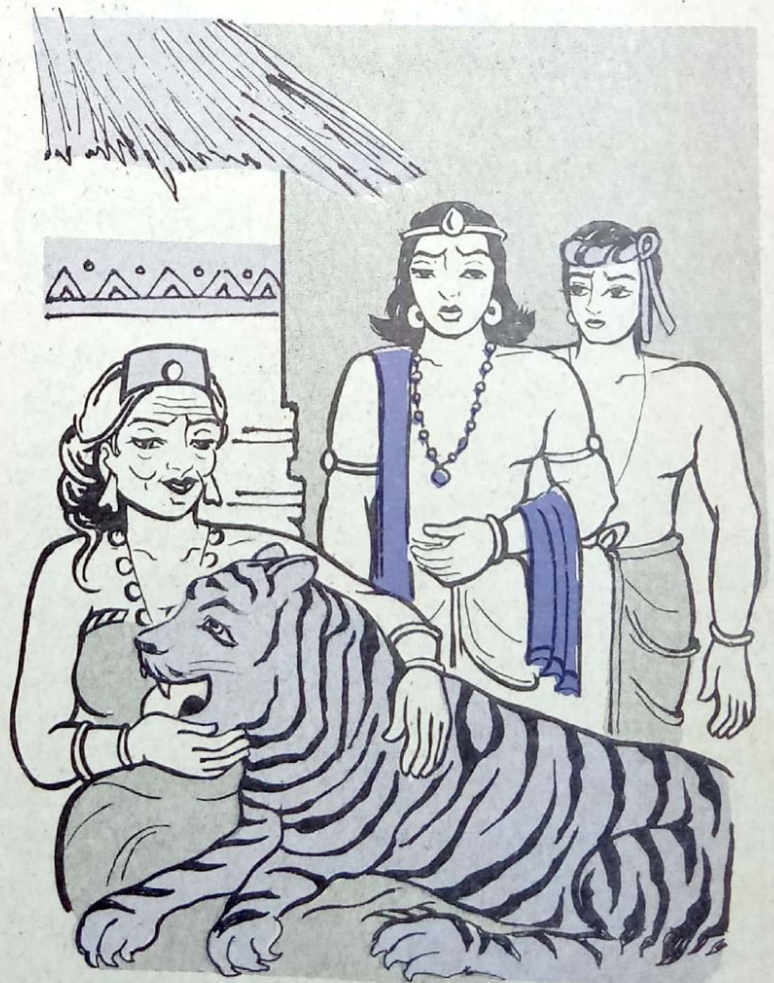
है। कोई तरकीब सोचो ताकि वह मां के शव को न देख सके।''

मनुष्य के सामने एक तूंबी पड़ी थी, जिसमें कुछ छेद थे। उसने तुरंत उसे अपने हाथ में लिया और बाघ के पास गया। बोला—''बाघ भाई, इस तूंबी को पोखर तक ले जाओ और शीघ्र ही पानी भरकर ले आओ। आज मां बहुत बीमार है। वह हमारे लिए पीने का पानी नहीं ला सकी।''

बाघ पानी लेने के लिए पोखर पर गया। उसने तूंबी में पानी भरा। लेकिन थोड़ी दूर चलने पर देखा कि तूंबी के छेदों के रास्ते सारा पानी निकल गया है। वह फिर पोखर पर गया और पानी भरकर वापस आया तो तूंबी फिर खाली हो गई। इस प्रकार वह कई बार पोखर तक गया। इसी बीच दोनों भाइयों ने मां का शव कहीं छिपा दिया।

उधर बाघ बड़ा परेशान था। वह खाली तूंबी लेकर घर वापस आ गया। उसने अपनी असमर्थता के लिए क्षमा मांगी।

बाघ अपनी मां को देखने के लिए घर में घुसा, तो वह कहीं दिखाई नहीं दी। वह फिर इधर-उधर ढूंढ़ने लगा। जब वह कहीं नहीं मिली, तो गुर्राने लगा
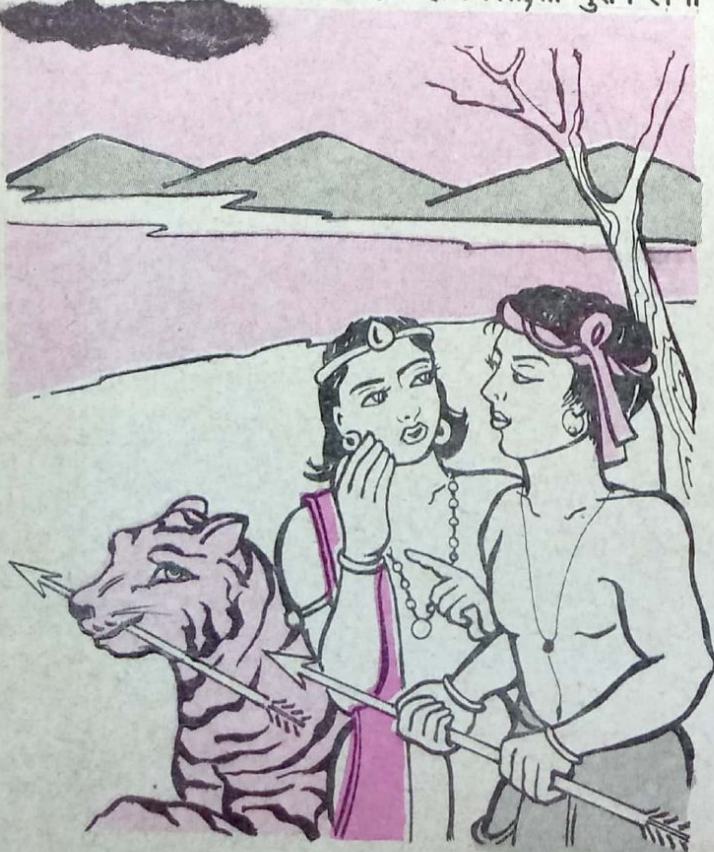
और अपने दोनों भाइयों से पूछने लगा—''बताओ, मेरी मां कहां छिपा रखी है?''

देव और मनुष्य घबराए और दोनों एक स्वर में बोले—''पता नहीं, कहां चली गई?''

बाघ स्थिति को ताड़ गया। वह फिर दहाड़ते हुए बोला—''देव, तुम अपने को सर्वशक्तिमान समझते हो। क्या मेरी मां को तुम मुझे लाकर नहीं दे सकते? तुम देव नहीं दानव हो, नहीं तो मेरी मां तुम्हारे हाथों क्यों मारी जाती? उसे जरूर तुमने बुरा-भला कहा होगा। वह कहीं जाकर मर गई होगी।''

देव मौन खड़ा था। बाघ ने मनुष्य की ओर देखा और कहा—''मनुष्य भाई, तुम तो बड़े सहृदय बनते थे। जब मैं मां के निकट जाता था, तो तुम मुझे घूर-घूरकर देखते रहते थे। जैसे मां पर केवल तुम्हारा ही अधिकार हो। अब मार डाला तुमने उसे। मैं यहां होता, तो उसे कभी न मरने देता।''

मां के मरने पर तीनों भाइयों ने निश्चय किया कि अब उन्हें अलग हो जाना चाहिए। बाघ और मनुष्य गांव में ही रहना चाहते थे। इच्छा तो देव की भी यही थी, किंतु वह कैसे कहे कि गांव में रहना चाहता है। वह बोला—''बाघ और मनुष्य के बीच एक दौड़ प्रतियोगिता होगी। जो उसमें जीतेगा, वह गांव में रहेगा, किंतु जो हार जाएगा, उसे जंगल जाना पड़ेगा।''

दौड़ प्रतियोगिता में दोनों को एक पेड़ तक दौड़कर जाना था। वहां पेड़ में एक तीर खोंसना था। दोनों अपने-अपने तीर के लिए तैयार खड़े थे। तभी देव ने चुपके-से मनुष्य के कान में कुछ खुसर-फुसर की। ज्यों ही बाघ पेड़ के पास दौड़कर गया, तो उसने देखा, पहले ही मनुष्य का तीर उसमें गड़ा हुआ है। वह समझ गया कि उसके साथ धोखा हुआ है। उसने अब दोनों भाइयों की ओर रोष से देखा और फिर जंगल की ओर चल पड़ा। कहते हैं, तब से बाघ जंगलों में ही रहने लगा। उसे जब कभी पुरानी याद आती है, तो वह नरभक्षी बन जाता है। वह देव और मनुष्य दोनों को ही धोखेबाज समझता है। ●

सबसे सुंदर

—अक्षयकुमार जैन

एक प्रसिद्ध छायाकार (फोटोग्राफर) था। उसका नाम था तारासिंह। एक दिन वह स्कूल में गया। हैडमास्टर से बोला—"मैं आपके स्कूल के सबसे स्वस्थ और सुंदर बच्चे की तसवीर खींचूंगा, उसे विलायत की नुमायश में भेजूंगा। आपके स्कूल की नामवरी होगी।"

हैडमास्टर ने कक्षाओं में ले जाकर सब बच्चे उसे दिखा दिए। उस छायाकार ने एक सुंदर और स्वस्थ, सेब जैसे लाल बच्चे, रमेश की तसवीर उतारी। उसे आकार में खूब बड़ा किया और हैडमास्टर को दिखाया। तसवीर वाकई बहुत सुंदर बनी थी—वह बच्चा जितना सुंदर था, उससे भी अधिक सुंदर।

तसवीर विलायत की फोटो प्रदर्शनी में गई। उसे इनाम के लायक समझा गया। फिर तो वह तसवीर कई अखबारों में भी छपी। उसका शीर्षक था—'सबसे सुंदर बालक।'

वर्षों बीत गए। जमाना बदल गया। तारासिंह भी बूढ़ा हो गया। उसके मन में आया—'जैसे बरसों पहले मैंने सबसे सुंदर बच्चे का फोटो खींचा था, उस तरह अब सबसे बदशक्ल आदमी की तसवीर उतारूं। दोनों तसवीरों को मिलाकर लिखूं— सुंदर-असुंदर की जोड़ी।' तो उसने अपनी तलाश शुरू की। भिखारियों में, कोढ़ियों में घूमने लगा। बहुत से चित्र उसने खींचे भी। फिर एक दिन एक व्यक्ति ने उससे कहा—"जेल में जाओ, वहां तुम्हें भीषण, बदशक्ल लोग मिलेंगे। बुरा काम करने वाले हत्यारों, डाकुओं की शक्लें ही बदसूरत होती हैं।"

तारासिंह केंद्रीय जेल में गया। जेलर को अपनी बात बताई। पहले तो जेलर ने कायदे-कानून बताए, तसवीर लेने से मना किया। पर अंत में उसे भरोसा हो गया कि छायाकार कला की दृष्टि से फोटो लेना चाहता है। इस पर उसने इजाजत दे दी। छायाकार जहां कैदी काम कर रहे थे, वहां पहुंचा।

सामने पत्थर तोड़ता एक भयंकर सूरत वाला जवान उसे दिखा। तारासिंह उसके पास गया। पूछा—"मैं आपकी तसवीर खींचूं, तो आपको एतराज तो नहीं होगा?" अकड़ में कैदी ने जवाब दिया—"ले लो चाहे जितनी तसवीरें, मुझे क्या? अब तो छूटने के थोड़े ही दिन रह गए, नहीं तो कालकोठरी में पड़ा रहना पड़ता था। उस कैद की सजा मिली थी। चौदह-पंद्रह साल में पूरी होती है।"

तारासिंह ने उसके कई फोटो ले लिए। तब उसका नाम, गांव का पता पूछा। नाम सुनकर छायाकार थोड़ा परेशान हुआ। कैदी का नाम रमेश था। उसी कसबे का रहने वाला था, जहां के स्कूल के सुंदर बालक रमेश की तसवीर बहुत बरस पहले उसने उतारी थी। पूछने पर पता चला कि दरअसल यह वही सुंदर रमेश था। फिर उसके जीवन के बारे में पता चला कि वह बुरी संगत में पड़ गया था, पढ़ भी न सका। पहले चोरी शुरू की, फिर डाके डालने लगा। मार-पीट में उसे मजा आने लगा था।

तारासिंह सोचने लगा—'बुरे कामों में सुंदर-सा फूल नागफनी बन जाता है।' रमेश के दो रूप देख लिए थे उसने।

जादूगरनी

—वैजयंती सावंत टोणपे

"इस मिट्टी के बर्तन में आपने किसके लिए पानी भरा है अम्मां जी ?"—रोहित ने पूछा।

"कौओं के लिए बेटे।"—उसे जवाब मिला।

"पर कौओं को कैसे पता चलेगा कि यह पानी उनके लिए है ?"

"मैं उन्हें बताऊंगी। वह देखो। वे आ रहे हैं। आओ, कौओ, लो अपना दाना-पानी।"—अम्मां जी ने कहा और डबलरोटी के छोटे-छोटे टुकड़े पानी के पास रख दिए।

रोहित आश्चर्य से अम्मां जी को देख रहा था। दीवार पर बैठा कौआ इस इंतजार में था कि कब रोहित हटे और कब उसे भोजन-पानी मिले।

"अरे रोहित, क्या तुम्हें स्कूल नहीं जाना है ? बस निकल जाएगी। चलो, जाकर तैयार हो जाओ।"—अम्मां जी ने कहा। उन्हें पता था, जब तक रोहित नहीं जाएगा, कौआ पानी पीने नहीं आएगा।

"पता है, हमारे मकान की बरसाती में एक जादूगरनी रहने आई है।"—रोहित ने दोपहर की छुट्टी में अपने मित्रों को बताया।

"जादूगरनी ! झूठ क्यों बोलते हो? आजकल जादूगरनियां तो होती ही नहीं।"—रमन ने टोका।

"मैं तुम्हें अपनी अम्मां जी के बारे में बताना चाहता हूं।"—रोहित ने कहा।

"वह क्या तुम्हारी नानी हैं ?"—रमन ने पूछा।

"नहीं तो, मेरी कोई नहीं हैं अम्मां जी। उनका परिवार परदेस गया है, इसलिए वह शहर में रहने आई हैं। पता है, वह कौओं से बातें करती हैं। वे अम्मां का आदेश मानते हैं। उनके कहने पर ब्रेड खाते हैं, पानी पीते हैं। मैंने यह जादू अपनी आंखों से देखा आज सुबह।"—रोहित के मन पर सुबह के दृश्य की छाप इतनी गहरी थी कि वह और कुछ सोच ही नहीं पा रहा था।

"क्या सच ?"—श्यामू ने आश्चर्य से पूछा।

"अरे, छोड़ो भी ! कौआ भूखा-प्यासा होगा, इसलिए चला आया होगा। इसमें जादू की भला क्या बात है ?"—रमन बोला। तभी घंटी बजी और वे सब हड़बड़ाते हुए कक्षा में चले गए।

उस रात रोहित ठीक से सो न सका। बस, यही सब सोचता रहा। सुबह होते ही छत पर जा पहुंचा। उसने देखा, सामने टेलीफोन के तार पर चार कौए बैठे
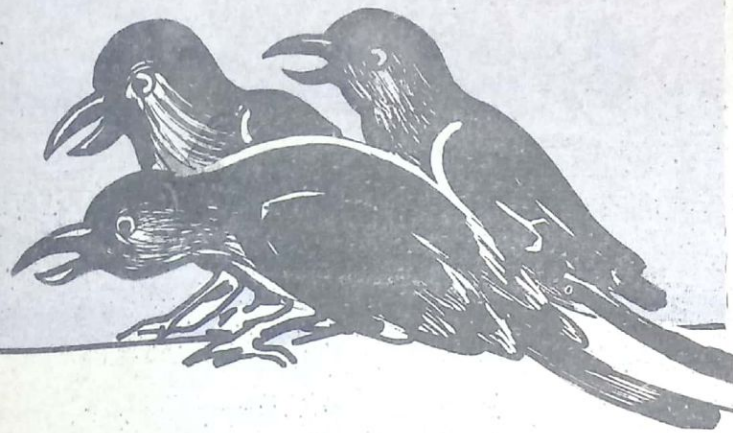
थे और अम्मां जी ब्रेड के छोटे-छोटे टुकड़े कर रही थीं। "अम्मां जी, क्या आप सचमुच कौओं की भाषा समझती हैं ? क्या कह रहे हैं वे आपस में।"–रोहित ने पूछा।

"हां, मुझे धन्यवाद दे रहे हैं। कह रहे हैं— जब से आप इस घर में आई हैं, हमें सुबह-सुबह भोजन और पानी मिलने लगा है।"—अम्मां जी ने हंस कर कहा—"और बीच वाला कौआ तुम्हारे बारे में पूछ रहा है, यह लड़का हमें मारना तो नहीं चाहता ? यह रोज आ जाता है, ठीक हमारे भोजन के समय।" और उनकी हंसी गूंजने लगी।—"तब तो सचमुच उनकी भाषा समझती हैं आप ! उनसे कहिए न मुझसे भी बातें करें। मुझसे डरते क्यों हैं ? मैं उन्हें मारूंगा नहीं। उन्हें समझा दीजिए या फिर..."

"अरे रोहित बेटे, ऐसा कुछ नहीं है। मैं तो सिर्फ तुम्हारा दिल बहलाने के लिए यह सब कहती हूं।"—अम्मां जी ने कहा।

"तब फिर आप उन्हें दाना-पानी क्यों देती हैं। और कौए रोज अपने आप ठीक समय पर कैसे पहुंच जाते हैं यहां ?"—रोहित को लग रहा था जैसे अम्मां जी उसे टाल रही हैं। सच बात बताना नहीं चाहतीं।

–"इसी को कहते हैं एक-दूसरे की बात समझना। कौआ सुबह-सुबह ही भोजन की तलाश में निकलता है। जहां उसे लगातार कुछ खाने को मिलने लगे, तो फिर वह वहीं पहुंच जाता है। रही बात कौओं को टुकड़े डालने की, तो यह मेरी बचपन की आदत है। मैं परिंदों को दाना चुगाती थी, पेड़-पौधों को पानी देती थी। कौए समझदार पक्षी हैं।"

रोहित हंस पड़ा—"हां, अम्मां जी, उस दिन आपने बताया भी था—दोपहर में एक कौआ जोर से कांव-कांव कर रहा था। जब मैंने पूछा, तो आपने कहा कि गरमी के कारण कौओं का पानी गरम हो गया है। आपने बरतन खाली करके उसमें ठंडा पानी भर दिया था। कौआ एकदम आकर पीने लगा था।"

अम्मां जी ने कहा—"रोहित, अंदर चलो। मैं तुम्हें एक और अजूबा दिखाती हूं।" रोहित उनके साथ बरसाती में चला गया। फिर खिड़की के सामने मूढ़े पर जा बैठा। उसने देखा—चारों कौए एक-एक करके तार से उतरे। उनमें से दो ने इधर-उधर ताका तथा डबलरोटी के टुकड़े उठाकर खाने लगे। तीसरे कौए ने एक टुकड़ा चोंच में लेकर पानी में डुबाया और बाहर निकाल लिया। तभी चौथे कौए ने चोंच खोली। तीसरे ने पानी से नरम हुआ टुकड़ा उसकी चोंच में डाल दिया। फिर एक टुकड़ा अपने आप इसी तरह खाया।

रोहित मंत्रमुग्ध बैठा देखता रहा। एक बार उसने कुछ कहना चाहा, पर अम्मां जी ने हाथ दबाकर चुप रहने का इशारा कर दिया। रोहित ने देखा—तीसरा कौआ बूढ़ा और बीमार था। उसके बदन पर घाव दिखाई दे रहे थे। खाकर चारों कौए वहां से उड़ गए। रोहित ने कहा—"अम्मां जी, ये तो बिल्कुल मनुष्यों की तरह एक-दूसरे की देखभाल करते हैं।"

–"हां, रोहित, इनकी यही भाषा तो सीखी है मैंने। कैसे आपस में सुख-दुःख बांटना चाहिए। प्यार की भाषा तो एक ही है।" फिर चौंक कर बोलीं—"अरे, आज तुम्हारी छुट्टी है, पर तुम्हारी मां को तो आफिस जाना है। जाकर उनका हाथ बंटाओ।"

रोहित चुपचाप चला गया—बेमन से। पर अब वह नियम से अम्मां जी के पास बैठता था और मन में उठने वाले प्रश्नों के उत्तर पूछता था। एक दिन स्कूल जाने से पहले छत पर पहुंचा, तो अम्मां जी न दिखाई दीं। शायद अभी सो रही थीं। कौओं का पानी बदला नहीं गया था। गमले भी सूखे थे। उसने सोचा, एक बार अम्मां जी से मिल ले, पर स्कूल के लिए देर हो

रही थी, इसलिए तुरंत चला आया।

स्कूल में खेल दिवस की तैयारियां चल रही थीं। उन्हीं में समय कैसे गुजरा, उसे पता ही नहीं चला। दोपहर को जब घर पहुंचा, तो चारों ओर अजीब सन्नाटा छाया हुआ था। जब चाबी निकाल कर दरवाजा खोलने लगा, तो उसे महसूस हुआ कि बात क्या है। आज अम्मां जी नहीं थीं। रोज जब स्कूल से लौटता था, तो अम्मां जी घर के बाहर खड़ी मिलती थीं। उसे खाना गरम करके देती थीं।

'अम्मां जी कहां हैं ?'—यह विचार आते ही रोहित बस्ता पटककर दो-दो सीढ़ियां फलांगता ऊपर जा पहुंचा। बरसाती के बाहर रखे गमले सूखे पड़े थे। कौओं का पानी भी गंदा नजर आ रहा था।

"अम्मां जी !"—रोहित ने पुकारा, तो जवाब में कराहने की आवाज सुनाई दी।

"अम्मां जी, क्या बात है।"—रोहित कुछ घबराए स्वर में बोला और दरवाजा थपथपाया। बरसाती का दरवाजा खुल गया। रोहित अंदर घुस गया। उसने देखा, अम्मां जी बिस्तर पर पड़ी हैं। "अम्मां जी, क्या हो गया आपको ?"-रोहित ने कांपते स्वर में पूछा।

"कौन रोहित ?"—आवाज सुनकर अम्मां जी ने धीमी आवाज में कहा और रोहित की तरफ देखा। "कल से मेरी तबीयत ठीक नहीं है।"–कहते-कहते उनकी आंखें बंद हो गईं।

रोहित झट रसोई की तरफ दौड़ा। दूध लेकर गरम किया, चीनी मिलाई। फिर ब्रेड लेकर अम्मां जी के पास आ गया। डबलरोटी को दूध में भिगो दिया। सिरहाने बैठकर अम्मां जी का सिर अपनी गोद में रख लिया। अम्मां जी ने आंखें खोलकर उसकी ओर देखा तो रोहित ने कहा—"अम्मां जी, डबलरोटी खा लीजिए।" और चम्मच से धीरे-धीरे उन्हें दूध में भीगी डबलरोटी खिलाने लगा।

कुछ देर बाद उसने नीचे जाकर मां को फोन कर दिया और फिर आकर उनके पास बैठ गया। वह अम्मां जी का सिर उसी तरह अपनी गोद में रखे बैठा रहा। अम्मां जी को नींद आ गई थी।

लगभग आधा घंटे बाद अम्मां जी की नींद टूट गई। वह रोहित को देखकर धीरे से मुसकराईं। वह बोला—"आपकी दवाई कहां है ?" अम्मां जी ने बताया, तो रोहित ने उन्हें दवा खिला दी और धीरे-धीरे उनके माथे पर हाथ फेरने लगा।

अम्मां जी ने रोहित को अपनी ओर खींच लिया। बोलीं—"अरे, मेरे छोटे से डाक्टर ! तूने तो अपने जादू से मुझे ठीक कर दिया।"

"अगर आप ठीक हैं, तो चलकर कौओं का पानी बदल दीजिए। उन्हें डबलरोटी खिलाइए।"—रोहित बोला।

"इतनी ठीक नहीं हूं अभी मैं। और यह काम तो तू भी कर सकता है। तू भी तो कौओं की भाषा समझने लगा है।"—अम्मां जी ने प्यार भरे स्वर में कहा।

रोहित हंसने लगा। बाहर छत पर कौए कांव-कांव कर रहे थे। रोहित को मालूम था, वे क्या मांग रहे हैं। अम्मा जी से उसने कौओं की भाषा सीख ली थी।

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट।**
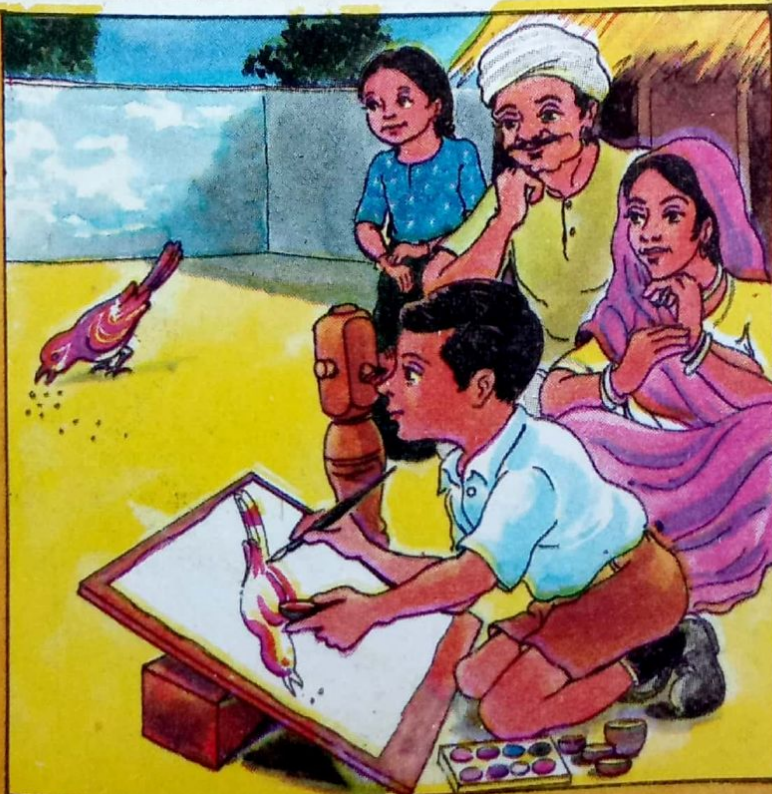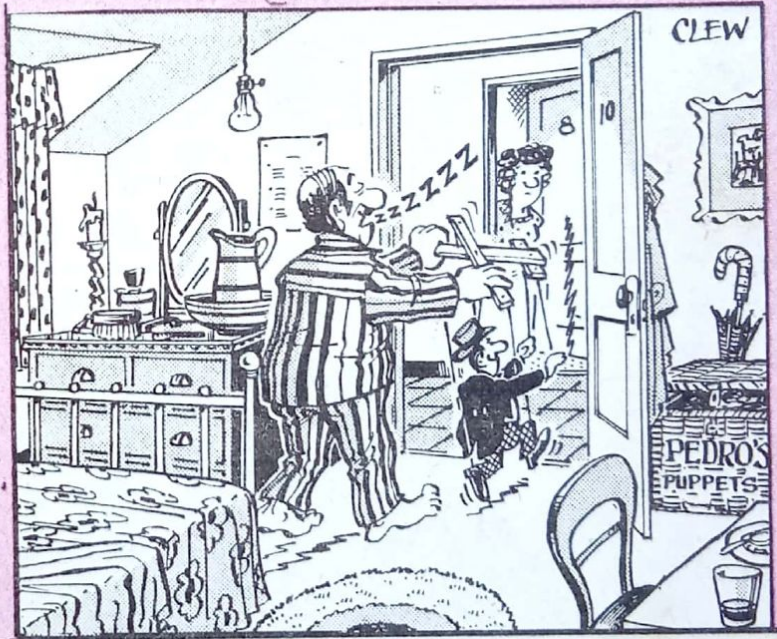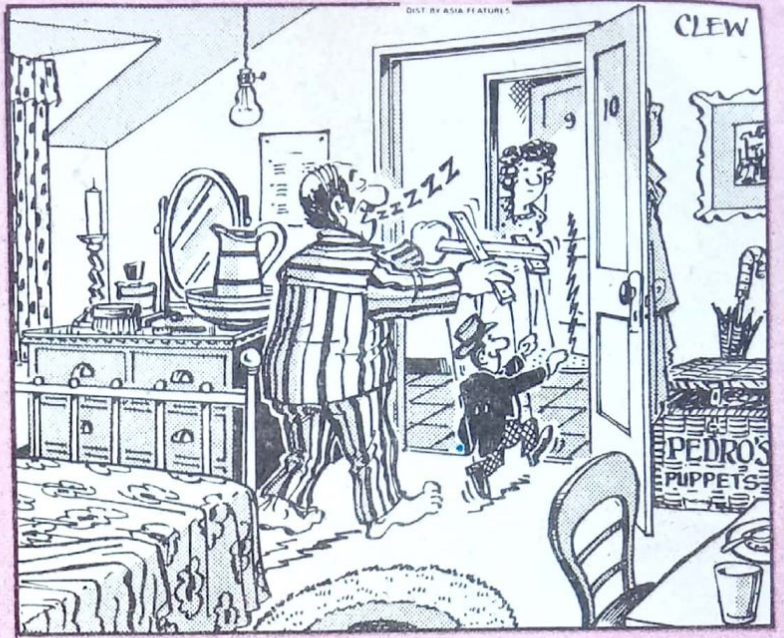
कहानी लिखो : १२४

सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे **१५ मार्च** तक **कहानी लिखो : १२४, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : मई '९४ अंक

चित्र-पहेली : १२४

हमने नाटक खेला : विषय पर चटख रंगों से, एक चित्र बनाइए। चित्र के पीछे अपना **नाम, आयु** और **पता** साफ-साफ लिखिए। उसे **१५ मार्च '९४** तक **नंदन कार्यालय** में भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : जून '९४ अंक

फिर आया मौसम फूलों का

चित्र : इंद्रजीत जुनेजा, राजेन्द्रकुमार वधवा

चमक उठी तलवार

— वृंदावनलाल वर्मा

कहानी उस समय की है, जब अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कम्पनी ने हमारे देश पर अपना पंजा फैला लिया था।

झांसी का राजा गंगाधर राव था। वह कला प्रेमी तो था, पर अच्छा शासक नहीं था।

झांसी पर पहले पेशवाओं का राज्य था। अंग्रेजों ने पेशवा बाजीराव द्वितीय से सारे राज्याधिकार छीन लिए थे। बदले में उसे आठ लाख रुपए की वार्षिक पेंशन और बिठूर की जागीर दे दी। उसकी अपनी कोई संतान नहीं थी। उसने एक बालक नाना को गोद ले लिया। नाना के दो और भाई थे— बाला और रावसाहब।

बाजीराव का एक विश्वासपात्र कर्मचारी था मोरोपंत। उसकी बेटी थी— मनू। मनू चार वर्ष की थी। तभी उसकी मां भागीरथी देवी चल बसी। पिता ने खूब लाड़-प्यार दिया। बेटे की तरह पाला। नाना, राव और मनू साथ-साथ ही खेलते, खाते और पढ़ते थे।

विश्व की महान कृतियां : हिंदी

वृंदावनलाल वर्मा (१८९०-१९६९) इनका जन्म उत्तर प्रदेश के झांसी जिले में हुआ था। 'विराटा की पद्मिनी', 'मृगनयनी', 'कचनार', 'झांसी की रानी' आदि इनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास हैं। यहां 'झांसी की रानी' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं। — सं.

एक बार ये तीनों ही घुड़सवारी कर रहे थे। सहसा नाना घोड़े से गिर गया। गहरी चोट आई। मनू ने झट उसे अपने घोड़े पर बैठाया और उसे घर ले आई। सबने उसके साहस की प्रशंसा की। उस समय वह तेरह वर्ष की थी। पिता उसके विवाह के लिए योग्य वर की खोज में थे।

समय बीता। एक दिन राजा गंगाधर राव से मनू का विवाह हो गया। विवाह के बाद मनू का नाम रानी लक्ष्मीबाई हो गया। वह सबसे मीठा बोलती थी। दासियों को वह सहेली मानती थी और उनसे वैसा ही व्यवहार करती थी। रानी होकर भी वह घुड़सवारी, तलवारबाजी और तीरंदाजी का बराबर अभ्यास करती थी।

लक्ष्मीबाई के व्यवहार से जनता खुश थी। सन् १८५१ में रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। पूरे राज्य में खुशियां मनाई गईं। लेकिन तीन महीने बाद ही बालक चल बसा।

राजा को बहुत दुःख पहुंचा। वह अस्वस्थ रहने लगा। उसे अपनी मौत करीब दिखाई देने लगी। उसने दामोदर राव नामक बालक को गोद ले लिया। उसने अंग्रेज सरकार को अर्जी दी कि उसके मरने के बाद झांसी का राजा दामोदर राव को माना जाए।

कुछ दिन बाद राजा का देहांत हो गया। तब रानी १८ वर्ष की थी। रानी पर विपदा का पहाड़ टूट पड़ा। फिर भी उसने हिम्मत से काम लिया। वह राज-काज स्वयं देखने लगी।

चारों ओर अंग्रेज चालाकी से काम ले रहे थे। कई राजा अंग्रेजों के भी भक्त थे। कुछ लोग अंग्रेजों के अत्याचारों से दुःखी भी थे।

रानी अंग्रेजों के विरुद्ध पूरी तैयारी करके लड़ना चाहती थी। वह चाहती थी कि पूरे उत्तर भारत में एक साथ युद्ध छिड़े। वह जानती थी कि अंग्रेजों को एकता के बल पर ही हराया जा सकता है। वह तात्या टोपे के द्वारा जनता और राजाओं के बारे में जानकारी लेने में लग गई।

एक नवाब था अली बहादुर। उसका एक कर्मचारी पीर अली था। वे दोनों अंग्रेजों से मिले हुए थे। वे रानी का पूरा भेद अंग्रेजों तक पहुंचाते रहते थे। वे अंग्रेजों से अपना स्वार्थ सिद्ध करते थे।

अंग्रेजों ने लक्ष्मीबाई की दामोदर राव को गोद लेने की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। साथ ही झांसी को कम्पनी के राज्य में मिलाने की घोषणा भी कर दी।

रानी ने यह सुनते ही दरबार में घोषणा की— "मैं अंग्रेजों को झांसी कभी नहीं दूंगी।"

अंग्रेजों ने कम्पनी की ओर से उसे पांच हजार रुपए मासिक पेंशन देने का प्रस्ताव रखा। रानी ने सोच-विचार कर पेंशन लेना मंजूर कर लिया, ताकि वक्त आने पर अंग्रेजों को हराया जा सके।

दामोदर राव का यज्ञोपवीत (जनेऊ) होना था। इस अवसर पर अनेक रिश्तेदार पहुंचे। रानी ने उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ भड़काया। वे मर-मिटने को तैयार हो गए।

अंग्रेज सेना के कुछ हिंदुस्तानी सिपाही अंग्रेजों से नाराज थे। वे सब्र न कर सके। हर जगह एक साथ आक्रमण करने की तिथि तक वे न रुक सके। वे पहले ही विद्रोह कर बैठे। उन्होंने अंग्रेजों को मारा-काटा। क्रांति की आग जगह-जगह भड़क उठी। दुर्भाग्य यही था कि वह आग अलग-अलग फैली थी, एक साथ नहीं।

रानी ने सावधानी बरती। झांसी में असमय क्रांति नहीं होने दी। उसने चतुराई से झांसी की रक्षा के नाम पर अंग्रेजों से एक सेना रखने की अनुमति ले ली। लेकिन झांसी के सिपाहियों में विद्रोह हो गया। उनका नेता रिसालदार काले खां था। उसने अंग्रेज अफसर डनलप को गोली से उड़ा दिया। अंग्रेजों में भगदड़ मच गई।

रानी ने अंग्रेज महिलाओं और बच्चों को आश्रय दिया। काले खां अंग्रेज सैनिकों के रिहायशी इलाके में पहुंचा। वह और उसके कुछ सिपाही अंग्रेज सैनिकों को लूटना चाहते थे। पर रानी का कहा मान, काले खां ने अपना इरादा बदल दिया। रानी ने काले खां को पुरस्कार में अपना हीरे का कंठा दे दिया।

अब महल और किले का प्रबंध रानी के हाथ में था। अंग्रेजों को भ्रम में रखने के लिए रानी ने एक चाल खेली। रानी ने जबलपुर में अंग्रेज कमिश्नर को संदेश भेजा कि वह झांसी का प्रबंध अंग्रेजों की ओर से कर रही है। अंग्रेजों ने उसकी बात मान ली। इस खबर ने लोगों के मन में खुशी की लहर दौड़ा दी। किले पर भगवा झंडा फहरा दिया गया। प्रधानमंत्री, सेनापति, न्यायाधीश, गुप्तचर आदि पदों पर नियुक्तियां की गईं। युद्ध के लिए गोला-बारूद बनने लगा।

तभी सदाशिव राव ने झांसी पर हमला बोल दिया। रानी ने उसे झांसी के किले में कैद कर लिया।

विंध्य खंड के बानपूर और शाहखंड रियासतों के राजा स्वाधीनता प्रिय थे। रानी ने उन दोनों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए पत्र लिखे। वे तैयार हो गए।

उन्हीं दिनों डाकू सागरसिंह ने आतंक मचा रखा था। रानी ने उसके दमन के लिए सिपाहियों के साथ खुदाबख्श को भेजा। सागरसिंह खुदाबख्श को घायल कर, बच निकला। तब रानी घुड़सवार दस्ते के साथ स्वयं वहां पहुंची। रानी ने बुद्धि कौशल से सागरसिंह को पकड़ लिया। पर रानी ने उसे दंड नहीं दिया। डाकू सागरसिंह को अपनी गलती समझ में आ गई। रानी ने उसे अपनी सेना में भरती कर लिया।

एक दिन झांसी पर नत्थे खां ने आक्रमण कर दिया। वह ओरछा का मंत्री था। उसका कहना था कि कभी झांसी ओरछा का ही हिस्सा थी। रानी ने नत्थे खां को मार भगाया। उसका काफी नुकसान हुआ।

सन् १८५८ में जनरल ह्यू रोज सेना सहित इंग्लैंड से भारत आया। वह बहुत तेज-तर्रार था। दिल्ली, कानपुर, बिठूर पर उसका अधिकार हो गया। तात्या टोपे ने कालपी के निकट अंग्रेजों को बढ़ने से रोकने के लिए युद्ध किया। रानी भी साथ में थी। लेकिन अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रहे योद्धाओं में तालमेल की कमी रह गई। अतः अंग्रेजों का विजय अभियान चलता रहा।

प्रधान अंग्रेज सेनापति का विचार था कि उत्तरी हिस्से पर काबू पाने के लिए झांसी को कुचलना जरूरी है। ह्यू रोज ने झांसी की ओर कदम बढ़ाए। झांसी पर चढ़ाई करने से पहले उसने रानी को आत्मसमर्पण के लिए संदेश भेजा। रानी कैसे मंजूर करती? उसने युद्ध करने का निश्चय किया। झांसी और राज्य के बड़े-बड़े नगरों और गांवों में तैयारी शुरू हो गई।

युद्ध के निश्चय ने पूरी झांसी में उत्साह भर दिया था। एक-एक सैनिक मर-मिटने को तैयार था। उधर देशद्रोही भी अपने काम में लगे थे। नवाब अलीबहादुर और पीरअली अंग्रेजों की सहायता कर रहे थे।

रानी ने मदद के लिए रावसाहब और तात्या टोपे के पास कालपी संदेश भेजा।

रोज ने झांसी पर आक्रमण कर दिया।

खुदाबख्श और गुलाम गौस खां जैसे तोपचियों ने अंग्रेज सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए।

लेकिन पीरअली अंग्रेजों की सहायता कर रहा था। पर ऊपर से वह रानी का वफादार बना फिरता

था। पठान बरहमुद्दीन ने यह बात रानी को बताई। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

पीरअली ने किले के ओरछा फाटक पर तैनात दुल्हाजू को लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया।

उधर युद्ध चल रहा था। रानी ने तात्या टोपे को मदद के लिए कालपी संदेश भेजा। तात्या तुरंत सेना लेकर रवाना हो गया। पर रास्ते में ही अंग्रेज सेना की एक टुकड़ी ने उस पर धावा बोल दिया। भीषण युद्ध हुआ। अंग्रेजों ने तात्या टोपे को आगे बढ़ने से रोक दिया। तात्या टोपे कालपी लौट गया।

इधर रानी जी-जान से लड़ रही थी। लेकिन एक दिन दुल्हाजू ने किले का ओरछा फाटक खोल दिया। अंग्रेज सैनिक किले में घुस गए।

रानी ने हिम्मत से काम लिया। वह अंग्रेज सैनिकों को गाजर-मूली की तरह काटती हुई किले से बाहर निकल गई। अब उसके साथ गिने-चुने ही सैनिक बचे थे। रानी ने झांसी की धरती को प्रणाम किया और अपने काफिले के साथ कालपी की ओर बढ़ चली।

यह समाचार जनरल रोज को मिला। उसने लेफ्टिनेंट जनरल बोकर को रानी का पीछा करने के लिए कहा। बोकर ने रानी का पीछा किया।

रानी पहजू नदी के किनारे पहुंची। वह थक कर चूर हो गई थी। उसने थोड़ा आराम करने की सोची। वह घोड़े से उतर गई। अभी उसने नदी के पानी से हाथ-मुंह धोया ही था कि अंग्रेज सैनिकों ने हल्ला बोल दिया। रानी ने उनका डटकर मुकाबला किया। वह घायल हो गई। किसी तरह बचती हुई वह कालपी पहुंच गई।

कालपी की सेना अव्यवस्थित थी। रानी ने सेना को सुगठित करना चाहा। पर वह सफल नहीं हुई। वहां के राजा राव साहब ने भी उसकी कोई मदद नहीं की। इसी बीच अंग्रेजों ने कालपी पर आक्रमण कर दिया।

रानी ज्यादा दिन तक अंग्रेजों का सामना न कर सकी। वह किसी तरह बचकर ग्वालियर पहुंची। ग्वालियर पर अंग्रेजों का राज था। रानी ने अपनी बहादुरी और चतुराई से ग्वालियर को जीत लिया।

इस जीत ने पेशवा सैनिकों को अहंकारी बना दिया। रानी यह देख, उदास हो गई। वह बाबा गंगादास की कुटिया पर गई। सारा हाल बाबा को कह सुनाया। बाबा गंगाधर ने रानी को समझाया-बुझाया। रानी का मन शांत हो गया।

एक दिन अंग्रेजों ने ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया। जनरल रोज ने चालाकी से काम लिया। उसने घोषणा की कि वह ग्वालियर के राजा की ओर से लड़ रहा है। ग्वालियर के कुछ सैनिक उसके बहकावे में आ गए। उन्होंने रानी का साथ छोड़ दिया।

फिर भी रानी उदास नहीं हुई। वह मुट्ठी भर सैनिकों के साथ अंग्रेजों से भिड़ गई। उसके दोनों हाथों में बिजली की तरह चमकती और लपलपाती तलवारें थीं। उसने भयानक मार-काट मचाई।

लेकिन होनी को कौन टाल सकता था ? रानी का घोड़ा एक नाले में गिर गया। घोड़े ने वहीं दम तोड़ दिया। तभी अंग्रेज सैनिकों ने भी उस पर चारों तरफ से हल्ला बोल दिया। इक्कीस साल की वह रानी वीरता से लड़ती हुई शहीद हो गई।

रानी लक्ष्मीबाई की वीरता की कहानी आज भी घर-घर में कही और सुनी जाती है।

(प्रस्तुत : डा. दिविक रमेश)

छड़ी से दवा

— विभावरी सिन्हा

रामपुर राज्य में वीरभद्र नाम का राजा राज्य करता था। वह बहुत ही दयालु व पराक्रमी था। प्रजा उसे पिता के समान समझती थी और उससे बहुत प्रसन्न रहती थी। राजा के कोई पुत्र नहीं था, सिर्फ एक पुत्री थी। वह अत्यंत वृद्ध हो चला था।

उसका मंत्री सुमेरसिंह बहुत चालाक और नीच था। अपने मंत्री पिता की मृत्यु के बाद, उसने नया-नया ही मंत्री पद संभाला था। पर राजा बनने का लालच उसके अंदर समा चुका था। वह चाहता था कि किसी प्रकार राजा का विश्वास जीत ले और राजा खुश होकर उसका ब्याह राजकुमारी के साथ कर दे।

एक दिन अचानक राजा बीमार पड़ गया। सुमेरसिंह मन ही मन बहुत खुश हुआ। वह चाहता था कि वीरभद्र कभी ठीक न हो। तभी उसका राजा बनने का सपना पूरा हो सकेगा। दिखावे के लिए उसने बहुत से वैद्य बुलाए। पर राजा ठीक न हुआ।

दरअसल मंत्री राजा की दिखावटी सेवा में तो दिन रात जुटा रहता, लेकिन दवा के बदले वैसा ही नकली घोल बनाकर अपने हाथ से राजा को पिलाता। राजा या राजकुमारी को जरा भी शक न होता।

राजा भी यह सोचता था कि मंत्री सुमेरसिंह उससे प्यार करता है। इधर वीरभद्र धीरे-धीरे सूखकर कांटा हो चला था। उसकी स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी। राजा की हालत देखकर राजकुमारी हमेशा रोती रहती। इधर प्रजा भी बहुत दुखी थी, मंत्री को छोड़कर सभी चाहते थे कि राजा ठीक हो जाए।

एक दिन दूसरे राज्य से एक प्रसिद्ध वैद्य अपने पुत्र के साथ वहां आया। राजा की बीमारी की चर्चा सुनी तो राजा को देखने राजमहल में गया। राजा की बीमारी उसे समझ में आ गई। उसने बहुत-सी जड़ी-बूटियों से एक असरदार दवा तैयार की। उसे एक महीने तक दिन में तीन बार पिलाने को कहा।

उसे विश्वास था कि इस दवा से राजा बिलकुल ही ठीक हो जाएगा। दिन बीतते चले गए, पर राजा की हालत में कोई सुधार न हुआ। यह देखकर वैद्य को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा— 'ऐसा लगता है जैसे राजा ने दवा पी ही न हो, पर मंत्री तो खुद राजा को दवा पिलाता है। लेकिन कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है।' वैद्य यह सब सोच ही रहा था कि उसके पुत्र शांतिदत्त ने पिता को चिंतित देख, वजह पूछी। इस पर वैद्य ने पुत्र को अपने मन की बात बता दी।

शांतिदत्त को जब यह मालूम हुआ कि मंत्री राजा के साथ-साथ साए की तरह लगा रहता है तथा किसी और को दवा पिलाने नहीं देता, तब वह सब कुछ समझ गया।

अगले दिन उसने एक छड़ी ली और जादूगर की वेश-भूषा में राजमहल पहुंचा । मंत्री ने उसे देखकर गुस्से में कहा— ''राजा जी की बीमारी में जादूगर का क्या काम ? जाओ, हमारा समय बर्बाद मत करो । हम वैसे ही परेशान है ।''

शांतिदत्त ने कहा— ''बस,मुझे एक मौका दें । मैं राजा जी को ठीक करने की कोशिश करूंगा ।'' मंत्री ने फिर भी मना करना चाहा, पर तभी राजकुमारी आ गई । उसने आग्रह करके शांतिदत्त को रोक लिया ।

उधर राजा को देखने के पश्चात शांतिदत्त ने मंत्री व राजकुमारी से कहा— ''मैं अपनी जादुई छड़ी से वैद्य द्वारा दी गई दवा का स्पर्श करूंगा । इस बीच यहां उपस्थित सभी की आंखें बंद रहनी चाहिए, वरना महाराज के साथ-साथ वहां उपस्थित सभी व्यक्तियों की जान खतरे में पड़ सकती है । हां, दवा मंत्री जी ही पिलाएंगे ।''

मंत्री तो यही चाहता ही था । वह नकली दवा शांतिदत्त के हाथ में देता था और फिर सभी आंखें बंद कर लेते । शांतिदत्त अपनी जादुई छड़ी से दवा को स्पर्श करता मंत्र पढ़ता । फिर पांच मिनट बाद मंत्री द्वारा दवा पिला दी जाती ।

कुछ दिनों में ही राजा की हालत में आश्चर्य जनक रूप से सुधार होने लगा । एक दिन राजा बिलकुल ठीक हो गया । मंत्री की समझ में नहीं आ रहा था कि कहां गड़बड़ हुई है । वह भीतर ही भीतर दुखी हो गया । उसने सोचा, जरूर यह जादूगर की जादुई छड़ी का कमाल है । उसने शांतिदत्त को एक अलग कक्ष में बुलाया । कहा— ''सचमुच,तुम कमाल के जादूगर हो । यह तुम्हारी जादुई छड़ी भी कमाल की है । इसे मुझे दे दो । मैं मुंहमांगी कीमत दूंगा ।''

इस पर शांतिदत्त बोला— ''लेकिन यह तो मामूली छड़ी है । राजा की बीमारी तो दवा के असर से ठीक हुई है । मैं यह छड़ी नहीं दे सकता । यह सुनते ही मंत्री गुस्से में भर उठा । बोला— ''मूर्ख जादूगर ! तुझे क्या पता कि दवा नकली थी । मैं तो असली दवा फेंककर नकली दवा राजा को देता था । भला इस नकली दवा से राजा कैसे ठीक हो सकते थे । तेरी इस जादुई छड़ी ने ही मेरी योजना विफल की। मैं तेरी इस छड़ी को तोड़कर फेंक दूंगा और तुझे भी नहीं छोड़ूंगा ।''

जैसे ही मंत्री ने शांतिदत्त को मारने के लिए तलवार निकाली, पीछे से छिपकर खड़े सैनिकों ने उसे पकड़ लिया । राजा भी आ गया और कहा— ''नीच, विश्वासघाती ! आज मुझे मालूम हुआ कि मेरी बीमारी क्यों ठीक नहीं होती थी । मैंने तुम्हारी असलियत खुद तुम्हारे मुंह से सुन ली है ।''

सिपाही मंत्री को पकड़कर ले गए । राजा ने शांतिदत्त की पीठ थपथपाई । कहा— ''तुमने अपनी जादुई छड़ी के कारण मुझे बचा लिया, वरना यह नीच तो मेरी जान लेकर रहता । बोलो, क्या इनाम मांगते हो ?''

शांतिदत्त ने सिर झुकाकर कहा— ''महाराज, जान तो आपने मेरी बचाई है । रही जादुई छड़ी की बात, तो

यह बिलकुल मामूली छड़ी है । इसे तो मैंने दिखावे के लिए रखा था । दवा की प्याली से स्पर्श करते वक्त जब लोगों की आंखें बंद होती थी, मैं नकली दवा फेंककर प्याली में असली दवा डाल देता था । इसी कारण आप ठीक हो सके । मैं कोई जादूगर नहीं हूं । वैद्य का बेटा शांतिदत्त हूं । आप दीर्घायु और स्वस्थ रहें, यही मेरा इनाम है ।'' सुनकर राजा हंस पड़ा । उसे अपनी सबसे बड़ी समस्या का समाधान मिल गया था ।

कहीं घूम आओ

इत्ती-सी बात पर
इत्ता-सा गुस्सा !

क्या हुआ जो मम्मी ने
तड़के ही जगा दिया,
उठते ही पापा ने
कमरे से भगा दिया।

चाचा ने चिज्जी में
मांग लिया हिस्सा !

क्या हुआ जो दादी ने
खा लिया तुम्हारा आम,
दादा ने नहीं किया
कोई भी तुम्हारा काम।

बड़ बोली दीदी ने
कह दिया कुछ वैसा !

अच्छा, अब पौली तुम
कहीं घूम आओ,
डौली के संग वहीं
आइसक्रीम खाओ।

प्यार भरी बातों से
खत्म करो किस्सा !

—ज्योति प्रकाश सक्सेना

फागुन

हंसता-मुसकाता फागुन,
मस्ती में गाता फागुन।

सन-सन सन-सन चले हवा,
यहां-वहां जाता फागुन।

खेतों में सरसों के साथ,
हंस-हंस बतियाता फागुन।

चुपके-चुपके उपवन में,
कलियां चटकाता फागुन।

कोयल, मोर, पपीहा के
मन को हर्षाता फागुन।

रंगों भरे समंदर से,
चेहरे रंग जाता फागुन।

जीवन में उल्लास जगा,
खुशियां भी लाता फागुन।

—पूरन सरमा

सुंदर बगिया

आंगन में पौधे ही पौधे
मैंने कई लगाए हैं।

चम्पा, जूही, मोगरा, बेला
एक बड़े, गमले में केला,
लगता है नाना प्रकार के
यहां गुलाबों का है मेला।
दादा यह सब देख-देखकर
फूले नहीं समाए हैं।

उधर चमेली बढ़ती जाती
ऊपर-ऊपर चढ़ती जाती,
फूल खिले रहते हैं, जिनकी
गंध दूर तक उड़ती जाती।
मम्मी ने भी, पापा ने भी
खुश हो, गाने गए हैं।

फूल लगे कुछ बारहमासी
बेलें और पत्तियां खासी,
मिट्टी, पानी देता रहता
जड़ें न रहतीं भूखी, प्यासी।
इस सुंदर बगिया से मैंने
लाभ अनेकों पाए हैं।

—राजा चौरसिया

परियों के देश

चलो, बनाकर वेश चलें।
परियों वाले देश चलें।

जहां नहीं महंगाई हो
सस्ती खूब मिठाई हो,
लड्डू लिए गणेश चलें।
परियों वाले देश चलें।

जहां खिलौने सस्ते हों
हल्के-फुल्के बस्ते हों,
रंग-बिरंगे वेश चलें।
परियों वाले देश चलें।

जहां न मारा-मारी हो
सबकी सबसे यारी हो,
खुशियों के संदेश चलें।
परियों वाले देश चलें।

जहां आदमी सच्चे हों
प्यारे-प्यारे बच्चे हों,
घुंघराले-से केश चलें।
परियों वाले देश चलें।

— सुनील जोगी

आधा-आधा

— प्रेमलता धामट

भक्त प्रह्लाद हिरण्यकशिपु के चार पुत्रों में सबसे छोटा था । अतः हिरण्यकशिपु का उससे विशेष स्नेह था । एक दिन उसने प्रह्लाद से पूछा— "बेटा, तुमने अपने गुरु से क्या सीखा ?"

प्रह्लाद ने कहा — "भगवान श्रीहरि का भजन-कीर्तन करना चाहिए ।"

यह सुन, क्रोध के मारे हिरण्यकशिपु का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया । उसने प्रह्लाद को भूमि पर गिरा दिया । अपने सेवकों को आज्ञा दी— "इसे तुरंत बाहर ले जाओ और मार डालो ।"

हिरण्यकशिपु की आज्ञा पाकर दैत्यों ने प्रह्लाद को मारने के लिए बड़े-बड़े मतवाले हाथियों से कुचलवाया । विषधर सांपों से डसवाया । पहाड़ से गिराया । समुद्र में डुबोया । अग्नि में जलाया । लेकिन फिर भी प्रह्लाद का बाल बांका नहीं हुआ ।

प्रह्लाद अब दूसरे बालकों को भी भगवान की महिमा समझाता । उन्हें भी भक्ति के लिए प्रेरित करने लगा । यह देखकर हिरण्यकशिपु अत्यंत व्याकुल हो गया । अंत में उसने स्वयं ही प्रह्लाद का वध करने का निश्चय किया ।

एक दिन हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद से कहा— "मूर्ख, तू बड़ा उद्दंड हो गया है । दूसरे बालकों को विष्णु की भक्ति सिखलाकर बिगाड़ना चाहता है । आज मैं तुझे यमराज के घर भेज दूंगा ।" कहकर वह तलवार लेकर सिंहासन से नीचे उतरा ।

तभी एक चमत्कार हुआ । पास में लगा खंभा भयंकर गर्जना के साथ फट गया । सभी आश्चर्य चकित रह गए । खंभे से एक विचित्र-सी आकृति निकल रही थी । उसका आधा शरीर मनुष्य का और आधा शेर का था ।

हिरण्यकशिपु समझ गया कि यह विष्णु का कोई मायावी रूप है । इसलिए वह गदा उठाकर आकृति पर टूट पड़ा । काफी देर तक दोनों में युद्ध होता रहा । अंत में उस विचित्र रूप वाले भगवान नृसिंह ने हिरण्यकशिपु को पकड़ लिया । उसे जांघों पर लिटाया और नाखूनों से उसका पेट फाड़ डाला ।

उस समय विष्णु बहुत क्रोधित थे । उनके क्रोध से सारे देवता डर गए । लोक-लोकांतर कांपने लगे । ब्रह्मा जी ने ही उन्हें शांत करने की कोशिश की । ब्रह्माजी ने नृसिंह से कहा— "हे प्रभो ! आप

सबके जीवनदाता हैं । आप मेरे भी पिता हैं । यह पापी हिरण्यकशिपु मुझ से वर पाकर बहुत अत्याचारी हो गया था । आपने अपनी सूझ-बूझ से इसका वध कर डाला । आप महान हैं ।''

यह सुन, भगवान नृसिंह का गुस्सा और बढ़ गया । वह गरजकर बोले— ''आप दैत्यों को ऐसे वर न दिया करें । मैं अपने भक्तों पर अत्याचार नहीं देख सकता ।''

यह सुनते ही दूसरे सभी देवता सहम गए । पर किसी तरह भी नृसिंह का क्रोध समाप्त तो करना ही था । उन्होंने आपस में विचार किया ।

फिर वे भगवान शिव के पास गए । उनसे नृसिंह को शांत करने की प्रार्थना की । शिवजी ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा— ''लगता है, आज विष्णु जी को अपनी शक्ति का कुछ अभिमान हो गया है । लेकिन आप चिंता न करें। मैं अवश्य ही उनको शांत कर दूंगा ।''

शिवजी की वाणी से देवताओं को कुछ ढाढ़स बंधा । वे वहां से चले गए । उनके जाने के बाद शिवजी ने वीरभद्र को बुलाया । वीरभद्र उसी क्षण उपस्थित हो गया । शिवजी को प्रणाम कर बोला— ''क्या आज्ञा है स्वामी ?''

—''भगवान नृसिंह के क्रोध के कारण जग में बड़ी अस्थिरता हो रही है । इसलिए तुम उनके पास जाओ । वहां उन्हें प्रेम से समझाओ । यदि वह नहीं मानें, तो विकराल रूप धारण कर जैसे भी हो, उन्हें शांत करो और यहां ले आओ ।''

''जो आज्ञा स्वामी ।''— कहकर वीरभद्र तुरंत हिरण्यकशिपु के दरबार में पहुंचा । वह नृसिंह को प्रणाम कर बोला— ''प्रभो, आपके क्रोध करने का समय तो कल्प के अंत में होता है । आपने अत्याचारी हिरण्यकशिपु को भी यमलोक पहुंचा दिया है । अब आप क्रोध त्याग कर, अपने सौम्य रूप में आने की कृपा करें ।'' लेकिन नृसिंह ने वीरभद्र को भी टका-सा जवाब दिया— ''तू जहां से आया है, वहीं चला जा ।''

अब वीरभद्र समझ गया कि सीधी अंगुली से घी नहीं निकलेगा । उसने महादेव का स्मरण किया । तभी वीरभद्र का शरीर आधा मृग का और आधा शरभ पक्षी का बन गया । नृसिंह चकित थे । उनका भ्रम टूटा । तब तक शरभावतार वीरभद्र ने नृसिंह को अपनी पूंछ में लपेट लिया । फिर वह आकाश में उड़ चला । नृसिंह ने खूब जोर लगाया । पर वह शरभ के चंगुल से निकल न सके ।

कुछ देर में शरभ ने नृसिंह को भगवान शंकर के सामने खड़ा कर दिया । शिवजी को देखते ही नृसिंह का सारा क्रोध छूमंतर हो गया । वह सब समझ गए । हाथ जोड़कर बोले— ''हे भोलेनाथ, इस शरभ ने मुझे मार-मारकर लहूलुहान कर दिया ।''

''– यहआधा मृग और आधा शरभ, मेरी ही शक्तियों का अवतार वीरभद्र था ।

''आपके क्रोध से संसार में उथल-पुथल मच गई थी । अतः मैंने ही वीरभद्र को वरदान देकर आपके पास भेजा था ।''

''हां, भोलेनाथ ! मैं भी क्रोध में आपा खो बैठा था । आपने मुझे न संभाला होता, तो न जाने क्या हो जाता ?'' कहते हुए नृसिंह ने शिवजी को नमस्कार किया और बैकुंठ लोक को चल दिए । ●

कुबेर का विमान

ऋषि पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा की पांच संतान थीं। देववर्णिनी से कुबेर, कैकसी से दशानन, कुंभकरण, शूर्पणखा और विभीषण...

कुबेर बड़े थे। एक दिन...
पिता जी, मैं बड़ा हो गया हूं। मेरे योग्य काम बताइए।
ब्रह्मा तुम्हारे परदादा हैं। उन्हें प्रसन्न कर उन्हीं से पूछो।

कुबेर ने तपस्या कर ब्रह्माजी को प्रसन्न कर लिया...
मुझे मेरे योग्य काम बताइए परदादा जी!
तुम देवताओं के कोषाध्यक्ष बनो। आने-जाने के लिए, पुष्पक विमान देता हूं...
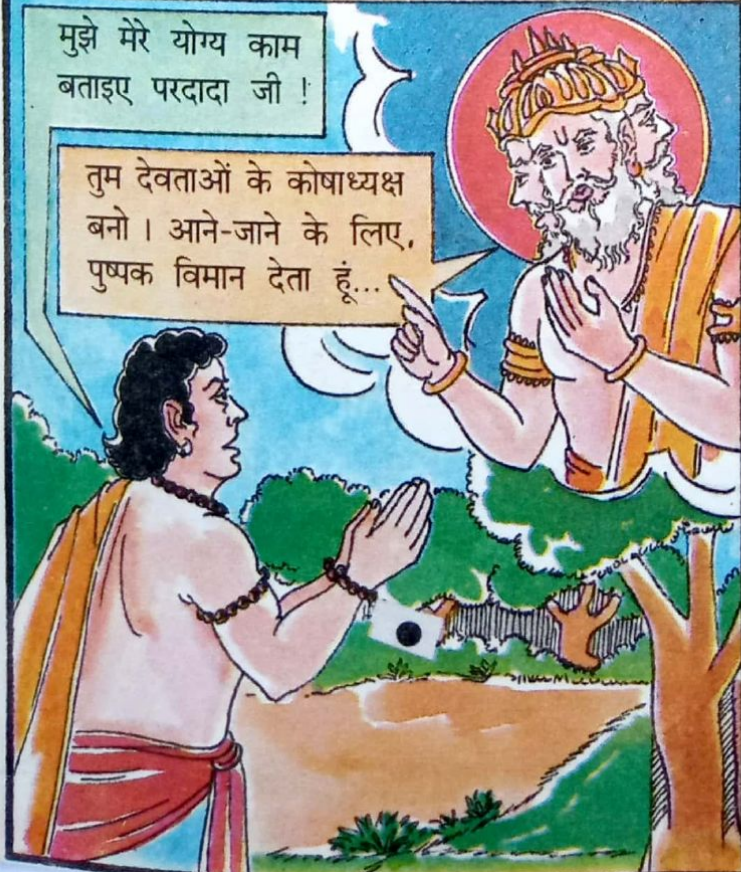
कुबेर वन से आश्रम में आए...
काम तो मिल गया, किंतु रहूं कहां? कोई उचित स्थान बताइए...
लंका का कोई राजा नहीं। वहीं राज करो।
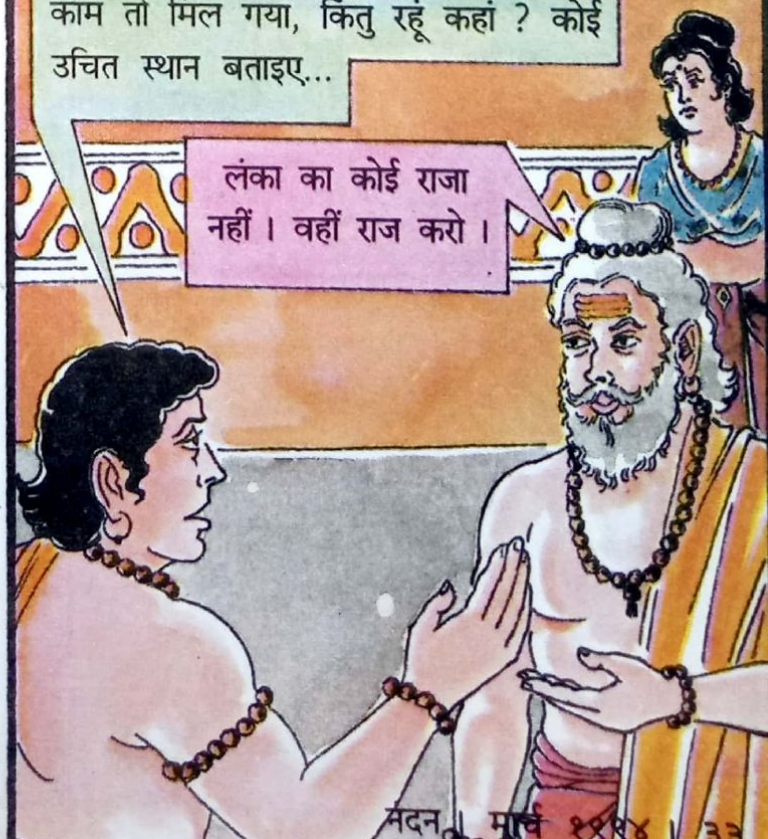
कुबेर ने लंका जीत ली । समय-समय पर वह पुष्पक में बैठ पिता से मिलने आते थे । एक बार...

दशानन ने मां की इच्छा जान वन में घोर तपस्या की । ब्रह्मा जी आए । वर मांगने को कहा...

दशानन ने प्रहस्त को कुबेर के पास भेजा...
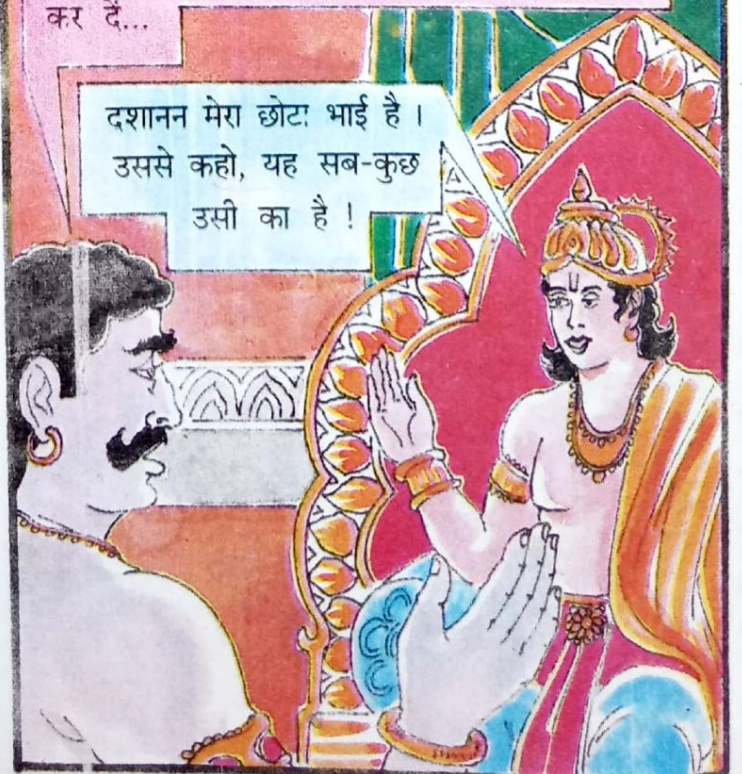
प्रहस्त लौट गया, तो...
महाराज, आपने इतनी सहजता से अपना राज्य...
वर पाकर दशानन अमर-अजेय बन गया है। हम उससे जीत नहीं पाएंगे—

लंका पर दशानन का अधिकार हो गया। कुबेर पुष्पक विमान ले कैलास पर रहने चले गए। किंतु...
कुबेर पुष्पक के साथ सारी धन सम्पदा ले गया... मगर क्यों ?
चिंता न करो मां ! कुबेर को धूल में मिलाकर छोड़ूंगा।

दशानन ने कैलास को घेर कुबेर को बंदी बना लिया...
तुम मेरे भाई हो। अतः जीवित छोड़ रहा हूं। पुष्पक ले जा रहा हूं।
मेरा शाप है, यह पुष्पक तेरी मृत्यु का कारण बनेगा...

लंका में लौटते ही...
जाओ, देवता, नाग, यक्ष, गंधर्वों को मारो।
राक्षसराज दशानन की !
जय !

दशानन के अत्याचार से तीनों लोकों में हा-हाकार मच गया
इसने सारी सृष्टि को रुला दिया । यह दशानन नहीं, रावण है ।
हम क्या करें ?
यह ब्रह्माजी के कारण हुआ । उपाय भी वही बताएंगे ।
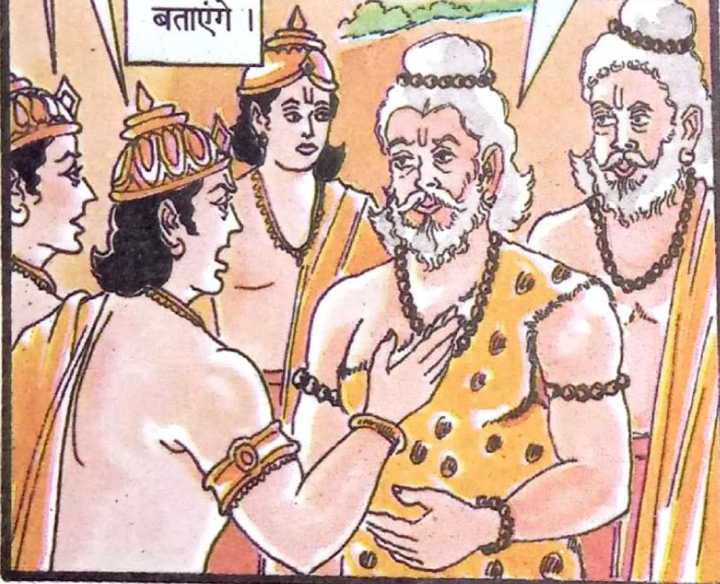
देवता ब्रह्माजी के पास गए । रक्षा की प्रार्थना की...
उसने मनुष्य को निर्बल समझा । उसके हाथों न मारे जाने का वर नहीं मांगा । इसलिए...
ब्रह्माजी की प्रेरणा से भगवान विष्णु ने...
अभय देवगण ! मैं शीघ्र ही मनुष्य रूप में अवतार ले रावण का वध करूंगा ।

कुबेर का शाप सत्य हुआ । रावण ने सीता-हरण में पुष्पक का उपयोग किया । वही उसकी मृत्यु का कारण बना...
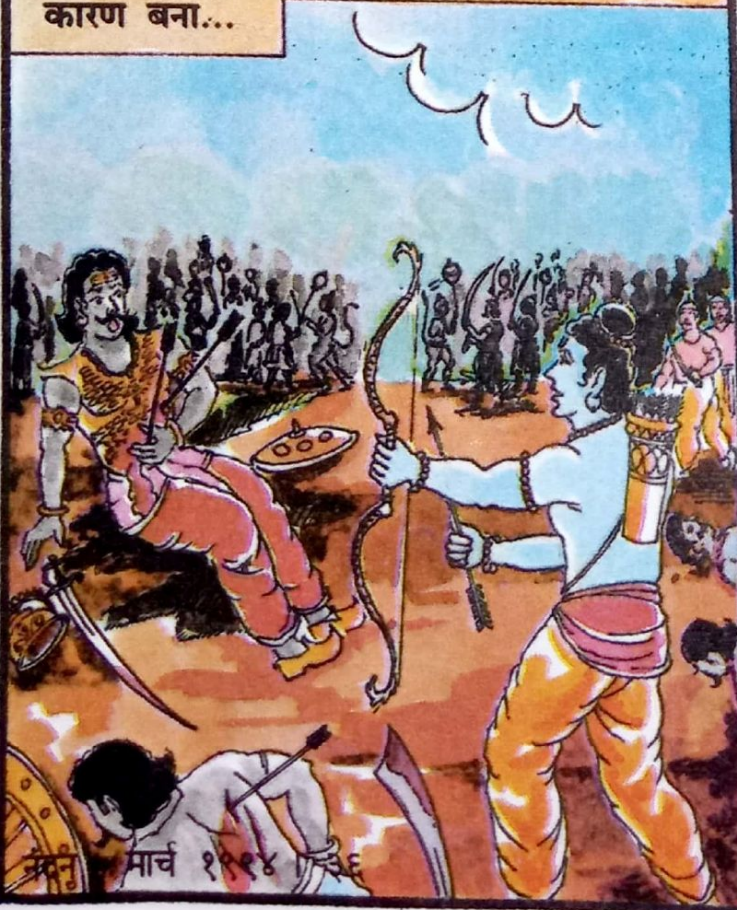
अयोध्या लौट भगवान राम ने पुष्पक कुबेर को लौटा दिया, किंतु...
मेरी ओर से पुष्पक आपको ही भेंट...
नहीं कुबेर ! यह भेंट स्वीकार नहीं । पुष्पक जहां चाहे, चला जाए ।...
कुलदीप
इसके बाद पुष्पक विमान कहां गया होगा ?

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : ३० अंक : ५, मार्च'९४, नई दिल्ली; फाल्गुन-चैत्र, शक सं. १९१५

पुराने कपड़े पहनो, नई किताबें खरीदो

नई दिल्ली। पुस्तकें और रंग-बिरंगी पुस्तकें — उनमें खोए हुए हजारों बच्चे – पुस्तकें खरीदने की उमंग लिए। बच्चे ही क्यों युवक, बड़े-बूढ़ों की भारी भीड़। विश्व पुस्तक मेले को देखकर कौन कहेगा कि लोग पढ़ते नहीं, पुस्तकें खरीदते नहीं।

इतना बड़ा पुस्तक मेला भारत में पहले कभी नहीं हुआ। इतनी ज्यादा किताबें कभी देखने में नहीं आईं। हिंदी की किताबें और बच्चों की किताबें खूब बिकीं। पहली बार दुनिया के तैंतीस देशों की बाल पुस्तकों की प्रदर्शनी लगी। बोलोग्ना बाल पुस्तक मेले से चुनी हुई रंग-बिरंगी २०६४ पुस्तकें इस मेले में सजी हुई थीं।

पुस्तक मेला विशेष रूप से अफ्रीका पर केंद्रित था। अफ्रीका के साहित्य, संस्कृति और भाषा के बारे में लोगों को अच्छी जानकारी मिली। दक्षिणी अफ्रीका के कवि ब्रूटस और कांगो के लेखक हेनरी लापेज मेले में खास मेहमान थे।

मेले का उद्घाटन मानव संसाधन एवं विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि बचपन में नए कोट या कमीज के मुकाबले वह पुस्तक लेना पसंद करते थे। उन्होंने इस बात पर चिंता प्रकट की कि बच्चों की पाठ्य-पुस्तकें लगातार महंगी होती जा रही हैं।

शिक्षा उपमंत्री कु. शैलजा ने देश के हर स्कूल में पाठक क्लब बनाने पर जोर दिया जिससे कि बालकों को अच्छी किताबें पढ़ने को मिल सकें। उन्होंने प्रो. बैरियर को पहला नेशनल बुक ट्रस्ट पुरस्कार भी दिया। प्रो. बैरियर अमरीका में भारतीय पुस्तकों का प्रचार-प्रसार करते हैं।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एझीकोड और निदेशक अरविंद कुमार ने भी अपने विचार प्रकट किए।

बोलो-बोलो तोता बोला

कोवेंट्री। लकवा हो जाने के बाद कई मरीजों की आवाज खराब हो जाती है। वे ठीक से बोल नहीं पाते। इन मरीजों की बोली ठीक करने के लिए तोतों की मदद ली जा रही है। इन तोतों को बोलना सिखाया जाता है। ये इन मरीजों से बातचीत करते हैं। मरीज इनके साथ बहुत खुश भी रहते हैं।

सेहत योजना

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम ने प्राथमिक विद्यालयों में सेहत योजना शुरू की है। यह पांच वर्ष तक चलेगी। इसे पांच सौ विद्यालयों में लागू किया जाएगा। इसमें बच्चों को पौष्टिक आहार, सुरक्षा, शरीर को स्वस्थ रखना तथा वातावरण को साफ-सुथरा बनाना शामिल है।

अशोक चक्र से सम्मानित

नई दिल्ली। कर्नल नीलकांतन नायर को वीरता और साहस के लिए मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। नगा विद्रोहियों से लड़ते हुए कर्नल नायर ने अपने साथियों की जान बचाई, मगर वह खुद मारे गए। राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा से कर्नल नायर की पत्नी मंजू नायर ने यह सम्मान प्राप्त किया।

'ओशीन प्रतियोगिता' में छब्बीस बच्चे पुरस्कृत

नई दिल्ली। इंडियन काउंसिल फार जापानी कल्चर की ओर से 'ओशीन निबंध प्रतियोगिता' की गई। प्रतियोगिता में छब्बीस बच्चों को पुरस्कार दिए गए। निबंध प्रतियोगिता का आयोजन प्रसिद्ध जापानी टी. वी. धारावाहिक 'ओशीन' पर किया गया था।

समारोह के मुख्य अतिथि 'नंदन' के सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती थे। पुरस्कार वितरण जापानी कल्चरल सेंटर की निदेशिका सुश्री यूरी कोदारे ने किया। मुख्य अतिथि श्री भारती ने कहा—"यह प्रसन्नता की बात है कि जापान जैसा प्रगतिशील देश हमारे देश के प्रति गहरी रुचि रखते हुए इस प्रकार की प्रतियोगिताएं करता है। यहां न केवल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं, बल्कि ऐसे अवसर भी उपलब्ध हों जिससे इस देश के बच्चे रंग-बिरंगे जापान की संस्कृति और जीवन को निकट से जाकर देख सकें।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

नंदन बाल समाचार

परिश्रमी को छोड़कर देव किसी और की सहायता नहीं करते । —ऋग्वेद

छोटी-सी शुरुआत वंदेमातरम्

राजधानी क्षेत्र की नई सरकार ने कहा है कि सभी स्कूलों में वंदेमातरम् गीत गाया जाएगा, फिर पढ़ाई शुरू होगी । इस निर्णय की सभी ओर प्रशंसा हो रही है । शिक्षा को सही दिशा देने के लिए यह छोटा-सा कदम है ।

स्वाधीन भारत में शिक्षा पर ठीक से ध्यान नहीं दिया गया । हमारे बच्चे अमरीका की ओर देखते हैं । पराई भाषा और संस्कृति के पीछे दौड़ते हैं । रही-सही कसर दूरदर्शन ने पूरी कर दी है । आखिर देश के बच्चे,खास तौर से शहरी बच्चे किस बात में भारतीय हैं ? शिक्षा की शुरुआत राष्ट्र-प्रेम से न हो, तो कैसे हो ? पूरे देश के स्कूलों में वंदेमातरम् अपनाया जाना चाहिए ।

हंसी के डाक्टर

बम्बई । श्री के. एन. पटेल को हंसी का डाक्टर कहते हैं । वह चालीस साल से हंसी का संदेश दे रहे हैं । उनका कहना है कि खूब हंसो और सारी बीमारियों को दूर भगाओ । हंसी, भगवान का मनुष्य को सबसे अच्छा उपहार है । विदेशों में आजकल अस्पतालों में जोकर रखे जाते हैं । वे रोगियों को हंसाने का काम करते हैं । हंसने से रोगियों को दर्द कम महसूस होता है । वे ठीक भी हो जाते हैं ।

नाड़ी जांचने की मशीन

तोक्यो । जापान में आयुर्वेद काफी लोकप्रिय होता जा रहा है । वहां आयुर्वेदिक ढंग से नाड़ी जांचने की एक मशीन भी बनाई है । जापानी भाषा में 'सुश्रुत संहिता' और 'चरक संहिता' का भी अनुवाद किया गया है ।

विमान-पानी-हवा में

बंगलूर । यहां अंतर्राष्ट्रीय विमान प्रदर्शनी हुई । एक अनोखा विमान जमीन और पानी दोनों पर उतर सकता है । वहां से उड़ भी सकता है । इसे ईंधन भी कम चाहिए ।

जमीन ऊपर उठी

सहारनपुर । शिवालिक पर्वत तलहटी में बहती है गाज बरसाती नदी । इस नदी के बीच की जमीन बाइस फुट ऊपर तक चढ़ गई है । जमीन का ऊपर उठना सितम्बर में शुरू हुआ था । पास के गांव वालों का कहना है कि उन्हें रात में तरह-तरह की आवाजें सुनाई देती हैं ।

अंतरिक्ष में लम्बाई बढ़ी

होस्टन । कनाडा की पहली अंतरिक्ष यात्री हैं— राबर्टा बोंडर । उनका कहना है कि अंतरिक्ष में रहकर उनकी लम्बाई बढ़ गई । यही नहीं उनकी नेत्र-ज्योति बढ़ गई । वह यह देखकर हैरान रह गईं कि वह बिना चश्मे के पढ़ सकती हैं ।

फिर भी जिंदा

शिकागो । इक्यानवे वर्ष की विक्टोरिया मोरयन के पैर बर्फ में जमे हुए थे । उसके पूरे शरीर पर बर्फ की एक इंच मोटी तह जम गई थी । जब पुलिस के लोग इस वृद्धा का हाल पता करने गए तो उन्होंने उसके ऊपर बर्फ जमी देखी । फिर भी वह जिंदा थी । पुलिस ने उसे अस्पताल पहुंचाया ।

मंगल पर लहलहाएंगे खेत

लंदन । 'अगली सदी में मंगल ग्रह पर हरे-भरे खेत लहलहाएंगे और रसभरे फल लटके होंगे ।'— यह कहना है जाने-माने लेखक श्री आर्थर सी. क्लार्क का । क्लार्क छह सौ से अधिक पुस्तकें लिख चुके हैं । उनका कहना है कि चांद या मंगल पर रहने में मनुष्य को कोई समस्या नहीं होनी चाहिए । बाद में मनुष्य बृहस्पति के चंद्रमाओं की तरफ भी बढ़ सकता है । लेकिन क्लार्क इस बात से भी चिंतित है कि कहीं इन जगहों पर जाकर भी मनुष्य प्रदूषण न फैला दे । क्लार्क ने १९४० में मनुष्य के चांद पर पहुंचने की बात कही थी । क्लार्क इस बात से बहुत खुश हैं कि अंतरिक्ष के बारे में जो कुछ उन्होंने सोचा या लिखा, वह उनके जीवन में ही सम्भव हो गया ।

बच्चे कल की दुनिया

कलकत्ता । "हम बड़ों को अपने से यह सवाल करना चाहिए कि हमारा कोई भी काम बच्चों की क्या मदद कर रहा है?" यह कहना है मदर टैरेसा का । उन्होंने दुनिया भर के नेताओं से कहा है कि वे बच्चों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दें । उनकी शिक्षा, पोषण और सुरक्षा पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए । हमें दुनिया के हर बच्चे के विकास में अहम भूमिका निभानी चाहिए ।

कुत्ते के नाम जायदाद

पीसा । नाम है गुंथर गोर्थ । यह कोई आदमी नहीं बल्कि एक कुत्ता है । जर्मनी की एक अमीर महिला ने अपनी सारी जायदाद इस कुत्ते के नाम कर दी थी । गुंथर नरम गद्दों पर सोता है । दो नौकर उसकी देख-भाल करते हैं । घूमने के लिए एक बड़ी कार है और नहाने के लिए बड़ा -सा तालाब । यही नहीं वह कई खेल प्रतियोगिताओं की अध्यक्षता करता है । इनाम देता है ।

'रामधन की बेटी' यूनेस्को में

यूनेस्को के बैंकाक कार्यालय ने भारत से आमंत्रित बच्चों की पांडुलिपियों से 'रामधन की बेटी' को चुना है। अंग्रेजी में पुस्तक छप गई है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद इसका प्रकाशन हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में शीघ्र करेगी। पुस्तक के लेखक श्री चंद्र दत्त इंदु हैं। यह सचित्र पुस्तक भारत के अलावा एशिया के देशों में भेजी जाएगी।

पुस्तक में बताया गया है कि बहुत-से परिवारों में लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। वे लड़कियों को पराया धन मानते हैं। यह ठीक नहीं, लड़का-लड़की दोनों ही मां-बाप की संतान हैं, इसलिए दोनों को समान प्यार, सुविधाएं और आगे बढ़ने के अवसर देने चाहिएं।

नई बत्ती

कारमेल। इस्राइल में कार चालकों की सुविधा के लिए नई तरह की बत्ती बनाई गई है। अक्सर रात में कार बैक करते हुए कार का किसी चीज से टकराने का खतरा रहता है। जब तक कार की दूरी किसी वस्तु से रहती है, तब तक हरी बत्ती जलती है। जब टकराने का खतरा होता है तो यह बत्ती लाल हो जाती है और चालक को पता चल जाता है।

आखिर पकड़ा गया

नई दिल्ली। वह अखबारों में शोक सभाओं की सूचना पढ़ता। फिर वहां जा पहुंचता। एक ओर तो लोग दुःख में डूबे होते। वह चुपके-से बाहर उतारे गए जूतों में से कीमती जूते बटोरता और गायब हो जाता। इन जूतों को बाजार में बेचकर काफी पैसे बना लेता। ऐसी घटनाओं की खबर जब पुलिस को मिली तो उसने चोर विजय कुमार को जा पकड़ा। चोर के पास इकत्तीस जोड़े जूते बरामद हुए।

आस्ट्रिया सब से आगे

विएना। अपने पर्यावरण को साफ-सुथरा रखने में आस्ट्रिया विश्व में सबसे आगे है। वहां कई उद्योग अपनी आय का चालीस प्रतिशत तक पर्यावरण की देखभाल पर खर्च करते हैं। आस्ट्रिया में सरकार के मुकाबले निजी क्षेत्र पर्यावरण सुरक्षा पर अधिक ध्यान देते हैं।

बंदूक नहीं झाड़ू

लुधियाना। सिपाहियों के हाथों में बंदूक नहीं झाड़ू। पंजाब पुलिस के आठ सौ जवानों ने शहर में सफाई अभियान चलाया। सिपाहियों ने घर-घर जाकर बढ़ई और राजगीर का काम भी किया। बिजली के कनेक्शन ठीक किए। गलियों में पुलिस वालों को झाड़ू लगाते देखना एक अनुभव था।

नजरें कमजोर

तोक्यो। जापान के स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट में बताया गया है कि ज्यादातर जापानी बच्चों की नजर कमजोर है। यह कमजोरी अधिक वीडियो खेल खेलने, टी. वी. देखने और गृह कार्य में डूबे रहने के कारण हुई है।

चलनेवाली ह्वेल

वाशिंगटन। वैज्ञानिकों को ऐसी ह्वेल का कंकाल मिला है जिसके चार पैर होते थे और मुंह में दांत। इसकी लम्बी पूंछ भी होती थी। यह कंकाल पांच करोड़ वर्ष पुराना है। यह ह्वेल पानी और जमीन दोनों पर रहती थी।

नींद नहीं

पेइचिंग। वांग सुइन ५३ वर्ष की है। सोलह साल से वह सोई नहीं है। उसे तेज बुखार हुआ था। तब से उसकी नींद जाती रही। वैसे वांग बिलकुल स्वस्थ है।

नन्हे समाचार

□ कानपुर में विश्व रामायण केंद्र स्थापित किया जा रहा है।

□ इंग्लैंड का डेरेक ग्लास कारों का शौकीन है। हाल में उसने क्रेन की मदद से एक कार अपने मकान की छत पर खड़ी कर दी। इस पर सिटी कौंसिल से डेरेक का झगड़ा चल रहा है। वह कहता है—मैं अपनी छत से कार कभी नहीं हटाऊंगा।

□ तारो एक कुत्ता है। उसने एक लड़की को काट लिया। अदालत ने तारो को मृत्युदंड दिया। तारो के मालिक ने अपील की। अब न्यूजर्सी (अमरीका) की गवर्नर ने उसकी सजा माफ कर दी है। लेकिन साथ ही आदेश दिया है—तारो को न्यूजर्सी राज्य की सीमा से बाहर निकाल दिया जाए।

□ बर्दवान में प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. मेघनाद साहा के नाम पर एक आधुनिक ताराघर का निर्माण किया गया है।

□ इटली में छोटा-सा एक पहाड़ी गांव है। वहां की गलियां बहुत संकरी हैं। गांव के मेयर ने आदेश दिया है—पुलिस वाले गधों पर बैठकर गांव का चक्कर लगाया करें। उनका कहना है—गधा बहुत सीधा-सादा जीव है। सब बेकार ही उसका मजाक उड़ाते हैं।

□ जर्मनी के हेंस म्यूलर नाविक थे। आजकल बोतल में बंद जहाजों के माडल बनाया करते हैं। अब तक सोलह हजार से अधिक बोतलबंद जहाज बना चुके हैं।

□ थ्रिसूर में गजमेला हुआ। हजारों दर्शकों के सामने सौ से अधिक सजे-धजे हाथियों की परेड निकाली गई।

□ साहिबाबाद की एक कोठी के बाग में तीन फुट की मूली पैदा हुई है। यह एक रिकार्ड है—ऐसा कहा जा रहा है।

सचित्र समाचार

विश्व क्रिकेट में एक सुनहरा नाम : कपिलदेव

↑ मेरठ में बच्चों ने अलग-अलग प्रदेशों के लोकनृत्य प्रस्तुत किए।

← पुरानी दिल्ली स्टेशन पर नरेंद्र सिंह ने दांतों से इंजन खींचकर सबको चकित कर दिया। वह पंजाब पुलिस में सिपाही हैं।
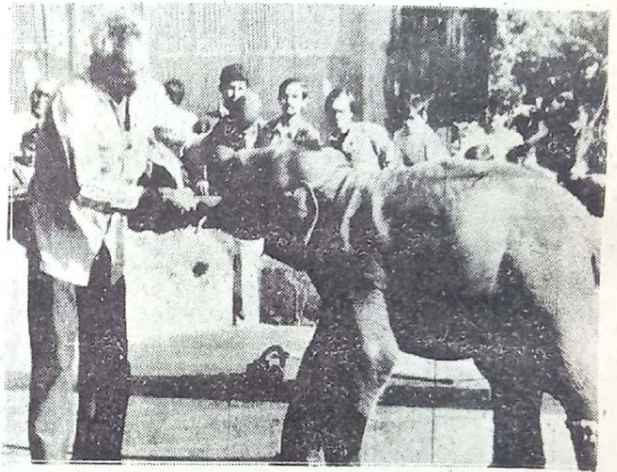
हाथियों के झुंड से यह नन्हा शिशु बिछड गया। अब उसे कलकत्ता चिड़ियाघर में बोतल से दूध पिलाकर पाला जा रहा है। ↑

→ यह कोई जीता जागता आदमी नहीं मिट्टी की एक मूर्ति है। कलकत्ता में टेराकोटा की मूर्तियों की प्रदर्शनी लगी।

नन्हे सैम को जन्म से दिखाई नहीं देता था। लंदन के एक अखबार ने अपने पाठकों से लाखों रुपए इकट्ठे किए। सैम का अमरीका में इलाज हुआ। **अब वह देख सकता है।** ↑

↑ बालकन जी बारी ने कविता प्रतियोगिता की। **प्रतियोगिता में पुरस्कृत बच्चे।**

तीन पर दो
महेश और परेश अपने दादा से मिलने गांव गए। दादा गांव के मुखिया थे।
मेरे पोते... शहर में पढ़ते हैं। पहली बार आए हैं।
मगर... गलत मौके पर...
सावधान रहें, तो...
दोनों ने दादा से गांववालों की बात का मतलब जानना चाहा, मगर दादा हंसकर टाल गए। रात को...
आज वे फिर आए थे। दस हजार मांग रहे थे... अब कहां से...
बच्चों को वापस भेज दो। कुछ उल्टा-सीधा न हो जाए!
अगले दिन...
दादा हमसे कुछ छिपा रहे हैं। कौन हो सकते हैं वे लोग?
दादी भी नहीं बतातीं।... कुछ लोग आ रहे हैं... इनसे पूछें... शायद
मगर बच्चों के कुछ पूछने से पहले ही...
यहां क्यों बैठे हो? वे आ जाएं और उठाकर ले जाएं, तो... भागो यहां से...
सीधे घर जाओ!

बच्चे घर पहुंचे, तो...
पूरे दस हजार... मैं चली... सब्जी जल रही है।
हां, अरे तुम दोनों कहां थे?
दादा रुपए ले, जैसे ही बाहर निकले...
दादा उन ही को रुपए देने...
आओ, पीछा करें।... देखें तो, किसको देते हैं!
आगे दादा, पीछे लुकते-छिपते महेश और परेश
पता नहीं, दादा कहां जा रहे हैं?
शायद उस खंडहर तक... दूसरे रास्ते से हम वहां पहले ही पहुंच जाएं... तो...
दूसरे रास्ते से दौड़ते-भागते वे दोनों...
ठक... ठक....
यहां तो कोई नहीं।
धीरे बोलो। दादा वह आ रहे... यह आवाज... शायद कोई उस ओर...
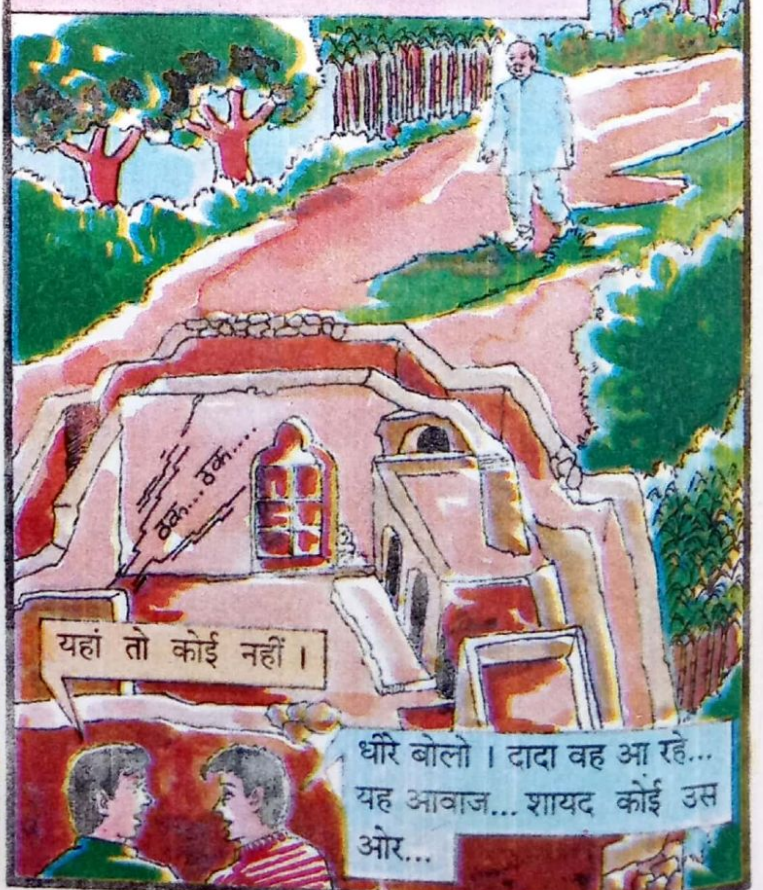
परेश ने देखा...
बूढ़ा आ रहा है रुपए लेकर... सावधान...
क्या करें ?
लुटेरे !

कुछ सोच उसने महेश का हाथ पकड़ा और...
टूटी दीवारों पर चढ़कर आगे की ऊंची दीवार तक पहुंचो।... खस्ता हाल है। चबूतरे पर गिरा देंगे...
वाह ! वे लोग ठीक उसी के नीचे खड़े हैं...

परेश ने ऊपर जाकर नीचे झांका ही था कि...
आह ! महेश शायद नीचे गिर गया... मगर... मैं...
कौन है अंदर ? देखो .. उड़ा दो... जल्दी...
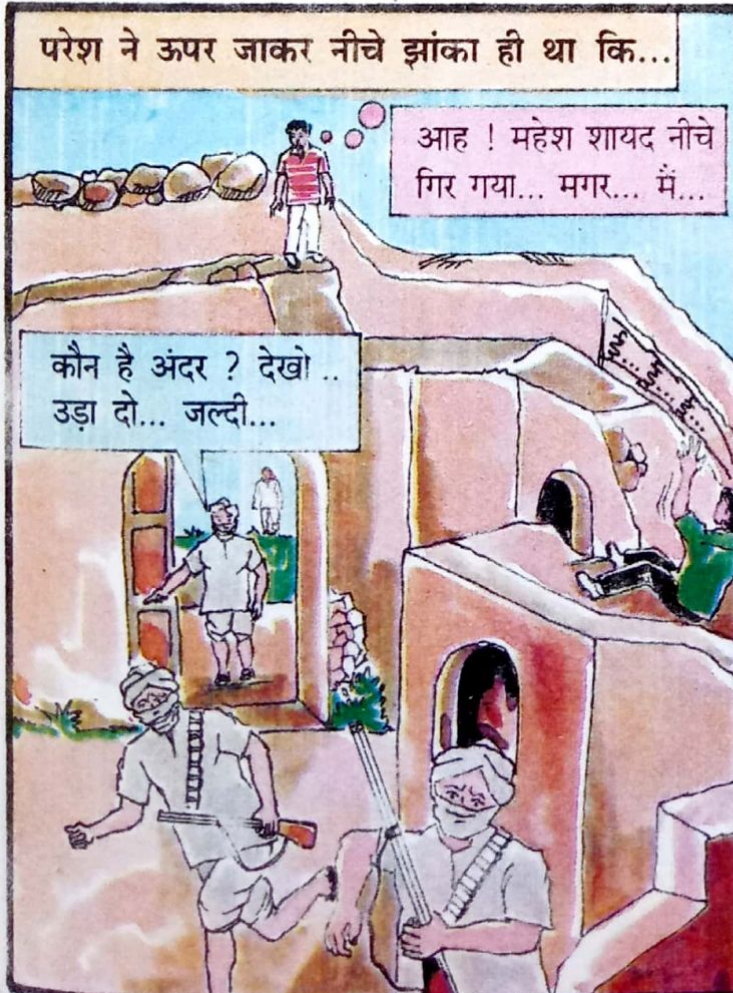
बंदूकधारी खंडहर में घुसे। तभी...
अरे, मर गया रे...
यह चीख सरदार की...
उफ... दौड़ो... शायद हमला...

उनके बाहर जाते ही परेश महेश के पास पहुंचा। सहारा देकर उसे...
यहीं लेट जाओ। दादा को रोक मैं पुलिस को...
आह !
इन्हें तुरंत अस्पताल...
मगर कैसे ?... बंदूकें अंदर... फिर...
बंदूकें अंदर छिपा एक ने घायल सरदार को कंधे पर डाल लिया। चबूतरे से उतरने वाले ही थे कि...
गांव के लोग !! उफ ! ये कैसे ?
बंदूकें तो अंदर हैं...
मारो !
मारो !!
मारो !
मारो !
तब तक बहुत देर हो चुकी थी। पुलिस भी आ गई थी...
इन दोनों को तुरंत अस्पताल...
और अस्पताल में...
शाबास बच्चो ! तुमने बताया— अन्याय से डरना नहीं, उसका सामना करना चाहिए !
मगर आप सब को पता कैसे लगा कि हम....
मैंने परेश को दीवार गिराते देख लिया था। बस, उल्टे पैरों गांव पहुंचा और....
कुलदीप
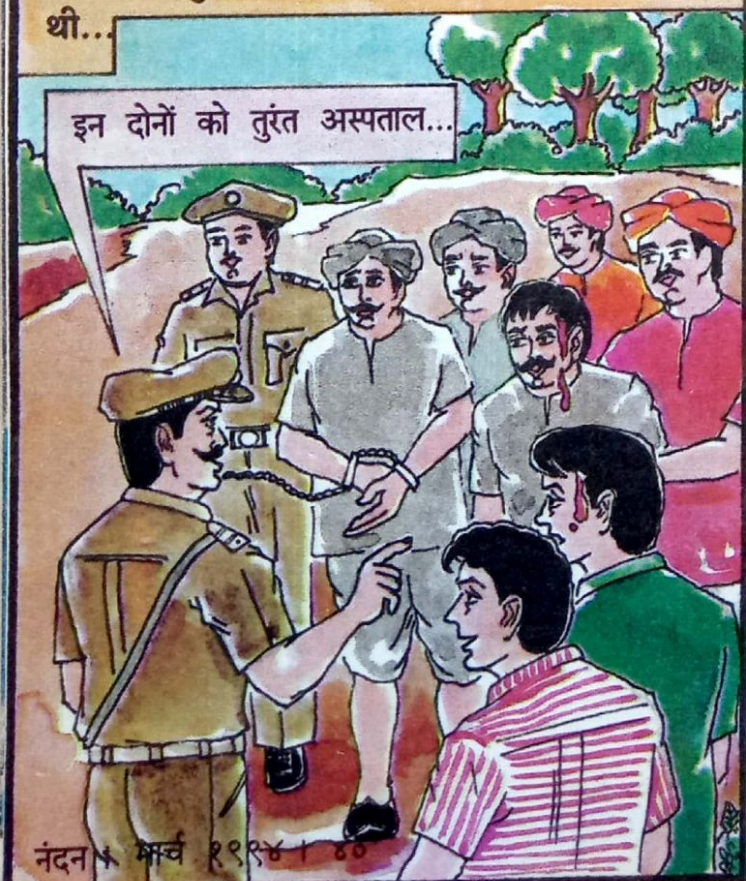
आंख न देखे

— श्रीनिवास वत्स

भीमपुर नगर के व्यापारी नौकाओं में अपना सामान लादकर समुद्र पार देशों में बेचने जाते थे। वे मसाले, कपड़ा, दवाइयां वगैरह ले जाते और विदेशों में इन्हें बेचकर काफी धन कमाते। वापसी में वहां से सोना-चांदी और हीरे-जवाहरात ले आते थे।

एक बार वे समुद्री मार्ग से गुजर रहे थे। अचानक जोर का तूफान आया। नौकाएं डोलने लगीं। व्यापारी सहायता के लिए चिल्लाए। पर समुद्र में कौन उनकी सहायता को आता? नौकाएं डूब गईं। व्यापारी लकड़ी के तख्तों के सहारे जैसे-तैसे किनारे पहुंच गए।

किनारे पर उन्हें पता चला कि उनका साथी गोकुलदास नहीं है। उन्हें चिंता हुई कि कहीं वह समुद्र में न भटक गया हो। दूर-दूर तक उन्हें गोकुलदास की नाव दिखाई नहीं दी। काफी इंतजार के बाद भी गोकुलदास किनारे पर नहीं पहुंचा। व्यापारियों को विश्वास हो गया कि वह समुद्र में डूब गया है या उसे किसी समुद्री जीव ने निगल लिया है।

वे यह दुःखद समाचार सुनाने गोकुलदास के घर की ओर चल पड़े।

गोकुलदास के परिवार में पत्नी, एक पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्र का नाम था— आलोक। पुत्री का नाम था— तृषा।

व्यापारियों ने गोकुलदास की मृत्यु की सूचना दी, तो उसकी पत्नी रोने लगी। आलोक ने अपनी मां को समझाया।

आलोक ने व्यापारियों से पूछा— "आप अब समुद्र-यात्रा पर कब जाएंगे?"

व्यापारियों ने बताया— "हमारी नौकाएं डूब गई हैं। अब हम नई नावें तैयार करेंगे, तब माल भरकर बेचने जाएंगे।"

आलोक ने कहा— "इस बार मैं भी आपके साथ चलूंगा।"

एक व्यापारी बोला— "बेटा! तुम अभी छोटे हो। बड़े होकर हमारे साथ चलना।" आलोक की मां ने भी उसे समझाया, पर आलोक नहीं माना।

आलोक ने एक नौका खरीदी। उसमें सामान भर लिया। फिर एक दिन व्यापारियों के साथ वह भी नौका में सवार होकर चल पड़ा।

दिन भर चलने के बाद वे उसी जगह पहुंच गए, जहां तूफान में गोकुलदास उनसे बिछुड़ा था। एक बूढ़े व्यापारी ने आलोक से कहा— "बेटा! यहीं उस दिन तुम्हारे पिता हम से बिछुड़े थे।"

यह सुन, आलोक अपने पिता की याद में खो गया। उसे लगा— जैसे पिता उसे आवाज दे रहे हैं।

वह कुछ पल लहरों को एकटक देखता रहा। तभी उसे ध्यान आया, लहरें पूर्व से पश्चिम की ओर बह रही हैं। अवश्य ही तूफान वाले दिन पिता जी की नौका बहते-बहते पश्चिम की ओर गई होगी।

उसने बूढ़े व्यापारी से कहा— "बाबा ! मैं अपनी नाव पश्चिम दिशा की ओर ले जाऊंगा।"

दूसरे व्यापारियों ने आलोक को समझाया— "बेटा ! उधर दूर-दूर तक कोई देश नहीं है। सभी व्यापारी दक्षिणी देशों में सामान बेचने जाते हैं।"

पर आलोक तो अपने पिता को ढूंढ़ने निकला था। उसने अपनी नाव पश्चिम की ओर मोड़ दी।

तीन दिन और तीन रात चलने के बाद आलोक को आकाश में कुछ पक्षी उड़ते नजर आए। वह समझ गया कि पास में कोई टापू है।

उसमें नया उत्साह भर गया। वह तेजी से चप्पू चलाने लगा। कुछ देर बाद टापू साफ दिखाई देने लगा। दोपहर से पहले ही वह किनारे पर पहुंच गया।

आलोक ने देखा, तट पर लकड़ी का एक तख्ता पड़ा था। उसने तुरंत पहचान लिया। 'यह तो पिता जी की नौका का तख्ता है। फिर तो पिता जी अवश्य ही इस टापू पर आए होंगे।'— उसने सोचा।

आलोक नौका को एक बड़े पत्थर से बांधकर टापू पर घूमने लगा। उसे एक पेड़ पर कबूतर और बाज बैठे दिखाई पड़े। वह हैरान रह गया क्योंकि उसने सुन रखा था कि बाज कबूतरों को खा जाता है। पर यहां कबूतर बाज के सामने निडर होकर घूम रहे हैं। उसे कुछ समझ में न आया।

वह एक बड़ी शिला पर चढ़कर देखने लगा। शायद कहीं पिता दिखाई दे जाएं। तभी उसकी नजर हिरण के छोटे-छोटे बच्चों पर पड़ी। वे कुलाचें भरते उछल-कूद रहे थे। उनके साथ शेर के दो बच्चे भी खेल रहे थे।

आलोक को बहुत आश्चर्य हुआ। यह कैसा देश है ! बाज और कबूतर एक डाल पर बैठे हैं। हिरण और सिंह साथ-साथ खेल रहे हैं। वह शिला से उतरा, एक पगडंडी से होता हुआ, आगे बढ़ा। वह एक बाजार में पहुंचा। वहां दुकानें तरह-तरह के माल से भरी थीं, पर दुकान में कोई दुकानदार नहीं था।

आलोक एक मिठाई की दुकान पर पहुंचा। उसने दुकानदार को आवाज दी। पर कोई नहीं आया। अचानक उसे दो राहगीर आते नजर आए।

आलोक ने उनसे पूछा— "भाई ! क्या यहां कोई दुकानदार नहीं है ?"

आलोक को देखते ही वे समझ गए कि यह कोई परदेसी है। उन्होंने बताया— "यहां व्यापारी दुकानों पर खुद नहीं बैठते। वे सामान रखकर चले जाते हैं। वहां वे दूसरा काम करते हैं। खरीदार खुद ही सामान लेकर पैसे गुल्लक में डाल देते हैं।"

आलोक ने पूछा— "क्या यहां कोई चोर नहीं आता ?"

"चोर !"— दोनों राहगीर हंस पड़े। —"हम लोग चोरी को जानते तक नहीं। इस टापू पर कुल देवता की कृपा है। सब मिल-जुलकर रहते हैं। जो कुल देवता के आदेश का उल्लंघन करता है, वह अंधा हो जाता है।

"पिछले दिनों एक आदमी ने कुछ चीजें चुराने की कोशिश की थी। उसी दिन वह अंधा हो गया। आज तक वह देवता के मंदिर में बैठकर प्रायश्चित कर रहा
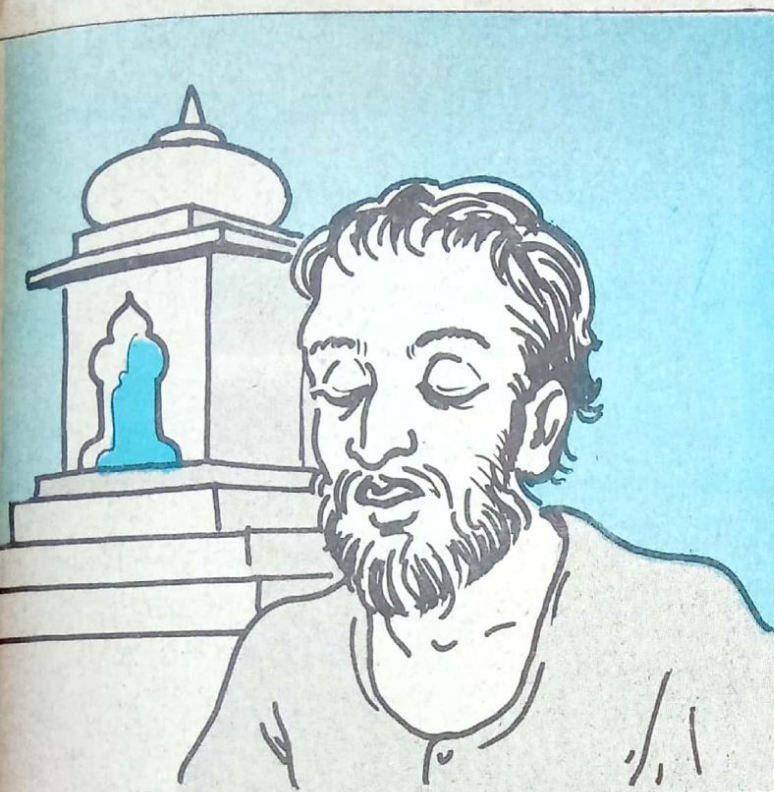
है।''— एक राहगीर ने बताया।

आलोक ने पूछा—''उसका शाप कब खत्म होगा ?''

''पहले वह चोरी किए माल की दो गुनी कीमत गुल्लक में डाले, फिर सब नागरिक इकट्ठे होकर मंदिर में कुल देवता की प्रार्थना करेंगे। पुजारी उस व्यक्ति को चरणामृत देगा। चरणामृत के सेवन से उसकी आंखों की रोशनी लौट आएगी।''— उन लोगों ने कहा।

आलोक बोला— ''मैं उस आदमी से मिलना चाहता हूं।''

दूसरा आदमी बोला— ''सामने पहाड़ी की तलहटी में एक मंदिर है। वह व्यक्ति तुम्हें वहीं मिलेगा।''

इतना कहकर राहगीर चले गए। आलोक को बहुत भूख लगी थी। उसने सोने की कुछ अशर्फियां गुल्लक में डालीं और कुछ मिठाइयां लेकर खाईं।

आलोक मिठाई खाकर मंदिर की ओर चल पड़ा। कुछ दूर जाकर उसे मंदिर की सीढ़ियां नजर आईं।

आलोक ने देखा— सीढ़ियों पर एक आदमी बैठा है। पास गया, तो वह चौंका क्योंकि वह उसके पिता गोकुलदास थे। उसने दौड़कर उनके चरण पकड़ लिए।

गोकुल ने बेटे की आवाज पहचान ली। उठकर गले से लगा लिया। दोनों की आंखों से आंसू छलक उठे।

गोकुलदास ने पूछा— ''बेटा ! तुम यहां कैसे पहुंचे ?''

आलोक ने पूरा हाल कह सुनाया।

गोकुल ने बताया— ''बेटा ! उस दिन तूफान बहुत तेज था। सब व्यापारी बिछुड़ गए। मेरी नाव समुद्र में डूब गई। सौभाग्य से मुझे नौका में रखा एक तख्ता हाथ लग गया। मैं उसी के सहारे किसी तरह इस टापू पर पहुंचा। ज्योंही मैं यहां आया, भूख-प्यास से मेरा बुरा हाल था। मैं घूमता हुआ एक दुकान पर पहुंचा। मेरे पास एक पैसा भी नहीं था। मैंने आव देखा न ताव, चुपचाप एक दुकान में घुस गया। भरपेट भोजन किया और बाहर निकल आया। शाम को मंदिर के पास से गुजरा, तो अचानक मेरी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। बस, तभी से मैं यहीं बैठा हूं। कुछ भले लोग मुझे सुबह-शाम खाना दे जाते हैं।''

आलोक बोला— ''पिता जी। अब आप चिंता न करें। शीघ्र ही आपकी आंखें ठीक हो जाएंगी।''

''वह कैसे ?''— गोकुल ने पूछा।

आलोक ने राहगीरों द्वारा बताई बातें उन्हें बता दीं। फिर उसने कुछ स्वर्ण मुद्राएं पिता गोकुलदास को दीं। उसने कहा— ''इन्हें उसी दुकान की गुल्लक में डाल दो, जहां आपने खाना खाया था।''

आलोक अपने पिता का हाथ थाम, उस दुकान तक ले गया। गोकुलदास ने पैसे गुल्लक में डाल दिए।

अगले दिन नगर वासियों ने मंदिर में एकत्र होकर कुल देवता से प्रार्थना की। पुजारी ने चरणामृत दिया।

चरणामृत लेते ही गोकुलदास की नेत्र ज्योति लौट आई। बाप-बेटे बहुत खुश थे।

अगले दिन बाप-बेटे नाव में सवार होकर भौमपुर की ओर चल पड़े। बेटे ने खोए पिता को पा लिया था। ●

नदी को मनाओ

— सुनीता मिश्र

हिमालय की तलहटी के मैदानी भाग में कंचनपुर राज्य था। वहां के राजा वीरभद्र प्रजा में बहुत प्रिय थे। राज्य से होकर एक पहाड़ी नदी गुजरती थी। नदी में साल में दो बार बाढ़ आती थी। बाकी समय वह सूख जाती थी। नदी के किनारे कई गांव बसे थे। नदी में बाढ़ आती, तो कई बार गांव के गांव बह जाते। जान और माल का बहुत नुकसान होता। उसके बाद नदी सूख जाती। फिर पानी की त्राहि-त्राहि होने लगती। गांव वाले दूर-दूर से पानी लाकर गुजारा करते थे। राजा इस समस्या से दुखी थे।

एक बार पूरा कंचनपुर सूखे की चपेट में आ गया। पेड़-पौधे सूखने लगे। फसलें चौपट हो गईं। पशु चारे और पानी के अभाव में मरने लगे। मंत्री ने सलाह दी कि पड़ोसी राज्य को कुछ धनराशि देकर बैलगाड़ी से बड़े बर्तनों में भरकर पानी यहां लाया जा सकता है। राजा को सलाह अच्छी लगी। धनराशि देकर पड़ोसी राज्य से पानी खरीदा गया। उसे लोगों में बांटा जाने लगा।

कुछ दिनों बाद तेज वर्षा हुई। नदी में बाढ़ आ गई। नदी के किनारे बसे कई गांव चौपट हो गए। भारी सम्पत्ति का नुकसान हुआ। एक दिन राजपुरोहित ने राजा को सलाह दी कि नदी को शांत करने के लिए पूजा-अर्चना करनी चाहिए। राजा ने नदी की विधि-विधान से पूजा की।

साल भर बाद वर्षा का मौसम फिर आया। बाढ़ ने अपना रंग दिखाया। कई गांव उसकी चपेट में आ गए।

इसी राज्य में वीरू नाम का एक किसान रहता था। एक दिन वह राजा के दरबार में पहुंचा। उसने राजा से कहा— ''महाराज, कृपया मुझे बताने का कष्ट करें कि नदी के सूख जाने पर हम कितने दिन सूखे की चपेट में रहते हैं।''

''लगभग चार माह।''– मंत्री ने कहा।

— ''और बाढ़ से कितने दिन तक परेशानी उठानी पड़ती है ?''— वीरू ने पूछा।

— ''यही कोई एक माह।''

''इसका हल क्या हो सकता है, हमें बताओ।''— राजा ने पूछा।

''हर वर्ष जिन चार महीनों में सूखा पड़ता है, उन दिनों राज्य की प्रजा नदी की खुदाई में जुट जाए। जितने पत्थर निकलें, उन्हें किनारे रखा जाए। मिट्टी दूर ले जाकर डाली जाए। इससे नदी गहरी हो जाएगी।''

''लेकिन बाढ़ तो फिर भी आएगी ही।''— एक दरबारी ने कहा।

— ''वही तो बता रहा हूं। नदी की खुदाई भी हो। उससे छोटी-छोटी नहरें निकाली जाएं। इससे बाढ़ का पानी नहरों से होकर आगे चला जाएगा। बरसात गुजर जाने पर जब नदी सूख जाएगी, तो भी नहरों में पानी भरा रहेगा। नहरों को पक्की बनाने के लिए पत्थरों का उपयोग होना चाहिए।''

''लेकिन राजकोष में इतना धन नहीं है, जो इतना बड़ा कार्य कराया जा सके।''— मंत्री ने कहा।

''सूखा पड़ने पर पड़ोसी राज्य को पानी खरीदने और बाद में बाढ़ आने के बाद ग्रामीणों को जो मदद स्वरूप धन दिया जाता था, वही धन उनकी मजदूरी समझ उन्हें इस कार्य के लिए दिया जाए।''— वीरू ने कहा।

राजा ने वीरू की योजना को पसंद किया।

राजा के आदेश पर नदी की खुदाई शुरू हो गई। खुदाई से निकले उन बड़े-बड़े पत्थरों को नदी किनारे लगा दिया गया। फिर नहर की खुदाई शुरू हुई और फिर उन्हीं पत्थरों से लगे हाथ पक्का भी किया जाता रहा। साथ ही नदी और नहर के किनारों पर प्रचुर मात्रा में फलदार वृक्ष लगाए गए।

नदी के गहरी हो जाने से तथा पानी नहरों में निकलने से बाढ़ की समस्या हल हो गई। अब नदी भी पूरी तरह सूखती न थी। नहरों में हमेशा पानी भरा रहता था। प्रजा खुशहाल रहने लगी। ●

कौन गिरा ?

— ईश्वरलाल प. वैश्य

अभी पौ फटी नहीं थी । सहसा रसोई में बर्तनों के धड़ाधड़ गिरने की आवाज हुई । रमा हड़बड़ा कर उठ बैठी । वह बोली—"हे राम ! घर में कोई शांति से सोने भी नहीं देता ।" तभी उसने सामने ही रसोई में अपने ससुर को देखा । वह बोले—"बहू ! अब ठीक से दिखाई नहीं देता । लगता है कि चश्मे के कांच बदलवाने पड़ेंगे । मैं स्टूल से टकरा कर गिर गया । बस,बर्तन गिर पड़े ।" रमा मुंह फुलाए चुपचाप बर्तनों को फिर से रखने लगी ।

उनका नाम था चिमनलाल । पर लोग स्नेह से उन्हें चिमन काका कहते थे । वह स्कूल में अध्यापक थे । दो साल पहले वह सेवा मुक्त हो गए थे । बहू की बात से चिमन काका के मन को ठेस लगी । पर अपनी आंखों के बारे में बेटे और बहू से कुछ न बोले । लेकिन जब बहुत असुविधा होने लगी,तो एक दिन वह बेटे मनोहर से बोले—"बेटा ! मुझे आंखों की फिर जांच करवानी होगी । आजकल मुझे बहुत कम दिखाई देता है । रोज शाम को कथा में जाते समय भी डर लगता है कि कहीं किसी से टकरा न जाऊं ।"

मनोहर कुछ बोलता कि उससे पहले ही उसकी पत्नी रमा बोल उठी—"पिता जी, आपको अधिकतर घर में ही रहना होता है । आप कुछ दिन कथा में न भी जाएं, तो क्या बिगड़ने वाला है !"

चिमन काका बहू की यह बात सुनकर अवाक् रह गए। तभी मनोहर बात को संभालते हुए बोला—"पिता जी ! इस रविवार को कालेज के लड़कों का एक दल दौलताबाद घूमने जा रहा है ।"

"अच्छा,तुम और रमा भी हो आओ ।" —चिमन काका बोले ।

"लेकिन इससे थोड़ा खर्च बढ़ जाएगा । आपके चश्मे का काम अगले महीने करवा दूंगा ।"—मनोहर बोला ।

"अच्छा ।"—कहते हुए वह अपने पलंग की ओर जाने लगे । तभी रमा बोल पड़ी—"इससे तो बेहतर है कि यदि आप धर्मादा अस्पताल में चले जाएं, तो काम मुफ़्त में ही हो जाएगा ।" चिमन काका चुपचाप अपने पलंग पर जाकर लेट गए ।
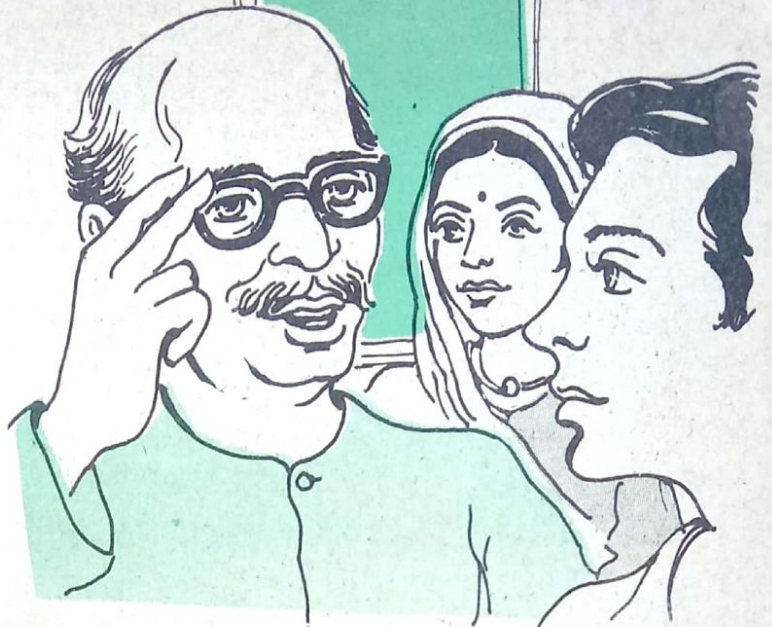
दौलताबाद का किला देखने के बाद छात्र और अध्यापक वहीं बैठे नाश्ता करते हुए बातें कर रहे थे । किले की टूटी-फूटी दीवारें देखकर छात्रों का मन खिन्न हो गया था । उनमें से एक छात्र बोला—"हम अपने वृद्ध मां-बाप की देखभाल करते हैं । इन ऐतिहासिक स्थलों की देख-भाल क्या नहीं हो सकती है ?" दूसरा छात्र बोला—"तुम ठीक कहते हो ।"

इधर चर्चा चल रही थी, उधर मनोहर के दिमाग में उथल-पुथल हो रही थी –'मेरे पिता ने मेरे लिए कितने कष्ट सहे । वह प्राथमिक विद्यालय में एक अध्यापक थे । मुश्किल से घर का खर्च चलता था । फिर भी उन्होंने मेरी पढ़ाई में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी । और मैंने उनकी मामूली चश्मे जैसी आवश्यकता पूरी करने में भी आनाकानी की ।'

यह सोचते ही मनोहर का मन भर उठा । उसे किले की टूटी-फूटी दीवारों में अपने पिता की देह दिखाई देने लगी । उसका मन घर लौटने को बेचैन था ।

घर पहुंचकर मनोहर ने घंटी का बटन दबाया । पिता ने द्वार खोला । मनोहर की नजर उनकी आंखों पर गई । वह चौंक पड़ा । उसने देखा—पिता की आंखों

पर बढ़िया फ्रेम का चश्मा चढ़ा है।

मनोहर ने सोचा—'पिता जी ने धर्मादा अस्पताल में जाकर आंखों की जांच कराई है। लेकिन कीमती चश्मा वहां इन्हें कौन देता ?' उससे रहा नहीं गया। उसने तुरंत पूछा—"पिता जी ! क्या आप धर्मादा अस्पताल गए थे ?"

"नहीं बेटा, यह चश्मा प्रकाश जोशी की जिद का परिणाम है। तुम्हें याद है—वह प्रकाश जोशी, जो तुम से एक कक्षा आगे था।"

यह सुन,मनोहर की आंखों के सामने प्रकाश जोशी का चेहरा घूमने लगा। वह बोला—"प्रकाश नाम का एक गरीब मेधावी छात्र था। पढ़ने में बहुतहोशियार था। इसलिए वह आपका प्रिय था। आप उसे घर बुलाकर निःशुल्क पढ़ाते थे।"

चिमन काका बोले—"हां, अब वह आंखों का बहुत बड़ा डाक्टर हो गया है। उसका यहां तबादला हुआ है। वह मुझसे मिलने आया था। बातों ही बातों में चश्मे की बात चली। वह मुझे अस्पताल ले गया। आंखों की जांच की। फिर उसने यह नया चश्मा बनवा दिया।

मैंने उसे कुछ रुपए देने चाहे, तो वह बोला— 'मास्टर जी, आप मुझे भी अपना मनोहर ही समझें। यही मेरे लिए बहुत है।' खैर छोड़ों इन बातों को। अपना हाल सुनाओ। तुम्हारी यात्रा कैसी रही ?"

"पिता जी, यात्रा ठीक ही रही। पर आप मुझे माफ कर दें। आपने मेरे लिए बहुत कष्ट उठाए। लेकिन मैं आपका चश्मा तक न बदलवा सका।"—कहता हुआ वह पिता के पैरों पर गिरकर रो पड़ा।

रमा भी अपने को संभाल न सकी। वह बोली—"पिता जी, सारा दोष मेरा है। मैंने उस दिन आपको काफी भला-बुरा कहा था।" कहते हुए उसकी आंखें भी सजल हो गईं।

चिमन काका बेटे और बहू की बातें सुन, खुशी से फूले न समाए। उन्हें लगा कि आज उनकी आंखों में रोशनी लौट आई है। ●

जल से जल

—साबिर हुसैन

एक राजा था पूरनसिंह। वह दयालु और न्याय-प्रिय था। प्रजा का ध्यान रखता था। उसकी प्रजा सुखी थी। एक बार राज्य में अकाल पड़ गया। कुएं और तालाब सूख गए। राज्य का प्रसिद्ध पुण्य सरोवर जिसके बारे में कहा जाता था कि इसमें स्नान करने से पाप धुल जाते हैं, कुष्ठ रोगी तक ठीक हो जाते हैं—वह सरोवर भी सूख गया था। बस, एक-दो कुओं में थोड़ा जल बचा था।

राज्य में वर्षा के लिए जगह-जगह हवन-पूजन हो रहे थे। किंतु वर्षा नहीं हो रही थी। ऐसा लगता था—जैसे इंद्र रूठ गए हों। पूरनसिंह बहुत दुखी और चिंतित था। लोग राज्य छोड़कर भाग रहे थे।

एक रात पूरनसिंह सो रहा था। तभी उसने सपना देखा—सामने एक दिव्य पुरुष खड़ा है। उसने राजा से कहा—'ध्यान से सुनो राजन्, यदि कोई सच्चा भक्त पुण्य सरोवर में एक कलश पवित्र जल डाल दे, तो अकाल दूर हो जाएगा।'

वह रात भर विचार करता रहा। सुबह राजा ने राज्य में घोषणा करा दी—'किसी सच्चे भक्त द्वारा पुण्य सरोवर में एक कलश पवित्र जल डालने से अकाल दूर हो जाएगा। भक्तों से प्रार्थना है कि पुण्य सरोवर में एक कलश पवित्र जल डालकर अकाल दूर करें।'

अनेक भक्त मंत्रों से जल को पवित्र कर पुण्य सरोवर में जल डालने पहुंचे। वहां एक बूढ़ा प्यास से छटपटा रहा था।
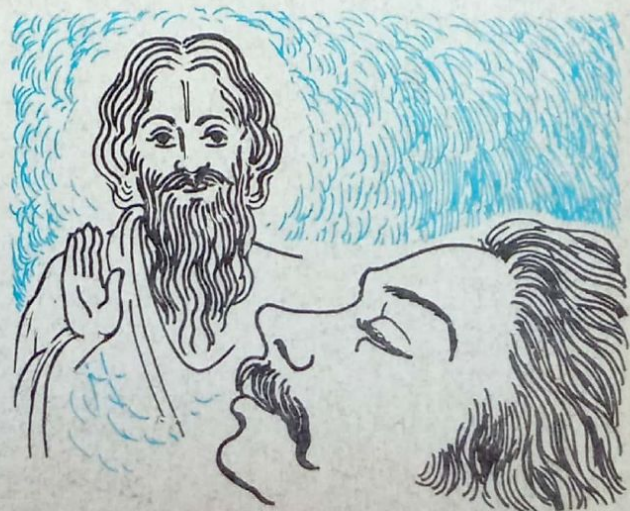
"यह पवित्र जल है, इसे सरोवर में डालने से वर्षा होगी, तो सभी की प्यास बुझेगी। जल जूठा हो गया, तो बेकार हो जाएगा।"—भक्त बूढ़े से कहते और जल सरोवर में डाल देते।

कलश का जल सरोवर में गिरते ही सूख जाता। यह देखकर राजा चिंतित हो उठा। वह कई प्रसिद्ध संत-महात्माओं को बुला कर लाया। उन्होंने भी कलश का जल सरोवर में डाला। पर वह जल भी तुरंत सूख गया। हां, बूढ़ा प्यास से जरूर छटपटा रहा था।

राजा परेशान था। तभी मंत्री ने उससे कहा—"महाराज, आप भी एक कलश जल सरोवर में डाल कर देखें। शायद कुछ चमत्कार हो जाए।"

"तुम जानते हो कि मैं राजकाज में उलझा रहता हूं। नियम से मंदिर भी नहीं जाता हूं।"—पूरनसिंह ने जवाब दिया।

—"जल डालने में हानि क्या है ?"

—"मुझे जल पवित्र करने का मंत्र भी नहीं आता।"

—"मेरे विचार से कुएं का जल भी पवित्र होता है। आप वही जल सरोवर में डालें।"

राजा मंत्री की बात मानकर, दरबारियों के साथ कुएं पर गया। अपने हाथों से कलश भरा। उसे लेकर सरोवर की ओर चल दिया। सरोवर के पास एक बूढ़ा प्यास से छटपटा रहा था। उसे देखकर पूरनसिंह रुक गया।

"महाराज, प्यास के कारण मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। मुझे थोड़ा-सा पानी पिला दें।"—बूढ़े ने राजा से प्रार्थना करते हुए कहा।

"यदि जल तुम्हें पिलाया, तो जूठा हो जाएगा।"—मंत्री ने बूढ़े से कहा।

"मंत्री जी, यह जल भी सरोवर में सूख सकता है। इससे अच्छा है कि मैं इसकी प्यास बुझा दूं।"—राजा ने कहा। फिर वह कलश का जल बूढ़े के हाथों पर डालने लगा। वह बूढ़ा पानी पीने लगा।

राजा पूरनसिंह हैरान था। कारण कि कलश का जल समाप्त हो रहा था। किंतु बूढ़े की प्यास अभी तक नहीं बुझी थी। सहसा, बूढ़े के हाथों से गिरता हुआ पानी पुण्य सरोवर में पहुंचा। तुरंत चमत्कार हुआ। सरोवर से पानी निकलने लगा था। देखते ही देखते आकाश में भी बादल घिर आए थे।

बूढ़ा खड़ा होकर बोला—"दीन-दुखियों की सेवा करने वाला ही ईश्वर का सच्चा भक्त होता है।"

राजा सपने में दिखाई पड़नेवाले बूढ़े को पहचान गया था। राजा ने उससे कहा—"हे दिव्य पुरुष, आपने हम पर बहुत कृपा की है। इसे हम कभी नहीं भूल सकते।" इतना सुनते ही दिव्य पुरुष आकाश में न जाने कहां खो गया। तभी वर्षा की बूंदें टप-टप पड़ने लगीं। ●
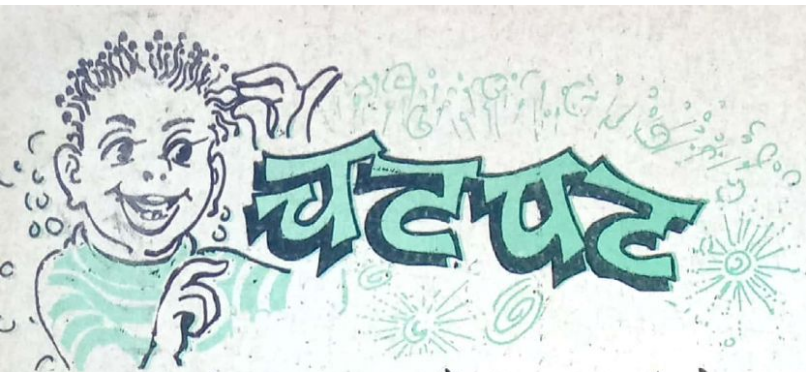
□ बेटा—मां, आज मैं स्कूल न जाऊं तो...
मां—कम से कम एक दिन मुझे तुम्हारी शिकायत सुनने को नहीं मिलेगी।

□ यात्री—कंडक्टर भाई, जब अलीगढ़ आ जाए, तो मुझे जगा देना।
कंडक्टर—मुझ सोते हुए को कोई अलीगढ़ से पहले जगा दे, तो मैं आपको अवश्य जगा दूंगा।

□ डाक्टर—मैं शाम को सात बजे के बाद क्लिनिक में नहीं बैठता।
रोगी—तो क्या आप उसके बाद खड़े-खड़े मरीजों को देखते हैं?

□ मैनेजर—सर, इस होटल में बहुत बढ़िया और पौष्टिक खाना मिलता है।
पर्यटक—अच्छा, फिर यहां के वेटर इतने दुबले-पतले क्यों हैं?

□ मां—बेटा, रात हो गई है। अब आराम से सो जाओ। हल्ला मत मचाना।
बेटा—मां, मैं तो आपका कहा मानता ही हूं। पर उन खटमलों को कौन समझाए। यदि वे अपना काम आराम से करते रहें, तो रात क्या मैं दिन में भी सोता रहूं।

□ विजय—तुम बहुत से लोगों को कैसे चुप कर सकते हो?
अजय—अध्यापक बन कर। अकेला अध्यापक कक्षा में बोलता है। विद्यार्थी चुपचाप उसकी बात सुनते हैं।

□ आयोजक—समय कम है। अतः कवियों से निवेदन है कि वे एक-एक कविता ही आप लोगों को सुनाएं।
एक श्रोता—कोई बात नहीं। कवि अपनी कविता का शीर्षक ही सुना दें, इतना ही बहुत है।

□ एक सहेली—बहन, आज तुम बड़ी उदास हो। बोलो क्या बात है?
दूसरी सहेली—(कान में धीरे-से) आज मेरा मौनव्रत है।

□ एक संगीतज्ञ—भाई, कोई अच्छा-सा राग सुनाओ, ताकि मैं झूम उठूं।
दूसरा संगीतज्ञ—झूमना तो ठीक है। यदि तुम सो गए, तो तुम्हें जगाने के लिए दूसरा राग अलापना पड़ेगा।

□ ग्राहक—क्यों भाई, दो किलोग्राम चावल तुमने कैसे तोला? मैंने घर जाकर तोला, तो डेढ़ किलो ही निकला।
राशन वाला— गनीमत है, डेढ़ किलो तो रह गया। आप जल्दी से यह लीजिए सुई-धागा। फटे थैले को सी लीजिए। वरना इस बार घर पहुंचते-पहुंचते एक किलो ही चावल रह जाएगा।

□ अध्यापक—विजय, तुम्हारे मुंह पर चोट कैसे लगी?
विजय—सर, मैं आपके कहे अनुसार कल गधे का चित्र बना रहा था। तभी उसने मेरे मुंह पर दो-तीन लातें जमा दीं।

□ अध्यापक—सुरेश, बताओ भारत किस दिन आजाद हुआ था?
सुरेश—सर, भारत दिन में नहीं, रात में आजाद हुआ था।

तेनालीराम

पुरस्कार

विजय नगर के व्यापारी रामगोपाल का किसी ने अपहरण कर लिया । रिहाई के लिए तुरंत पांच लाख रुपए मांगे

व्यापारी का पुत्र माधव राजा कृष्णदेव राय के पास आया । सारी स्थिति बताई । बोला—''पत्र में लिखा है, आपकी मदद ली, तो पिता जी के प्राण संकट में पड़ सकते हैं । मगर तुरंत इतने धन का प्रबंध नहीं हो सकता । क्या करूं?''

राजा सोच में पड़ गए । सेना की मदद लें, तो व्यापारी के प्राण संकट में । इस काम के लिए माधव को धन दें, तो राज-धर्म कलंकित हो । उन्होंने मंत्री-परिषद की बैठक बुलाई । काफी सोच-विचार किया गया, किंतु उपाय कुछ न सूझा ।

तेनालीराम चुप बैठा था । राजा ने उसकी ओर देखा, तो वह बोला—''अब तो एक ही उपाय है ।''

राजा ने पूछा, तो तेनालीराम बोला— ''माधव से कहिए, रामगोपाल का अता-पता बताने वाले को दस लाख के पुरस्कार की घोषणा कर दे ।''

मंत्री ने कहा—''यह समय बेसिर-पैर की बातें करने का नहीं है । इतना धन उसके पास होता तो पांच लाख देकर पिता को न छुड़ा लेता ।'' तेनालीराम ने राजा की ओर देखा । राजा उसकी आंखों की भाषा पढ़ गए । तुरंत माधव को बुलाकर दस लाख के पुरस्कार की घोषणा करने को कह दिया ।

घोषणा होने के अगले ही दिन एक युवक ने आकर सूचना दी—'रामगोपाल नहर के किनारे बेहोश पड़े हैं।' तुरंत माधव सैनिकों को लेकर गया । पिता को ले आया । युवक ने पुरस्कार की रकम मांगी, तो सैनिक उसे पकड़ कर राजा के पास ले गए । राजा ने पूछताछ की, तो युवक घबरा गया । वह भी अपहरणकर्ताओं में से एक था । उसकी निशानदेही पर सारा गिरोह पकड़ लिया गया ।
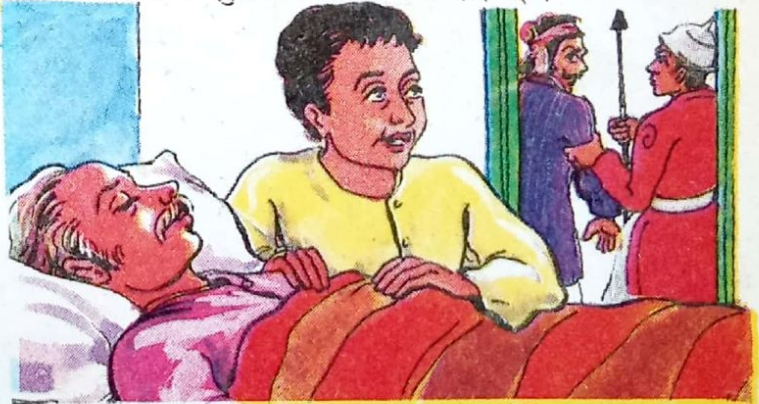
अगले दिन भरे दरबार में तेनालीराम की पीठ ठोकते हुए राजा ने कहा—''सचमुच, लालच बुरी चीज है । फिरौती से दुगुनी रकम सेठ का अता-पता बताने की थी । बस, इसी लालच ने हमें गिरोह तक पहुंचा दिया । वर्ना बिना फिरौती लिए गिरोह रामगोपाल को इस तरह क्यों छोड़ता ।''
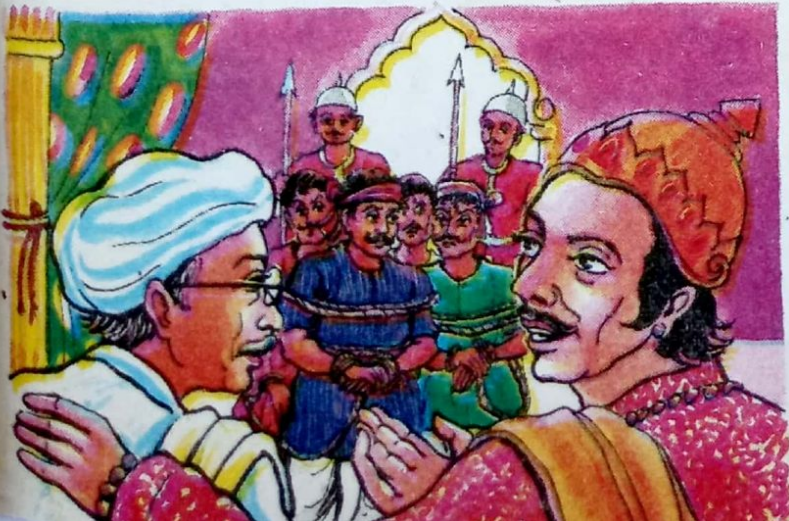
ZAP B
MICKEY AN
TO T
YES! Zap now has a whole new range of fun watches-the Disney series. Lovable Mickey. Bashful Minnie. Crafty Donald. Perky Daisy. Bumbling Goofy. Clumsy Pluto. And of course, 01' Unca Scrooge.
© DISNEY
Disney series: MRP Rs. 150/-
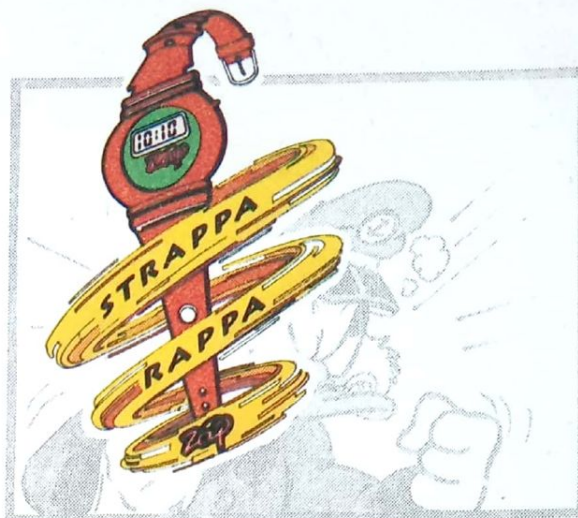
BRINGS
D THE GANG
TOWN.
STRAPPA
RAPPA
So many whacky watches, so much zany fun... yours at the flick of a wrist. Start collecting today!
A'S FIRST WATCH
NED FOR CHILDREN
Zap
FROM
hmt
Rediffusion/BLR/HMT/40/92

सपने का सच

— विजय अग्रवाल

चोर को समझ नहीं आ रहा था कि वह इस काले और छोटे पत्थर का क्या करे ? कल रात उसने एक पंडित जी के यहां चोरी की थी।

चोर ने सोचा— 'यह पत्थर रामदास मोची को दे दूं और इसके बदले में उससे एक जोड़ी जूते ले लूं।' यह सोचकर वह कनकावती गांव की ओर चल दिया।

चोर कनकावती गांव पहुंचा। गांव के बिल्कुल अंतिम छोर पर बनी झोंपड़ी में रामदास अपनी पत्नी

मूली और एक बेटे के साथ रहता था। इस परिवार के सीधेपन की चर्चा पूरे गांव में थी। चोर रामदास के पास पहुंचा। चोर उसे पत्थर दिखलाकर बोला— "भाई रामदास! मुझे नदी में यह पत्थर मिला है। यह तुम्हारे औजार तेज करने के काम आएगा। इसे तुम रख लो।"

रामदास पत्थर की सुंदरता पर मोहित हो गया। उसने चोर को पत्थर के बदले में एक जोड़ी जूते दे दिए।

कुछ दिनों बाद गांव में चर्चा होने लगी कि रामदास के यहां शालिग्राम की मूर्ति है। वह उस पर अपने औजार तेज करता है। यह बात गांव के पंडित जी के कानों में भी पड़ी। वह क्रोध से लाल हो गए। वह तुरंत रामदास की झोंपड़ी की ओर चल दिए।

झोंपड़ी के पास पहुंचकर पंडित जी ने देखा कि नदास सिर नीचा किए जूते बना रहा है। साथ ही भजन भी गुनगुना रहा है। उसकी बगल में काला पत्थर पड़ा है। यह देख, पंडित जी आग-बबूला हो उठे। वह बोले— "रामदास! यह क्या मूर्खता है?"

रामदास अपने काम में ही लगा रहा। उसका ध्यान पंडित जी की तरफ नहीं गया। लेकिन पंडित जी की आवाज सुनकर उसकी पत्नी घर से बाहर आ गई। उसने रामदास से कहा— "देखते नहीं, पंडित जी गुस्से में तुमसे कुछ पूछ रहे हैं?"

रामदास ने देखा— पंडित जी खड़े हैं। वह डर गया। उसने सोचा— 'न तो मैं झूठ बोलता हूं, न ही अपने जूतों के धंधे में किसी तरह की बेईमानी करता हूं। फिर पंडित जी मुझसे क्यों नाराज हैं?' उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसने अपनी पत्नी को देखा। वह भी सहमी हुई थी। रामदास ने पंडित जी को प्रणाम किया।

पंडित जी गुस्से से बोले— "रामदास, तुम अधर्मी हो, पापी हो।"

— "महाराज, यदि मुझसे जाने-अनजाने में कोई पाप हो गया हो, तो क्षमा करें।"

— "तुमने शालिग्राम जी पर अपने औजार घिसकर उनका अपमान किया है।"

इतना सुनते ही रामदास को अपना अपराध समझ में आ गया। उसका हृदय दुःख से भर उठा। उसने कहा— "महाराज, मैंने यह अनजाने में किया है। आप इसके लिए मुझे जो भी दंड देना चाहें, दे सकते हैं।"

यह सुनकर पंडित जी का चेहरा खिल उठा। उन्होंने सोचा— 'रामदास गरीब है। इससे ज्यादा धन तो ऐंठा नहीं जा सकता। हां, एक जोड़ी जूता तो यह दे ही सकता है।' यह सोचकर वह झोंपड़ी में गए। उन्होंने शालिग्राम जी को उठाया। साथ ही पास में रखे जूतों पर निगाह डाली। रामदास की पत्नी ने पंडित जी की इच्छा को भांप लिया। उसने जूतों की जोड़ी कागज में लपेट कर पंडित जी को दे दी। पंडित जी खुशी-खुशी घर लौट गए।

एक दिन बरसात रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। कई दिन से सूरज न निकलने के कारण घर और कपड़ों में सीलन आ गई थी। रामदास के औजारों में भी जंग लग गई थी। अपनी रांपी पर लाल रंग
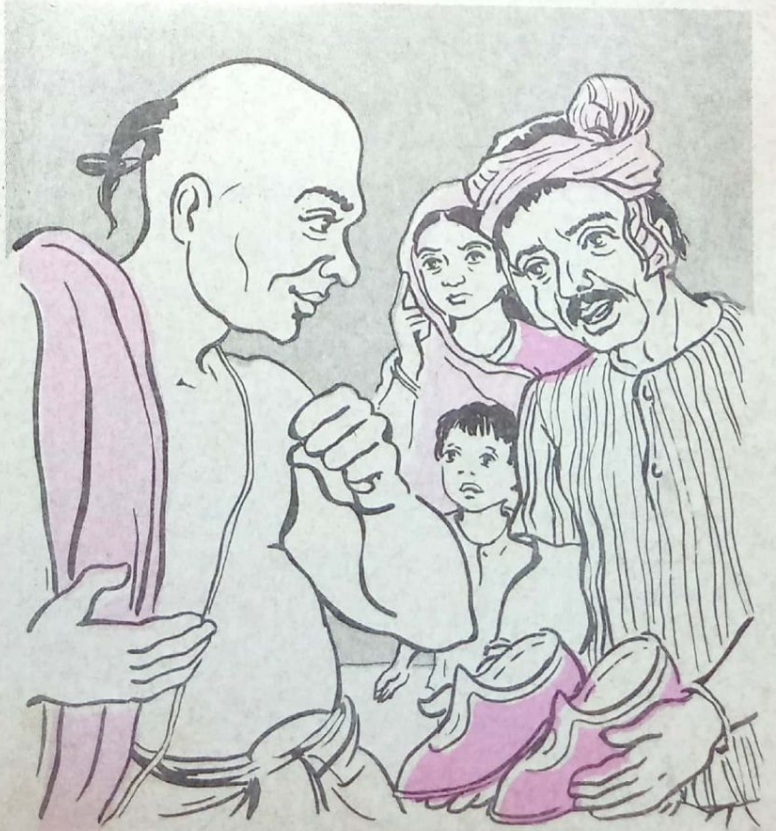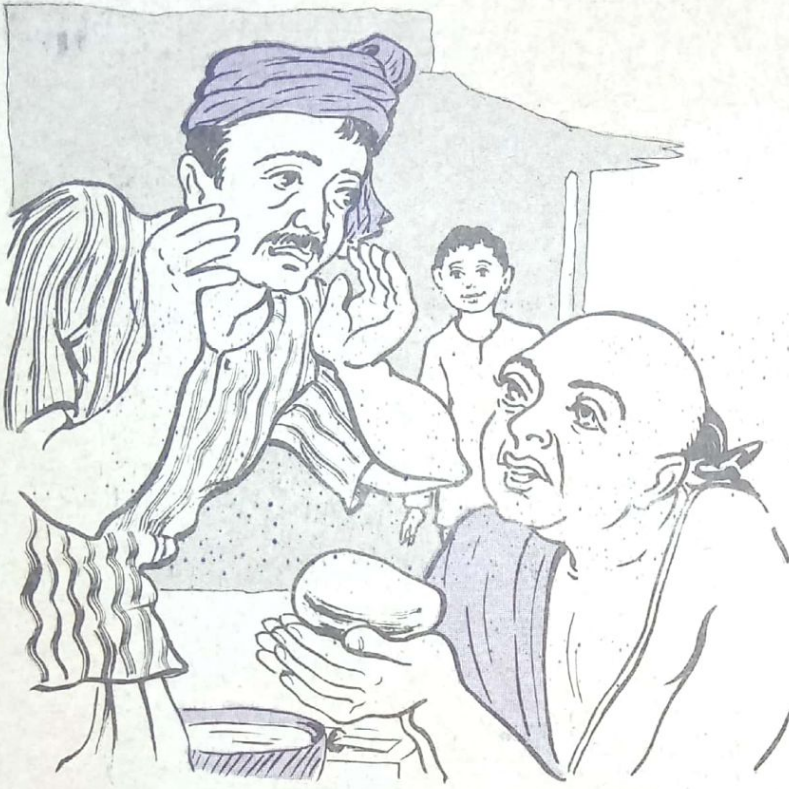
देखकर उसको अचानक उस काले पत्थर की याद आ गई । उसके मन में आया कि यदि आज वह पत्थर उसके पास होता, तो इन औजारों पर जंग नहीं लगता । लेकिन तुरंत उसके ध्यान में आया कि वह पत्थर नहीं, वह तो शालिग्राम थे । वह अपने पापी मन को धिक्कारने लगा ।

सहसा रामदास ने देखा— पंडित जी बारिश में भीगते हुए चले आ रहे हैं । वह किसी अनजाने भय से सहम उठा । फिर धीरे से बोला— 'अभी-अभी मेरे मन में शालिग्राम को पत्थर समझकर उससे अपना हित साधने की बात आई थी । लगता है, पंडित जी को यह बात अपने ज्ञान से पता लग गई है । इसीलिए वह मुझे दंड देने आ रहे हैं ।'

थोड़ी देर में पंडित जी रामदास के दरवाजे पर पहुंचे । रामदास तुरंत पंडित जी के पैरों में लिपट गया । वह रोते-रोते बोला— ''महाराज, मैं मूर्ख हूं ।'' इतना कहकर रामदास अचेत हो गया । पंडित जी यह सब देखकर हैरान थे । उन्होंने रामदास की पत्नी को आवाज दी । पत्नी बाहर आई । उसने देखा, रामदास बेसुध पड़ा हुआ है । वह धीरे-धीरे पति के माथे को सहलाने लगी । पंखे से हवा की । फिर भजन गाने लगी । थोड़ी देर में रामदास उठा । वह भी भजन गाने लगा ।

पंडित जी उसे देखकर बोले— ''रामदास, रामदास !''— पंडित जी की आवाज सुनकर रामदास हड़बड़ाकर खड़ा हो गया ।

वह चौंक पड़ा । पंडित जी को देख, थर-थर कांपने लगा ।

— ''रामदास, मैं पिछले साल तुम्हारे यहां से शालिग्राम जी का विग्रह ले गया था । यह बताओ कि तुम शालिग्राम जी का क्या करते थे ?''— पंडित जी ने पूछा ।

''महाराज, मैं अनजाने में उस पत्थर पर अपने औजारों की धार तेज करता था । मैंने उन शालिग्राम भगवान को बहुत कष्ट दिया ।''-कहता हुआ वह रो पड़ा ।

तभी पंडित जी ने अपनी झोली से शालिग्राम जी का विग्रह निकाला ।

उन्होंने शालिग्राम को प्रणाम किया और उन्हें रामदास की कठौती में रख दिया । फिर वह रामदास के पैरों में पड़ गए ।

रामदास और उसकी पत्नी मूली यह देख, हैरान थे । तुरंत रामदास ने झुककर पंडित जी को उठाया । वह बोला— ''महाराज, आप मुझे पाप का भागी क्यों बनाना चाहते हैं । आखिर मुझसे ऐसा कौन-सा अपराध हो गया है ?''

पंडित जी बोले—''आपको अपनी छोटी-सी कथा सुनाना चाहता हूं । आपका आदेश हो, तो सुनाऊं ?''

— ''महाराज, आप कथा अवश्य सुनाइए ?''

पंडित जी बोले— ''मैं शालिग्राम जी की नित्य पूजा-अर्चना विधि-विधान से करता था । मुझे कल सपने में शालिग्राम दिखाई दिए । उन्होंने मुझसे कहा— 'पंडित जी, आप मुझे भक्त रामदास के घर पहुंचा दो ।' यह सुन, मेरी नींद टूट गई । अतः मैं आपको शालिग्राम जी का विग्रह लौटाने आया हूं ।''

रामदास यह सुन, भाव-विभोर हो गया । उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे । यह देख, पंडित जी ने उसे गले लगा लिया । ●

नंदन ज्ञान पहेली

१०००रु॰ पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. फागुन में रंगों का— बड़ा मोहक है!
(मेल/खेल)

२. देखो, चिड़िया— फुदक रही है नानी!
(ऐसे/कैसे)

४. ठीक है, अब हमें— खोजना चाहिए।
(नाम/नारा)

८. किस— की खोज में हो देव गंधार?
(चित्र/सूत्र)

९. गोर्की का महान उपन्यास— जरूर पढ़ो।
(वे/मां)

११. बोले हुड़दंग जी,— पूरियां खाऊंगा।
(दस/तीस)

१२. हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि।

ऊपर से नीचे

३. इस— में ऐसे-ऐसे दृश्य देखे हैं भाई कि क्या कहें!
(नदी/सदी)

५. मेरे तो दोनों— घर के दरवाजे पर खड़े हैं!
(लाल/बैल)

६. जी हां हुजूर, संकट— ने ही पैदा किया है।
(नाती/नाना)

७. चलो, अब मित्र से— मांगो।
(विदा/चंदा)

१०. कभी इस बाजे को सुना है?

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०३

नाम ____________________

उम्र ________ पता ____________________

____
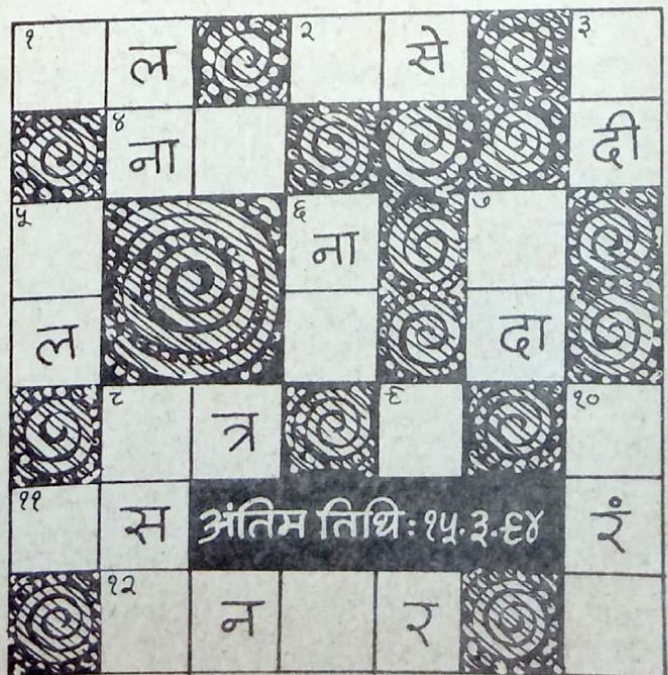
नं. ज्ञा. प. ३०३

उसकी आंखों में बसे सपने साकार आपके.
आपके हाथों में है उसका भविष्य.

बाल उपहार वृद्धि निधि.

आपके प्यार की तरह,
यह बढ़ता जाए, बढ़ता जाए, बढ़ता ही जाए.

कितना लाड़, कितना दुलार उसकी हर ज़रूरत के लिए. दिनभर का हर पल आप सुरक्षित बनाते हैं उसके लिए. क्या यही वह सही समय नहीं जब आप उसके भविष्य के बारे में भी सोचें ? आज, छोटी सी योजना बनाइए और उसे उज्जवल भविष्य का उपहार दीजिए. आप सोचते होंगे. कैसे ? सीधी बात है. आपके लिए हमारे पास है–बाल उपहार वृद्धि निधि. जिसमें आप एक बार निवेश कीजिए या हर साल थोड़ी थोड़ी रकम जोड़ते जाइए. फिर आपके लाड़ले के 21 वर्ष के होने तक निवेश को बढ़ता हुआ देखिए. जबकि आपका लाड़ला लखपति बन जाएगा. जरा सोचिए, यह उपहार उसके कितने काम आएगा ? ऊंची शिक्षा के द्वार खुल जाएंगे. या अपने खुद के बिजनेस में काम आएगे या अपना छोटा सा घर बनाने में सहायता पहुँचाएगा यह उपहार. 18 साल के होने पर यदि वह चाहे तो साल में दो बार पैसा निकाल सकता है. जबकि बकाया रकम उसके 21 वर्ष के होने तक बढ़ती जाएगी. बाल उपहार वृद्धि निधि. एक दिन आपका लाड़ला आपके गुण गाएगा.

14% डिवीडेंड.
हर 3 वर्ष में बोनस

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

आपके बेहतर कल के लिए

सभी सिक्योरिटी निवेश के साथ बाज़ार का जोखिम होता है. किसी भी निवेश से पहले अपने निवेश सलाहकार या एजेंट से सलाह अवश्य ले लें.

मुख्य कार्यालय : बम्बई. आंचलिक कार्यालय : जीवन भारती, 13वीं मंजिल, टावर-II, 124, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001. शाखा कार्यालय : ❑ नई दिल्ली : तेज बिल्डिंग, 8-बी, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, फोन : 3712539, 3327339. ❑ जयपुर : आनंद भवन, तीसरा तल, संसार चंद्र रोड, फोन : 65212. ❑ कानपुर : 16/79 ई, सिविल लाईन्स, फोन : 311858. ❑ लुधियाना : सोहन पैलेस, 455, माल रोड, फोन : 50373. ❑ लखनऊ : रिजैंसी प्लाज़ा बिल्डिंग, 5, पार्क रोड, फोन : 232501. ❑ चंडीगढ़ : जीवन प्रकाश, सैक्टर 17-बी, फोन : 543683. ❑ शिमला : 3, माल रोड, फोन : 4203. ❑ आगरा : सी-ब्लाक, जीवन प्रकाश, संजय पैलेस, महात्मा गांधी रोड. ❑ इलाहाबाद : यूनाईटेड टावर्स, 53, लीडर रोड, फोन : 53849. ❑ वाराणसी : पहला तल, डी-58/2ए-1, भवानी मार्किट, रथयात्रा, फोन : 64244. ❑ देहरादून : दूसरा तल, 59/3 राजपुर रोड, फोन : 23620.

❑ bdkhanna\UTI-4162-H

साझे का ताल

—चन्द्रदत्त 'इन्दु'

पुरानी बात है। किसी गांव में दो मित्र रहते थे। नाम थे किशन और गोपाल। घर में थोड़ी-बहुत खेती की जमीन थी, मगर खेती करने पर भी घर का गुजारा मुश्किल से चल पाता था। ये दोनों मित्र हमेशा धन कमाने की नई-नई योजना बनाया करते थे। कभी ज्यादा पैसा पाने के लिए खेतों में धान बोते, तो कभी गन्ना उगाकर अमीर बनने का सपना देखते।

एक बार दोनों ने खेती छोड़कर आम का बाग लगाने की सोची। मगर तभी किसी ने उन्हें टोका। कहा —"मूर्खो, बाग तो तुम लगा लोगे, मगर जरा अक्ल पर जोर देकर यह सोचो कि आम के पेड़ कब बड़े होंगे? और कब आम लगेंगे। तब तक तुम और तुम्हारे घर वाले क्या खाएंगे?"

बात ठीक थी। उनकी समझ में आ गई, मगर धन पाने का नशा तो उन पर अभी भी चढ़ा था। एक दिन दोनों मित्रों ने सलाह की कि शहर में जाकर कोई काम ढूंढ़ना चाहिए।

बस, दोनों मित्र अपनी योजना के अनुसार शहर जा पहुंचे। साथ में थोड़ा-बहुत पैसा भी था। कुछ दिन काम के जुगाड़ में दोनों भटकते रहे, मगर छोटा-मोटा काम वे करना नहीं चाहते थे। कोई बड़ी तनख्वाह वाला काम उन्हें कैसे मिलता? परिणाम यह हुआ कि जेब का सारा पैसा खत्म हो गया और कोई काम भी नहीं मिला।

एक दिन दोनों मित्र इसी चिंता में पीपल के एक पेड़ के नीचे बैठे थे। किशन कह रहा था —"गोपाल, हम तो मारे गए, कहीं के नहीं रहे। अब इस हालत में गांव लौटकर जाना भी ठीक नहीं। वहां सब लोग हमारी हंसी उड़ाएंगे। अब क्या किया जाए?"

गोपाल बोला —"भैया, मेरी तो समझ में कुछ नहीं आया। हमारी नाक ही कटी समझो। अब मैं तो इस दशा में गांव लौटकर जाऊंगा नहीं। भले ही मुझे इस पेड़ से लटककर फांसी लगानी पड़े।"

उस पीपल के पेड़ पर एक प्रेत रहता था। उनकी बात सुनकर प्रेत विचलित हो गया। सोचने लगा —'यहां मैं रहता हूं। इन दोनों ने अगर इसी पेड़ से लटककर फांसी लगा ली, तो ये भी प्रेत बनकर इसी पेड़ पर बस जाएंगे। एक पेड़ पर तीन-तीन प्रेत रहें, यह ठीक बात नहीं।'

प्रेत उनसे बोला —"तुम लोग ऐसी गलती भूलकर भी मत करना। करोगे, तो पछताना पड़ेगा।"

प्रेत की बात सुनकर दोनों डर गए। फिर गोपाल ने साहस करके पूछा —"प्रेत जी, ठीक है। हम तुम्हारी बात मान लेते हैं, मगर हम क्या करें? धन कैसे कमाएं?"

प्रेत बोला —"मेरी बात सुनो। इस नगर में एक बड़ा जौहरी रहता है। उसके पास अपार धन है। खूब दान-पुण्य उसने किए हैं। फिर भी उसे चिंता है कि मरने के बाद उसे स्वर्ग मिलेगा या नहीं। किसी पंडित ने उसे बता रखा है कि वह बिना लिखा-पढ़ी के लोगों को उधार दिया करे। वह पुण्य उसे स्वर्ग में जरूर ले जाएगा, क्योंकि इस तरह उधार दिया गया धन इस जन्म में कम ही लोग लौटाने आएंगे। जो लौटाने नहीं

आएगा, उसी का पुण्य उसे स्वर्ग ले जाएगा । मेरी मानो, तुम तुरंत उस जौहरी के पास जाओ और उधार में मनमाना धन लेकर उससे व्यापार शुरू कर दो । फिर तुम्हें धन की कमी नहीं रहेगी ।''

प्रेत की बात सुनकर दोनों मित्र बड़े प्रसन्न हुए । वे तुरंत उस जौहरी की हवेली पर गए और उधार के नाम पर उससे स्वर्ण मुद्राओं से भरी एक-एक थैली ले आए । जौहरी ने भी बिना नाम और पता पूछे, उन्हें उधार दे दिया ।

उन्होंने सोचा कि सबसे पहले उस प्रेत को चलकर धन्यवाद दिया जाए, जिसके कारण इतना धन बिना कुछ किए मिल गया । वे दोनों उसी पीपल के नीचे पहुंचे । गोपाल ने हाथ जोड़कर कहा —''प्रेत भैया, तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद । हमें स्वर्ण मुद्राओं से भरी दो थैलियां मिल गईं । अब हमारा जीवन आनंद से बीतेगा ।''

प्रेत ठहाका मारकर हंसा । बोला —''मूर्खो तुम्हारा यह जीवन भले आराम से बीते, मगर आगे क्या होगा, यह भी तुम्हें पता है ?''

''क्या मतलब ? हम समझे नहीं ।'' —किशन ने कहा ।

''अरे, उधार के धन को हड़पने वाला तो और भी पापी होता है । तुमने जो किया है, उसके कारण तो दूसरे जन्म में भी तुम्हें शांति नहीं मिलेगी । जौहरी स्वर्ग में मौज मारेगा और तुम उसके उधार के भार से दबे पता नहीं, कहां-कहां भटकते फिरोगे ।''

दोनों परेशान । आखिर में उन्होंने फैसला कर लिया कि कुछ भी करना पड़े, वे यह धन किसी कीमत पर नहीं लेंगे । दोनों मित्र अपनी-अपनी थैली लेकर जौहरी के पास पहुंचे । मगर जौहरी ने धन वापस लेने से इंकार कर दिया ।

मुसीबत में फंसे दोनों मित्र राह के किनारे बैठकर रोने लगे । तभी उस मार्ग से जाते हुए एक महात्मा ने उन्हें देखा । वह उनके पास आए । बोले —''तुम दोनों इतने दुखी क्यों हो ?''

उन दोनों ने अपनी परेशानी महात्मा जी को बताते हुए कहा —''स्वर्ण मुद्राओं से भरीं ये दोनों थैलियां हमारे जी का जंजाल बन गई हैं । समझ में नहीं आता कि हम क्या करें ?''

महात्मा जी ने कुछ देर सोचा । फिर बोले —''मैं तुम्हें राह दिखाता हूं । तुम इस धन से इसी रास्ते पर एक पक्का तालाब बनवाओ । जब तालाब बनकर तैयार हो जाए, तो उसमें स्वच्छ जल भरवा दो । यह सब करने के बाद तुम दोनों सावधान होकर उस जल की पहरेदारी करो । कोई आदमी, जानवर, यहां तक कि कोई पक्षी भी उस ताल का जल न पीने पाए । अगर कोई जल पीने आए, तो कह दो कि अमुक जौहरी का यह ताल है । उसकी आज्ञा से यहां जल पीना मना है ।'' उन्हें यह समझाकर महात्मा जी चले गए ।

हालांकि बात का रहस्य उन दोनों की समझ में नहीं आया था, फिर भी महात्मा जी की बात मान, उन्होंने जमीन खरीदी और ताल बनवाना शुरू कर दिया । कुछ ही दिन में ताल बनकर तैयार हो गया । उसमें स्वच्छ जल भरा गया । वे दोनों उस जल की रखवाली भी करने लगे ।

ताल गरमी के महीने में बनकर तैयार हुआ था । प्यासे राहगीर उधर से गुजरते, तो स्वच्छ जल देखकर

वहां पानी पीना चाहते, मगर किशन और गोपाल उन्हें पानी पीने से रोक देते। वे कहते —"ताल जौहरी का है। हम रखवाले हैं। उनकी आज्ञा है कि यहां का पानी कोई न पीने पाए।"

यह सुनकर प्यासे राहगीर मन मसोस कर रह जाते। मन ही मन जौहरी को बुरा-भला कहते। महीनों तक यही सिलसिला चलता रहा। इस बीच हजारों प्यासे राहगीर वहां से गुजरे, मगर कोई पानी नहीं पी पाया।

होते-होते यह बात जौहरी के कानों में पहुंची। उसके जान-पहचान वालों ने उससे जाकर शिकायत की —"आप तो बड़े धर्मात्मा बनते हैं। जब आप प्यासे राहगीरों को अपने ताल का पानी नहीं पीने देते, तो रास्ते के मोड़ पर आपने ताल क्यों बनवाया ?"

जौहरी सुनकर परेशान। उसने कहा —"कैसा ताल ? मैंने तो कोई ताल नहीं बनवाया और न ही किसी को पानी पीने से रोका।"

वह तुरंत भागा-भागा ताल पर आया। उसने जो

सुना था, वही देखा। वह उन दोनों उधार लेने वालों को भी पहचान गया। बोला —"तुम लोगों ने यह क्या किया ? मैंने ताल नहीं बनवाया। फिर तुम लोग इस ताल को मेरा क्यों बताते हो ? मेरा नाम लेकर राहगीरों को पानी पीने से क्यों रोकते हो ?"

वे कोई उत्तर देते, उससे पहले ही महात्मा जी वहां आ पहुंचे। मुसकराकर बोले —"तुमने इन्हें उधार दिया था। उसी धन से यह ताल बना। धन तुम्हारा लगा, इसीलिए ताल तुम्हारा हुआ। तुम गरीब और बेसहारा लोगों को इस तरह धन दे-देकर अपने स्वर्ग जाने की तैयारी कर रहे हो, जबकि उधार लेने वालों को इस पाप में फंसा रहे हो। प्यासे लोगों ने यहां पानी न मिलने पर तुम्हें जो बद्दुआएं दी हैं, समझो उससे तुम्हारे आज तक के सारे पुण्य बेकार गए। अब बताओ, इस धन से तुम और क्या-क्या करना चाहते हो ?"

जौहरी का कलेजा कांप उठा। वह महात्मा जी के चरणों पर गिर पड़ा। बोला —"सचमुच मुझसे भूल हुई। स्वर्ग पाने की चाह में मैंने बेकार दूसरों को जान-बूझकर अपना कर्जदार बना दिया, मगर अब इस ताल का क्या होगा ? अगर यहां ऐसा ही चलता रहा, तो मुझे प्यासे लोगों के शाप से घोर पाप का भागी बनना पड़ेगा ?"

महात्मा बोले —"पैसा तुम्हारा लगा है, इसीलिए तुम्हें स्वीकारना पड़ेगा कि यह ताल तुम्हारे पैसे से बना है। इस तरह तुम्हारे ऋण से ये दोनों मुक्त हुए। वैसे ताल बनवाने में परिश्रम इन दोनों ने भी किया, इसलिए इस ताल पर हक इनका भी है। मेरे हिसाब से अगर इस ताल को 'साझे का ताल' कहा जाए, तो ठीक रहेगा। अगर तुम लोग मेरी बात से सहमत हो, तो तुम तीनों हाथ उठाकर कहो कि आज से यहां का जल सभी का है।"

महात्मा जी की बात मानकर, तीनों ने हाथ उठाकर जल पीने का मार्ग सभी के लिए खोल दिया। उस दिन से 'साझे का ताल' उस शहर की यादगार बन गया। ●
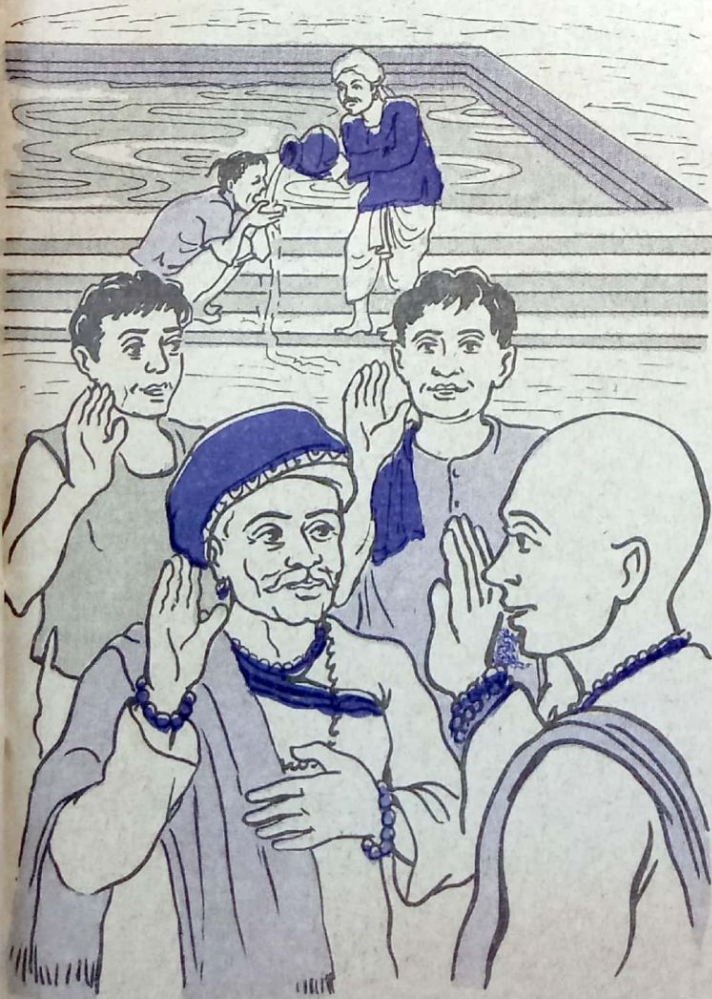
अजब-अनोखी दुनिया

बिजली के बल्ब में चीनी मिट्टी का फिलामेंट : टामस अल्वा एडीसन का नाम भला कौन नहीं जानता ? वही जिन्होंने बिजली के बल्ब की खोज की । बल्ब में जलने वाली तार की कुंडली मुश्किल से बनी । बांस से लेकर कपास तक करीब ढाई सौ किस्म के रेशों की जांच की । हर बार बटन दबाते ही बल्ब फुक्क । मजाक में किसी ने एडीसन से पूछा कि क्या वह असफल वैज्ञानिक हैं ? एडीसन ने हंसकर कहा— "बिल्कुल नहीं । मैं ऐसे ढाई सौ रेशों को जानता हूं जिनसे बल्ब नहीं जलता, केवल टंगस्टन धातु का तार ही लाल होकर चमकता है ।" बल्बों में आज भी उसी धातु का प्रयोग होता है ।

अब न्यू मेक्सिको के वैज्ञानिकों ने बल्ब का नया तार खोजा है । यह तार (फिलामेंट) चीनी मिट्टी का बना है । इससे खूब रोशनी होती है । बल्ब देर से फ्यूज होता है । यह सस्ता भी है ।

उपग्रह से घर के आंगन की तसवीर: उपग्रह की आंखें बड़ी तेज होती हैं । जासूसी उपग्रह आकाश में हजारों किलोमीटर की ऊंचाई पर लटके होते हैं । वे सड़क पर खड़ी कार की नम्बर प्लेट तक पढ़ लेते हैं । अब हमारे देश में भी ऐसे उपग्रह बन गए हैं । वे आपके आंगन या घर के पिछवाड़े की तसवीर खींच सकते हैं । वैज्ञानिक उपग्रह से खींची गई इन तसवीरों को पढ़ सकते हैं । कहां हरियाली है ? कहां सूखा है ? पानी कहां पर है ? सब बातों का पता तसवीर देखकर, लगाया जा सकता है ।

अब अगर आप चाहें, तो घर के पिछवाड़े की तसवीर भी खिंचवा सकते हैं । लागत आएगी— पांच सौ रुपए से तीन हजार रुपयों के बीच । राष्ट्रीय दूरदर्शन एजेंसी ने ऐसी व्यवस्था की है । पैसा फेंक और चित्र (तमाशा) देख ! हां, चित्र का मतलब निकालने के लिए जानकारों की मदद चाहिए ।

लेजर किरणों से प्लास्टिक की वेल्डिंग : लोहे की वेल्डिंग तो आसान है । गैस की लौ से लोहा लाल हो जाता है । वेल्डिंग की छड़ पिघलकर जोड़ों में भर जाती है । लोहे के दरवाजे, खिड़कियां और जालियां ऐसे ही बनती हैं ।

अब प्लास्टिक का जमाना है । फिर भी प्लास्टिक की अगर वेल्डिंग करें, तो वह जल उठेगा । एढेसिव (चिपकाने वाले पदार्थ) के जोड़ मजबूत नहीं होते । हल क्या है ? ब्रिटेन के वेल्डिंग इंस्टीट्यूट ने लेजर किरणों से प्लास्टिक की वेल्डिंग का तरीका निकाला है । इससे बाल बराबर मोटे प्लास्टिक से लेकर दो मिलीमीटर मोटाई तक के प्लास्टिक की वेल्डिंग हो सकती है ।

विज्ञान की मदद से मां-बाप की पहचान : बादशाह सोलोमन का किस्सा तो सुना है । वही एक बच्चा और दो माताएं । असली मां का पता कैसे लगे ? चतुर बादशाह ने हुक्म दिया— बच्चे को दो टुकड़ों में बांट दो । हर मां को एक टुकड़ा सौंप दो । हो गया न्याय । असली मां रो पड़ी । बच्चे को मत काटो । पूरे का पूरा दूसरी औरत को दे दो । बादशाह हंसा । बोला-असली मां यही है । बच्चा असली मां को सौंप दो ।

ऐसा ही किस्सा करीब पांच साल पहले हैदराबाद में हुआ । दस साल की लक्ष्मी के दो-दो दावेदार । असली मां-बाप का पता कैसे चले ? पुलिस हैरान, परेशान । मामला हैदराबाद के डा. लाल जी सिंह की प्रयोगशाला में पहुंचा । वह पैतृक गुणों की इकाई डी. एन. ए. को पहचानने में माहिर हैं । उन्होंने जांच करके लक्ष्मी के असली माता-पिता का पता लगा लिया । डा. लाल जी सिंह की तरकीब डी. एन. ए. फिंगर प्रिंटिंग कहलाती है । उनका कहना है कि अंगुलियों की छाप की तरह डी. एन. ए. की छाप भी हर आदमी में अलग होती है । अब अपराधियों को पकड़ने में भी यह तरकीब काम आ रही है ।

— बृजमोहन गुप्त

दादी, तुम्हारा टूटा चश्मा ठीक करा लाई हूं…
बेटी, मेरे तो काला मोतिया उतर आया है, अब चश्मे का क्या फायदा…

मम्मी, तुम्हारी लाल साड़ी के लिए किनारी…
पैसे बेकार करने से पहले पूछ तो लिया होता, वह साड़ी तो तुम्हारी बुआ की है

घर वाले खुश नहीं हुए तो क्या, दूसरा अध्याय छोड़ कर मैंने सारी किताब रट ली है, टीचर खुश तो स्कूल से इनाम पक्का

शीर्षक बताइए

बैठी गुमसुम, हंसते हो तुम : इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर-सा छोटा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० मार्च, १९९४ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : मई '९४ अंक

चित्र : देवेन्द्र अग्रवाल

पुरस्कृत चित्र

चीकू सोढ़ी, आयु १२ वर्ष, डब्लयू-जेड के-१३/१, गली नं. १३, कृष्णा पार्क एक्स., नई दिल्ली-११००१८

इनके चित्र भी पसंद आए — मनमोहन शिमला; मनीषकुमार सिंहल, गुड़गांव; सुरेखा वर्मा, बर्दवान (प. बंगाल); मोनिका, नई दिल्ली; महर्षि, कानपुर; मनीषकुमार सिंहल, गुड़गांव; सच्चिदानंद तिवारी, भोजपुर (बि); रवि भट्ट, कलकत्ता; प्रतीष्यदास, कटक।

बाल सभा

राकेश

नीतिका

आरती

पूर्णिमा

देविका

पत्र मिला

□ जनवरी अंक ने मुझे वाशिंगटन में देखी एक पेंटिंग की याद दिला दी । मैं अब आपके इस अंक के मुख पृष्ठ के आधार पर एक बड़ी पेंटिंग तैयार कर रहा हूं ।

— के. कांत, नौसेना अधिकारी, वाशिंगटन

□ इस अंक में नए वर्ष का कैलेंडर बहुत भाया । 'ठाकुरजी का काम', 'मन की बात', 'खाली हाथ', 'लौटी खुशी', 'पंच का फैसला', 'साधु की बात', 'भागा खरगोश' तथा 'हार की कीमत' कहानियां बहुत अच्छी लगीं ।

— भूपेश खत्री, बुढ़लाडा (पं.)

□ यही एक पत्रिका है जिसके सहारे हम आगे बढ़ सकते हैं । ऐसा लगता है जैसे स्वयं माता सरस्वती बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए 'नंदन' लिखती हों ।

— राजू दत्ता, दुर्गापुर (प. बं.)

□ स्वामी विवेकानंद का चित्र और भगवान उमा-महेश्वर-गणेश जी का कैलेंडर अनोखे रहे । पाठक जो चाहते हैं वही आप प्रकाशित करते हैं । इस अंक की कहानियां भी मजेदार लगीं ।

— रामकृष्ण नीलकंठ घोलप, अहमदनगर

□ 'अदल-बदल', 'पंच का फैसला', 'लौटी खुशी', 'अकेला सफर' और 'ठाकुरजी का काम' कहानियां खूब रोचक लगीं ।

— फाल्गुनी पाढ़ी, सम्बलपुर (उड़ीसा)

□ इस अंक में 'चित्र कथाएं' और कविताएं मजेदार लगीं । विवेकानंद जी का चित्र और कहानियां भी अच्छी थीं । एलबम में डा. भीमराव अम्बेडकर का भी चित्र छापें ।

— श्रीराम मायल, श्रीगंगानगर (राज.)

□ मनोरंजक चुटुलों और चीटू-नीटू ने मन को मोह लिया । सारी कहानियां ज्ञानवर्धक लगीं ।

— राजलक्ष्मी, शिमला

□ मेरे पापा कहते हैं कि कामिक्स न पढ़कर 'नंदन' पढ़ा जाए । इसकी सभी रचनाएं मनमोहक होती हैं ।

— अतुलसिंह माहोड़ी, स्याल्दे, अल्मोड़ा

□ नव वर्ष का कैलेंडर वर्ष भर 'नंदन' के जनवरी माह की याद दिलाएगा । पत्रिका की सभी कहानियां पसंद आईं ।

— आलोककुमार श्रीवास्तव, गाजीपुर

□ मेरे छात्रों ने मुझे 'नंदन' पढ़ने को कहा । मुझे पत्रिका बहुत पसंद आई । वास्तव में यह पत्रिका एक ही साथ मनोरंजक और ज्ञानवर्धक है । 'आप कितने बुद्धिमान हैं' स्तम्भ काफी सराहनीय है ।

— जाकिर हुसैन, प्रधानाचार्य, आदर्श हुसैनी विद्यालय, जगदीशपुर (बिहार)

□ प्यारा 'नंदन' जिए सौ साल— पत्रिका का हर अंक प्रशंसनीय है । इसे घर का हर सदस्य पढ़ने को उतावला रहता है ।

— मृदुला प्रसाद, पोरबंदर

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे; बबिता मोहता, कलकत्ता; जे. शिवराज, मद्रास; राजीवकुमार आजाद, खगड़िया ।

आगामी अंक
रस-रंग भरी सामग्री के संग

- बिजली गिरी और किले के दो टुकड़े हो गए । दो भयानक दुश्मन—एक दूसरे की जान लेने पर उतारू ।
- विश्व की महान कृतियों में—स्वीडन की लेखिका एस्ट्रिड लिंडग्रेन की रचना 'राबर्स डाटर' की संक्षिप्त कथा ।
- **गेंदबाजी में विश्व रिकार्ड बनाया । एलबम में कपिलदेव की बहुरंगी छवि ।**
- पिकनिक पर गए गांव के बच्चे । जंगल के बीचों-बीच बस खराब हो गई । रात में वहां क्या हुआ ? पढ़िए रोमांचक चित्र कथा—पिकनिक । साथ में एक और चित्र-कथा भी ।
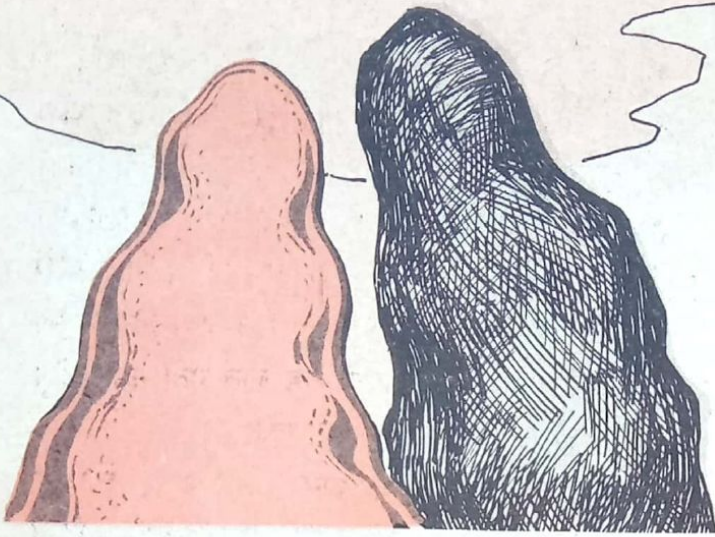
मां का जन्म दिन

— डा. ओम्प्रकाश सिंहल

हजारों साल पुरानी बात है। उस समय पृथ्वी पर न पशु थे, न पक्षी। मनुष्य का भी कहीं अता-पता न था। चारों ओर केवल पहाड़ ही पहाड़ थे। इन्हीं पहाड़ों में से दो पहाड़ ठीक एक-दूसरे के आमने-सामने थे। बायां पहाड़ एक तेजस्वी पुरुष लगता था। दाएं पहाड़ की शक्ल एक आकर्षक, सुंदर स्त्री की तरह थी।

अजीब थे पहाड़। हर साल थोड़ा-सा खिसकते रहते। ऐसा करते हुए लगभग एक हजार वर्ष का समय व्यतीत हो गया। अब दोनों के बीच की दूरी बहुत कम रह गई थी।

एक दिन सहसा आकाश में बादल घिर आए। बिजली कड़कने लगी। अचानक दोनों पहाड़ फट गए। बाएं पहाड़ में से एक आकर्षक युवक निकला। दाएं पहाड़ में से एक रूपवती स्त्री निकली। दोनों ने एक-दूसरे की ओर आश्चर्य से देखा। फिर पति-पत्नी के रूप में रहने का निश्चय कर लिया। युवक का नाम था पूलोशी। युवती को मिलोथू कहते थे।

पूलोशी और मिलोथू बहुत परिश्रमी और बुद्धिमान थे। उनके तीन लड़कियां हुईं। एक दिन पूलोशी ने मिलोथू से कहा— "मैं पहाड़ों और बाढ़ को वश में करने जा रहा हूं। मेरे पीछे से तुम अच्छी तरह घर संभालना। इस बेटियों को प्यार और दुलार से पालना। सब हुनर सिखाना जिससे बड़ी होने पर ये अपना जीवन अच्छी तरह निभा सकें।"

मिलोथू ने उत्तर दिया— "आप किसी भी प्रकार की चिंता मत कीजिए। मैं अपना कर्तव्य निभाने में किसी प्रकार की कसर नहीं छोड़ूंगी।"

पूलोशी चला गया। मिलोथू ने घर-बाहर का काम सूझ-बूझके साथ करना शुरू कर दिया। पहाड़ों पर पेड़-पौधे लगा दिए। समतल भूमि में खेत बनाकर अनाज उगाने लगी। मिट्टी से नाना प्रकार के जीव-जंतु बनाए। उन्हें जहां-तहां खड़ा कर दिया। इससे खेतों की रक्षा होने लगी। तीनों बेटियां हर काम में अपनी मां का हाथ बंटातीं। इससे काम भी जल्दी हो जाता और लड़कियों को तरह-तरह के काम करने का तरीका भी पता चल जाता।

समय बीतता चला गया। पूलोशी लौट कर नहीं आया। मिलोथू ने बुढ़ापे की ओर कदम रखा। एक दिन अपनी तीनों बेटियों को अपने पास बुलाया। फिर कहा— "अब तुम तीनों बड़ी हो गई हो। अपने भरण-पोषण की चिंता तुम्हें स्वयं करनी चाहिए।"

तीनों बेटियों ने मां की यह बात ध्यान से सुनी। फिर अगले दिन घर छोड़ने का निश्चय किया।

सबसे बड़ी लड़की खेती-बाड़ी के काम में होशियार थी। इसलिए उसने सोचा कि वह अपना बाकी जीवन खेती-बाड़ी करके गुजारेगी। इसलिए उसने हल उठाया और समतल मैदानों की ओर चली गई। मझली लड़की का मन पढ़ने-लिखने में लगता था। उसने एक बहंगी के दोनों पलड़ों में किताबें भरीं और चल दी। सबसे छोटी लड़की को चुनौतियों का सामना करने में आनंद आता था। अतः उसने थोड़े-से कोदों के बीज लिए और बंजर भूमि में खेती करने के लिए चल दी।

छोटी लड़की ने अपने घर से थोड़ी दूर जाकर जगह साफ की और बीज बो दिए। कुछ समय बाद अंकुर फूटे। जंगली बिल्लियों ने इन्हें रौंद डाला। फिर भी कुछ अंकुर उनकी चपेट से बच गए। समय आने पर उनमें पत्ते निकले। इन पर पहाड़ी बकरों ने

हमला बोल दिया। वे उन्हें चर गए। जो थोड़े-बहुत पौधे बचे, उन पर दाने आए। लेकिन इन दानों को चिड़ियों ने चुग लिया। बेचारी छोटी लड़की को साल भर तक परिश्रम करने के बाद एक भी दाना हाथ न लगा। बीज तक जाते रहे।

एक दिन यह छोटी लड़की अपनी मां के घर गई। अत्यंत करुण स्वर में अपनी दुखभरी कहानी कही। मां ने उसे दिलासा दी। साथ ही एक कांसे का ढोल भी दिया। खेती के लिए फिर से बीज दिए। लड़की बीज और ढोल लेकर अपने घर चली गई।

मां के घर से लौटने के बाद लड़की ने फिर से बीज बोए। पशुओं से अपनी खेती की रक्षा करने के लिए वह खूब जोर से ढोल बजाती। ढोल की आवाज सुनते ही वे भाग खड़े होते। न बिल्ली रुकती, न बकरा। दाना चुगने के लिए आए पक्षियों को भी उसने ढोल बजाकर भगा दिया। इससे उसकी फसल अच्छी हुई। जीवन सुखपूर्वक बीतने लगा। अपनी बड़ी बहनों के यहां समय-समय पर उसका

आना-जाना भी होता रहता था। परिश्रमी होने के कारण बड़ी बहनों के घर भी खूब खुशहाल थे।

बहुत समय बीत गया। मिलोथू बूढ़ी हो गई। एक दिन उसने अपनी तीनों बेटियों को घर बुलाया। फिर कहा— "शायद तुम्हें मालूम नहीं है कि पांचवें महीने की उनतीसवीं तारीख को मेरा जन्म दिन पड़ता है।" बेटियों को वास्तव में यह बात पता नहीं थी। इसलिए उन्हें यह जानकर बहुत खुशी हुई। उन्होंने तय किया कि इस साल मां का जन्म दिन खूब धूमधाम से मनाया जाए। उन्हें कोई खूबसूरत-सा उपहार दिया जाए। यह तय करने के बाद उन्होंने मां के जन्मदिन पर फिर से इकट्ठे होने का निश्चय किया।

जब छोटी लड़की अपने घर जाने लगी, तब उसने अपनी मां से कहा— "मेरी दोनों बहनें बहुत धनी हैं। वे आपको बहुत कीमती उपहार देंगी। उनकी तुलना में मैं काफी गरीब हूं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि उस दिन आपके लिए क्या लेकर आऊं।"

मां बोली— "बेटी, चिंता मत कर। उपहार तो हमारे प्रेम का प्रतीक है। तुम थोड़ा पटसन और एक घड़ा चावल ले आना। बस, इतना ही काफी है। और हां, तुम्हें जन्म दिन से तीन दिन पहले आना होगा। साथ में अपना ढोल भी लाना होगा। उस दिन ढोल बजाने का काम तुम करोगी।"

छोटी बेटी ने मां की इच्छा पूरी की। अपनी बड़ी बहनों से पहले मां के यहां पहुंचकर घर की खूब अच्छी तरह सफाई की। उसे खूब सजाया। जन्मदिन की खुशी में ऐसे बढ़िया ढंग से ढोल बजाया कि सब लोग खुशी से झूम उठे। छोटे-बड़े सब लोगों की जुबान पर छोटी बेटी के ढोल बजाने की चर्चा थी।

इसके बाद से मां का जन्मदिन हर साल मनाया जाने लगा। आसपास के सभी लोग इसमें शामिल होते। मां की मृत्यु के बाद भी जन्मदिन मनाने का सिलसिला पहले की तरह चलता रहा। चीन की चाओ जाति के लोग आज भी इसे धूमधाम से मनाते हैं। ●

आप कितने बुद्धिमान हैं :

उत्तर

१. बाईं ओर टंगे पर्दे की झालर अधिक लम्बी है।
२. ड्रेसिंग टेबल पर रखी मोमबत्ती जलने के बाद छोटी हो गई है।
३. जग का हैंडिल छोटा है।
४. गाना गाते व्यक्ति के गले से अधिक स्वर निकले हैं।
५. उसके कोट के पीछे वाले धारियों में से एक मोटी हो गई है।
६. दाईं ओर रखी कुर्सी की बैक का एक डंडा गायब है।
७. मेज पर रखे गिलास में पानी है।
८. छाते का हैंडिल दूसरी ओर घूमा हुआ है।
९. किवाड़ पर कोट के ऊपर टंगा टोप नहीं है।
१०. सामने वाले दरवाजे पर पड़ी ९ की संख्या ८ हो गई है।

शीर्षक बताइए

परिणाम

'नंदन' जनवरी '९४ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

गुड़िया का जब संग मिला, रोता चेहरा तुरंत खिला।
—प्रकाशचंद्र सुखवाल, एम. एल. सुखवाल, ग्रा.+पो. राशमी, चित्तौड़गढ़ (राज.)।

सो जा मेरी गुड़िया रानी, तुझे सुनाऊं एक कहानी।
—ललिता बिष्ट, एम. सी. डी. कालोनी, म. नं. २२ दिलशाद गार्डन, दिल्ली।

मेरी गुड़िया मेरे पास, फिर मैं कैसे रहूं उदास।
—शोभा सिन्हा, रामप्रीत सिन्हा, पी. एंड टी. कालोनी ९/६ सैक्टर ५, बोकारो स्टील सिटी (बि.)।

जन्म दिन मेरा आया, गुड़िया का उपहार लाया।
—सुनीलकुमार मालवीय, ९ सुंदरम् नगर, इंदौर (म. प्र.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : ओम्प्रकाश गंढेर, बीकानेर; विमलेशकुमार त्रिपाठी, सिद्धार्थ नगर।

फार्म-4
(नियम 8 देखिये)

नंदन

1.	प्रकाशन स्थान	: नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: राजेन्द्र प्रसाद
	क्या भारत का नागरिक है ?	: हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-110001
4.	प्रकाशक का नाम	: राजेन्द्र प्रसाद
	क्या भारत का नागरिक है ?	: हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-110001
5.	सम्पादक का नाम	: जयप्रकाश भारती
	क्या भारत का नागरिक है ?	: हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-110001
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-110001

मैं, राजेन्द्र प्रसाद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 28 फरवरी, 1994

ह०/- (राजेन्द्र प्रसाद)
प्रकाशक

आप कितने बुद्धिमान हैं :

उत्तर

१. बाईं ओर टंगे पर्दे की झालर अधिक लम्बी है ।
२. ड्रेसिंग टेबल पर रखी मोमबत्ती जलने के बाद छोटी हो गई है ।
३. जग का हैंडिल छोटा है ।
४. गाना गाते व्यक्ति के गले से अधिक स्वर निकले हैं ।
५. उसके कोट के पीछे वाले धारियों में से एक मोटी हो गई है ।
६. दाईं ओर रखी कुर्सी की बैक का एक डंडा गायब है ।
७. मेज पर रखे गिलास में पानी है ।
८. छाते का हैंडिल दूसरी ओर घूमा हुआ है ।
९. किवाड़ पर कोट के ऊपर टंगा टोप नहीं है ।
१०. सामने वाले दरवाजे पर पड़ी ९ की संख्या ८ हो गई है ।

शीर्षक बताइए

परिणाम

'नंदन' जनवरी '९४ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

गुड़िया का जब संग मिला, रोता चेहरा तुरंत खिला ।
—प्रकाशचंद्र सुखवाल, एम. एल. सुखवाल, ग्रा.+पो. राशमी, चित्तौड़गढ़ (राज.) ।

सो जा मेरी गुड़िया रानी, तुझे सुनाऊं एक कहानी ।
—ललिता बिष्ट, एम. सी. डी. कालोनी, म. नं. २२ दिलशाद गार्डन, दिल्ली ।

मेरी गुड़िया मेरे पास, फिर मैं कैसे रहूं उदास ।
—शोभा सिन्हा, रामप्रीत सिन्हा, पी. एंड टी. कालोनी ९/६ सैक्टर ५, बोकारो स्टील सिटी (बि.) ।

जन्म दिन मेरा आया, गुड़िया का उपहार लाया ।
—सुनीलकुमार मालवीय, ९ सुंदरम् नगर, इंदौर (म. प्र.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : ओम्प्रकाश गंढेर, बीकानेर; विमलेशकुमार त्रिपाठी, सिद्धार्थ नगर ।

फार्म-4
(नियम 8 देखिये)

नंदन

1.	प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	राजेन्द्र प्रसाद
	क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	× × ×
	पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-110001
4.	प्रकाशक का नाम	:	राजेन्द्र प्रसाद
	क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	× × ×
	पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-110001
5.	सम्पादक का नाम	:	जयप्रकाश भारती
	क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	× × ×
	पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-110001
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-110001

मैं, राजेन्द्र प्रसाद, **एतदद्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं ।**

दिनांक : 28 फरवरी, 1994 — **ह०/- (राजेन्द्र प्रसाद)**
प्रकाशक

नई पुस्तकें

खट्टी-मीठी कहानियां—लेखक : ओंकार श्रीवास्तव : प्रकाशक : सत्यम् प्रकाशन, १३१ शहरारा बाग, इलाहाबाद ; मूल्य : दस रुपए ।

पुस्तक में सात कहानियां हैं—चिड़ियों का राजा, बकरी और चींटी, सूम का धन, कल्लू-मठल्लू, राखी की लाज, उल्टी खोपड़ी और सत्य का फल । ये कहानियां बालक के आसपास की घटनाओं से जुड़ी हैं । रोचक भी हैं । 'बकरी और चींटी' में बताया गया है कि सबसे बड़ा सुख स्वतंत्रता में है । 'सूम का धन' में कंजूस हरमाल जीवन भर धन जोड़ता है । बाद में वह धन मुखिया हड़प लेता है । सरल भाषा में इन छोटी कहानियों को बच्चे पसंद करेंगे ।

टप-टप मोती—लेखक : यादवेन्द्र शर्मा चंद्र ; प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-१ ; मूल्य : तेरह रुपए ।

छह परी कथाएं पुस्तक में हैं । जाने-माने लेखक हैं यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र । उन्होंने परी कथाएं इस तरह लिखी हैं कि पेड़ लगाने, साक्षर बनाने और यंत्र-मानव से कठिनाई जैसी कई बातें भी आ गई हैं । परियों को आज के वातावरण से जोड़ने का यह प्रयास है । कथाएं रोचक हैं ।

(१) हवा रानी को चाहिए बदलाव, (२) सूरज ने छुट्टी मनाई (३) मिट्टी परी से मुलाकात (४) पानी की खोज में—सभी पुस्तकों के लेखक : दिलीप एम. सालवी ; चित्रण : अतनू राय ; प्रकाशक : रत्न सागर प्रा. लि., मुखर्जी नगर, कमर्शियल कामप्लैक्स, दिल्ली-९ ; मूल्य : प्रत्येक पुस्तक रु. १२.९० पैसे ।

इस धरती के सारे जीव हवा, सूरज (आग), पानी, मिट्टी—इन्हीं चार तत्वों से बने हैं । छोटे बच्चों को यह बताना थोड़ा कठिन है । चार तत्वों की इस पुस्तक-माला में लेखक ने कहानियों के द्वारा यह समझाया है । इन तत्वों को इंसान बताकर, उनसे कहलवाया है कि कैसे वे हमारी सहायता करते हैं । पर्यावरण से बालक को जोड़ने में भी पुस्तकें उपयोगी हैं । सुंदर चित्र और बढ़िया छपाई है ।

खासकर छोटे बच्चों के लिए ये पुस्तकें पठनीय और उपयोगी हैं ।

निंदिया का पालना—कवयित्री : शकुन्तला सिरोठिया; प्रकाशक : आशु प्रकाशन, ११४३/३१ पुराना कटरा, इलाहाबाद-२; मूल्य : बारह रुपए ।

पुस्तक में मजेदार बाल-गीत और लोरियां हैं —

निंदिया प्यारी सुन-सुन-सुन, गीत सुरीले गुन-गुन-गुन
चींचीं चिड़ियां चुन-मुन-चुन, फुदक रहीं ता धिन-धिन-धुन,
उनकी ढोलक ढम-ढम-ढम, निंदिया प्यारी थम-थम-थम ।

हर पृष्ठ पर चित्र हैं । सभी लोरियां मोटे अक्षरों में हैं । शकुन्तला जी लोरियां लिखने में कुशल हैं । सरल शब्द और मधुर लय—उनकी विशेषता है । बच्चों के लिए ही नहीं, उनकी माताओं के लिए भी पुस्तक उपयोगी है ।

जंगल के स्कूल में—कवयित्री : इन्दिरा परमार; आशु प्रकाशन, इलाहाबाद-२; मूल्य : दस रुपए ।

इंदिरा परमार बच्चों की प्रमुख लेखिका हैं । अध्यापिका भी हैं । बाल मन के अनुरूप उन्होंने बीस बाल-गीत इस पुस्तक में दिए हैं। कुछ पंक्तियां हैं —

साथी आओ, नाचो गाओ
दीवाली का दिन यह प्यारा
दिये जलाओ रे !
मत सकुचाओ, धूम मचाओ
इस शैतान अंधेरे को अब
मजा चखाओ रे !

बालक के आसपास बिखरे ये गीत, उसे गाने-गुनगुनाने और याद करने में सहज लगेंगे ।

पापा जिन्दाबाद—कवि : हेमन्तकुमार चावड़ा; प्रकाशक : अनुभूति प्रकाशन, ५३ करनपुर, प्रयाग स्टेशन, इलाहाबाद; मूल्य : चौदह रुपए ।

रोज मिठाई लाकर देते
ऐसे पापा जिन्दाबाद
रूठी मुनिया उसे मनाते
रोज कहानी नई सुनाते
मीठी-मीठी बातें करते
ऐसे पापा जिन्दाबाद ।

मां, बाइस्कोप, छाता, चिड़िया, परी लोक में मुन्ना, नया साल, घोड़ा, गुड़िया, डाकिया जैसे विषयों पर अड़तीस बाल-गीत पुस्तक में हैं । कई गीत बड़े मजेदार और रस भरे हैं, कुछ साधारण । हर पृष्ठ पर चित्र दिए गए हैं ।

खाओ मोती
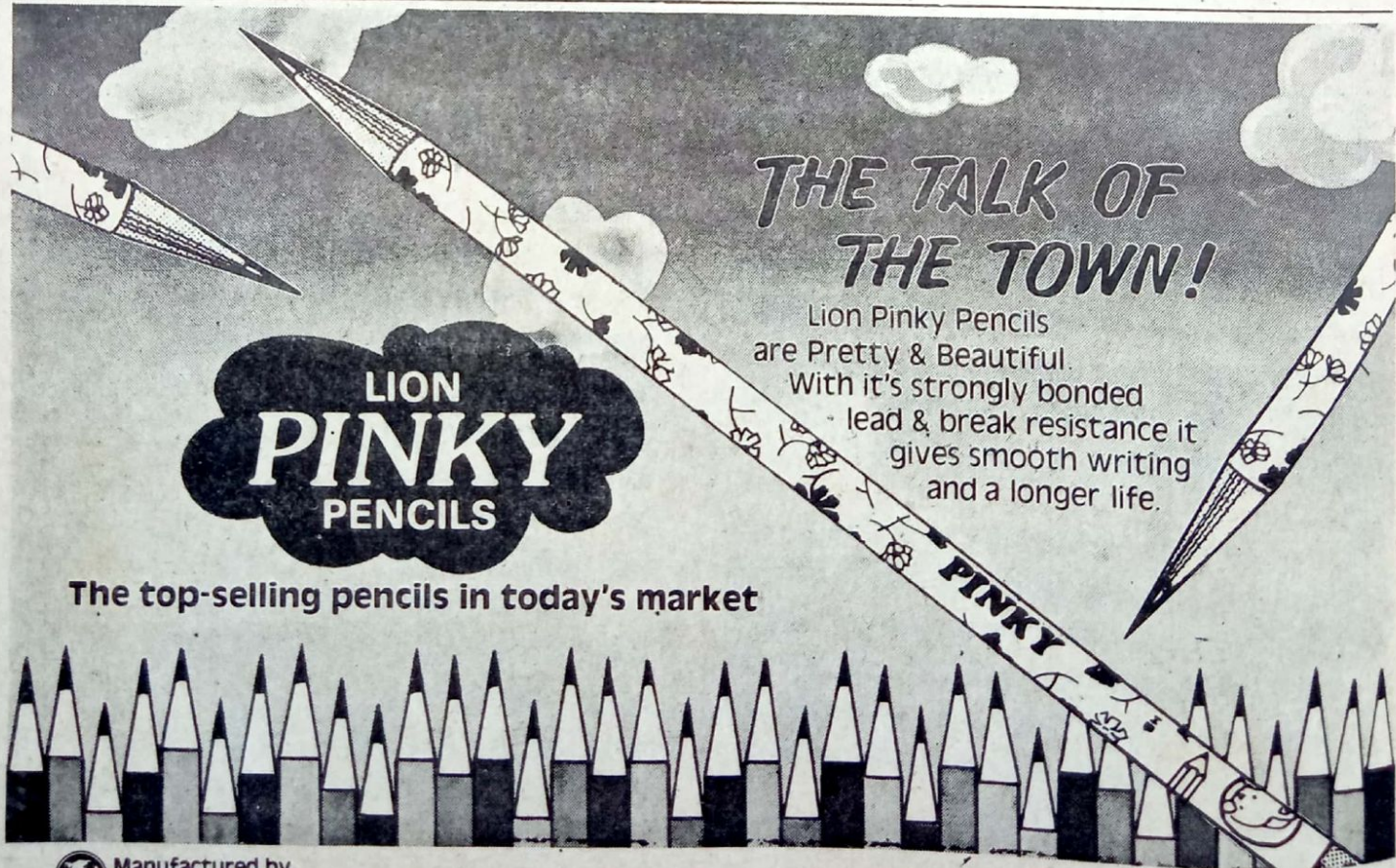
बरसों पुरानी बात है। एक बार समंदर में जबर्दस्त तूफान आया। घनघोर अंधेरा था। समंदर की सारी मछलियां घबराहट एवं भूख के मारे तड़प रही थीं।

सवेरा हुआ। समंदर का कोलाहल शांत हो चुका था। मछलियों ने राहत की सांस ली और खाने की खोज में निकल पड़ीं। चलते-चलते सहसा उन्हें एक बड़े आकार का जीव दिखाई दिया जो छटपटा रहा था। उसे देखकर, मछलियां बेहद खुश हुईं। सोचा कि उनके लिए भगवान ने भरपूर खाना भेज दिया है। फिर क्या था, सब ने जोर लगाया। उस महाकाय मनुष्य को खींचते हुए जल की रानी के पास ले गईं। उसे देखते ही रानी मछली हैरान होकर बोली— "अरे, यह क्या किया ? यह तो जिंदा प्राणी है। इसे खाना महापाप है।"

काफी उपचार के बाद उसे होश आया। सामने खड़ी मछलियों को देखकर वह बोला— "आप लोग मेरे प्राणदाता हैं। भगवान आपका भला करे। मुझे जोरों की भूख लगी है, कई दिनों से भूखा हूं।"

रानी से यह दृश्य देखा न गया। वह दीन स्वर में बोली— "चिंता न करें। इस भयंकर तूफान से हमारा सारा अन्न नष्ट हो गया। ये थोड़े-से मोती हैं। इन्हें खाकर भूख मिटाएं।" कहकर, मोती-भरा कलश उसके सामने रख दिया। वह बोला— "अरे, मैं तो मनुष्य हूं। मोती खाकर जी नहीं सकता।" रानी अत्यंत व्याकुल हो उठी। बोली— "पर, बाबा इसके अलावा तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।" इस पर बाबा बोला— "जल की रानी, निराश न हो। हम मनुष्य मछलियों का आहार कर सकते हैं। मगर इस तुच्छ प्राणी को बचाने के प्रयत्न में आप लोग अपनी आहुति क्यों दें ?" बाबा के शब्दों को सुन, रानी खुश होकर बोली— "हमारा सौभाग्य है कि हम भी किसी के काम आ सकेंगी।"

यह देख, बाबा की आंखों में आंसू भर आए। उन्होंने झट जल की रानी को गले से लगा लिया।

बोले— "तुम धन्य हो, मेरी कठिन परीक्षा में तुम्हारी जीत हुई। यह लो, यह साधारण भाला नहीं है। मैंने इसे वरदान में पाया है। यह हर इच्छा पूर्ण कर सकता है। आज तुम्हें इसे सौंपते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है।"

कहकर बाबा अंतर्धान हो गए।

जल की रानी ने पलटकर देखा। सागर की सतह पर पुनः हरियाली छा गई है। रंग-बिरंगी मछलियों की छलांग एवं खिलखिलाहटों से सारा वातावरण गूंज उठा है।

— जे. ज्योति राव, लखनऊ

तैरी सोमना

एक थी जलपरी। बहुत ही सुंदर, स्वभाव से मधुर। समुद्र में रहती थी। बहुत-सी रंग-बिरंगी मछलियां उसकी सहेलियां थीं। जलपरी का नाम 'सोमना' था। सोमना रंग-बिरंगी मछलियों के साथ खेलकूदकर बड़ी हुई थी। वह उनसे बहुत ही प्यार करती थी। मछलियां भी सोमना को बहुत चाहती थीं।

एक बार सोमना बहुत बीमार पड़ी। उसने तैरना भी बंद कर दिया। समुद्र में रहनेवाली मछली वैद्य ने उसका इलाज किया। परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। सब समुद्री जीव बहुत परेशान थे। इसी चिंता में मछलियों ने खेलना बंद कर दिया और दुखी होकर वे बूढ़ी मछली के पास गईं। बूढ़ी मछली ने कुछ सोचा। कहा— "पाताल लोक के राजा इंद्रसेन के भवन के पीछे की ओर जीवन बूटी है। यदि तुम लोग उस बूटी को ले आओ तो जलपरी की जान बचाई जा सकती है।" मछलियां तुरंत पाताल लोक की ओर चल दीं।

पाताल लोक का राजा बहुत ही दुष्ट था। जब उसे यह पता चला कि कुछ रंग-बिरंगी मछलियां महल के पीछे तैर रही हैं, तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने सारी मछलियों को कैद कर लिया। सोमना के पास संदेश भेजा कि यदि वह अपनी सबसे प्रिय वस्तु राजा को भेंट करे तो वह मछलियों को छोड़ देगा।

बहुत सोचने के बाद सोमना अपने जादू के फल लेकर राजा के पास चल दी। ये फल उसकी मां ने उसे दिए थे। कमजोरी के कारण उससे तैरा नहीं जा रहा था। मगर किसी भी तरह वह अपनी प्यारी सहेलियों को राजा की कैद से छुड़ाना चाहती थी।

उन्हें लाने की आशा में वह तेजी से तैर रही थी। जल्दी ही वह पाताल लोक पहुंच गई। 'जादू के फलों' का थाल राजा इंद्रसेन को भेंट कर, सोमना अपनी सखियों के साथ वापस आ गई। उसकी तबियत भी ठीक हो चली थी।

सोमना को स्वस्थ देखकर, सबको आश्चर्य था, परंतु बूढ़ी मछली जानती थी कि सोमना पाताल लोक तक तैरकर जाने से ही, स्वस्थ हुई थी। इसीलिए उसने यह युक्ति सोची थी।

— हिबा तारिक, नई दिल्ली

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : संजय भीमराज जोशी, बम्बई; सुशोभन, बराइपाल (उड़ीसा); मौसमी अग्निहोत्री, खंडवा।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०१ परिणाम

इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। तीन सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है--

सर्वशुद्ध : तीन : प्रत्येक को दो सौ रुपए

१. राजेंद्र मीणा, देहीखेज (बूंदी); २. रवीन अजमानी, देहरादून; ३. नसीम अहमद, पटना।

एक गलती : दस : प्रत्येक को चालीस रुपए

१. माधव कौशिक, हसनपुर; २. अमरकुमार मिश्र, सीतापुर; ३. अमित अग्रवाल, नीमच; ४. प्रियरंजन द्विवेदी, रेहला (पलामू); ५. मंजुला गुप्ता, हिसार; ६. पुलक प्रणय, गोपालगंज; ७. मुकुल कपूर, नई दिल्ली; ८. राजनकुमार सिंह, मुजफ्फरपुर; ९. संभ्रांत कृष्ण, डाल्टनगंज; १०. मुहम्मद असलम, कानपुर।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Scanned with CamScanner